दैनिक
जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित
जयपुर टाइम्स
नई सोच नई रफ्तार
n वर्ष : 10 अंक : 132 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, बुधवार 04 जून, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 2 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

बजट वर्ष 2025-26 की समीक्षा बैठक आयोजित

गरीब, किसान, महिला और युवाओं के कल्याण के लिए सरकार प्रतिबद्ध: सीएम भजनलाल

तय अवधि में बजटीय घोषणाओं को पूरा करने के दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि विकसित राजस्थान के विजन को प्रभावी गति देने के लिए बजट 2025-26 में सभी आवश्यक प्रावधान किए गए हैं। हमारे बजट में प्रदेश की 8 करोड़ जनता का कल्याण और समस्त 200 विधानसभाओं का सर्वांगीण विकास निहित है, जिससे प्रदेश वर्ष 2030 तक 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकेगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि बजटीय प्रावधानों को समयबद्ध रूप से पूरा करने के लिए सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। शर्मा मंगलवार को मुख्यमंत्री निवास पर वर्ष 2025-26 की चरणबद्ध और एकीकृत रूप से लागू की जाने वाली बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन के संबंध में आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन कार्यों का शिलान्यास हमारी सरकार के कार्यकाल में हो रहा है, उनका उद्घाटन भी हमारे ही कार्यकाल में हो इसके लिए सभी घोषणाओं को समय पर पूरा होना सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि सभी विभाग कार्ययोजना बनाकर चरणबद्ध रूप से होने वाले कार्यों के हर चरण की समय-सीमा तय करें और उसी अनुरूप कार्य करें। किसी भी स्तर पर लापरवाही बरतने वाले कार्मिकों पर सख्त कार्रवाई की जाए। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार बजटीय घोषणाओं की प्रगति की नियमित मॉनिटरिंग कर रही है जिससे अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक इन जनकल्याणकारी योजनाओं का समय पर लाभ पहुंचना सुनिश्चित हो सके।

गरीबी मुक्त होंगे राजस्थान के गांव

शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार गरीब, युवा, किसान और महिला के उत्थान के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। गरीबीमुक्त राजस्थान की परिकल्पना को साकार करने के लिए हमने पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबीमुक्त गांव योजना शुरू की है, जिसके तहत प्रथम चरण में 5 हजार गांवों के बीपीएल परिवारों को गरीबी रेखा से ऊपर लाने के लिए प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने निर्देश दिए कि इन परिवारों को केन्द्र और राज्य की योजनाओं से लाभान्वित करते हुए गरीबी से मुक्त किया जाए। उन्होंने युवाओं को रोजगारोन्मुखी कौशल प्रशिक्षण और महिलाओं को राजीविका से जोड़ने के लिए निर्देशित किया।

आधारभूत ढांचे को किया जाए सुदृढ़, पारदर्शिता के साथ हो निर्माण कार्य

मुख्यमंत्री ने निर्माण कार्यों में पारदर्शिता व जवाबदेहिता के विशेष निर्देश प्रदान करते हुए कहा कि सुदृढ़ आधारभूत संरचना प्रदेश की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है। उन्होंने कहा कि गुणवत्ता के विषय पर किसी भी स्तर पर समझौता नहीं किया जाए। सड़क निर्माण कार्यों का फिजिकल वेरिफिकेशन अनिवार्य रूप से करवाएं। साथ ही, बिजली, पानी, सीवर की लाइन डालने और सड़क बनाने के कार्य संबंधित विभाग आपसी समन्वय से करें, ताकि आमजन को आवागमन में किसी भी परेशानी का सामना ना करना पड़े। शर्मा ने इसके साथ ही, नए जीएसएस निर्माण कार्यों के लिए भूमि आवंटन का कार्य शीघ्र पूरा करने के निर्देश भी दिए।

शहरों का हो सुनियोजित विकास

मुख्यमंत्री ने कहा कि केन्द्र सरकार की स्मार्ट सिटी योजना की तर्ज पर प्रदेश के 16 शहरों को क्लीन व ग्रीन सिटी के रूप में विकसित करने की बजट में घोषणा की गई है। इन शहरों में सफाई, हरियाली, फुटपाथ निर्माण, सौन्दर्यीकरण जैसे कार्य सुनियोजित रूप से कर इन्हें मॉडल के रूप में विकसित किए जाएं। उन्होंने कहा कि नवगठित 65 नगरीय निकायों में वेस्ट प्रोसेसिंग प्लांट और एफएसटीपी की स्थापना भी शीघ्र की जाए।

हवाई परिवहन सेवा के विस्तार से पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। हमारे राज्य में विश्व प्रसिद्ध धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल हैं। यहां पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हवाई परिवहन को सुदृढ़ करना आवश्यक है। इसके लिए प्रदेशभर में हैलिपोर्ट्स विकसित कर पर्यटन व धार्मिक स्थलों के लिए हैलिकॉप्टर सेवा प्रारंभ की जाए। इससे पर्यटकों को सुविधाएं मिलने के साथ ही राजस्व में भी वृद्धि होगी।

100 एनिकटों के निर्माण में लाए गति

मुख्यमंत्री ने कहा कि जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश में 500 करोड़ की लागत से 100 एनिकट का निर्माण कराया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को इस काम में गति लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिन बजटीय परियोजनाओं की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) नहीं बनी है उनकी चरणबद्ध डीपीआर शीघ्र तैयार की जाए, ताकि कार्य शीघ्र प्रारंभ हो और निश्चित समयावधि पर पूरा हो सके। शर्मा ने खनन, पुलिस, चिकित्सा आदि विभागों के कार्य तत्परता और दक्षता बढ़ाने के क्रम में सूचना प्रोद्यौगिकी तंत्र के सुदृढ़ीकरण के लिए भी निर्देशित किया। उन्होंने स्कूल शिक्षा विभाग से संबंधित 100 विद्यालयों के क्रमोन्नयन की बजट घोषणा की समीक्षा करते हुए कहा कि विद्यालयों में स्मार्ट क्लास रूम विकसित किए जाए, जिससे विद्यार्थियों को वर्चुअल शिक्षा की भी सुविधा उपलब्ध हो सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि पोषण क्षमता के दृष्टिगत श्री अन्न एक बेहतर विकल्प है। उन्होंने श्री अन्न की प्रभावी मार्केटिंग और इसे प्रोत्साहित करने के संबंध में निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इससे हमारे किसानों की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी। बैठक में मुख्य सचिव सुधांश पंत सहित संबंधित विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव व शासन सचिव उपस्थित रहे।

डॉ. सतीश पूनिया ने प्रधानमंत्री मोदी से की मुलाकात, संगठन की मजबूती का लिया आशीर्वाद

मोदी को राजस्थान की अनूठी हस्तशिल्प कला 'होदा अम्बाबाड़ी' की मूर्ति व बाड़मेर का पटटू (शॉल) भेंट

सतीश पूनियां ने परिवार के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से की मुलाकात

पुत्र-पुत्रवधु महीप-सिप्पी, बेटी अनुष्का को नरेंद्र मोदी ने दिया आशीर्वाद

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से नई दिल्ली में पीएम आवास पर भाजपा हरियाणा संगठन प्रभारी, भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां ने शिष्टाचार मुलाकात कर मार्गदर्शन लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात में सतीश पूनियां ने राजस्थान और हरियाणा के विकास और संगठनात्मक मजबूती इत्यादि महत्वपूर्ण विषयों को लेकर मार्गदर्शन लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सतीश पूनियां के बीच शिष्टाचार मुलाकात के साथ ही सतीश पूनियां ने परिवार के साथ भी नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। पुत्र-पुत्रवधु महीप-सिप्पी, बेटी अनुष्का को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आशीर्वाद दिया। इस दौरान सतीश पूनियां के साथ धर्मपत्नी मोहिनी पूनिया भी मौजूद रहीं। आतंकवादियों के खिलाफ भारत की सेना की ओर से ऑपरेशन सिंदूर की ऐतिहासिक सफलता पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सतीश पूनियां ने राजस्थान की अनूठी हस्तशिल्प कला कदंब की लकड़ी से निर्मित 'होदा अम्बाबाड़ी' की मूर्ति एवं बाड़मेर हस्तकला निर्मित पटटू (शॉल) भेंट कर आभार-अभिनंदन व्यक्त कर बधाई दी। सतीश पूनियां ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने से सदैव नई ऊर्जा मिलती है, नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के संकल्प और आत्मनिर्भर भारत बनाने के संकल्प से प्रदेश और देश के प्रति उत्थान को लेकर मार्गदर्शन मिलता है, हमारे जैसे किसान परिवार में जन्मे सामान्य कार्यकर्ता को राज्य व राष्ट्र के लिये निरंतर कार्य करने की नरेंद्र मोदी से प्रेरणा मिलती है, जिससे प्रतिबद्ध होकर विकास व संगठन की मजबूती के प्रति कार्य करने को नई ऊर्जा मिलती है।

भजनलाल सरकार कर रही प्रदेश का सर्वांगीण विकास

दौसा जिले में यूआईटी गठित, अधिसूचना जारी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। भजनलाल सरकार ने हाल ही में बजट घोषणा में दौसा जिले को एक बड़ी सौगात दी है जिसमें दौसा नगर परिषद्, बांदीकुई और भांडारेज नगर पालिका के क्षेत्र को मिलाकर यूआईटी गठन करने की अधिसूचना जारी होने पर अब दौसा जिले में खुशियां मनाई जा रही है। अधिसूचना में 265 गांव को इस यूआईटी गठन में शामिल किया गया है। जहां क्षेत्र के अंदर डेवलपमेंट और मास्टर प्लान को लेकर अब राह खुलने लगी है। दौसा बांदीकुई यूआईटी के गठन की बजट में घोषणा की गई थी, जिसको अब साकार होता हुआ नजर आ रहा है। दौसा जिला कलेक्टर देवेंद्र कुमार यादव ने बताया कि दौसा नगर परिषद्, बांदीकुई व भांडारेज के क्षेत्र को शामिल करते हुए करीब 265 राजस्व गांव शामिल किया गया है। यूआईटी के गठन से अर्बन एरिया के इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलप तीव्र गति से इंप्रूव करना, औद्योगिक क्षेत्र में इंडस्ट्रीज आएगी। जिसमें स्टोन पार्क बांदीकुई में लॉजिस्टिक्स पुरी हो पाएंगे। प्रदेश में 22 नई यूआईटी घोषणा की गई है जिनमें दौसा बांदीकुई यूआईटी भी है। दौसा नगर परिषद आयुक्त कमलेश कुमार मीणा का कहना है कि यूआईटी के अंदर करीब 300 के आसपास गांव शामिल किए गए हैं इसके तहत बाहरी क्षेत्र जो दौसा नगर परिषद के बड़ी का क्षेत्र है डेवलपमेंट के जो काम है वह यूआईटी की ओर से किए जाएंगे। नगर परिषद के क्षेत्र में विकास के कार्य भी किए जाएंगे। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि सबसे पहले यूआईटी क्षेत्र में मास्टर प्लान की कार्रवाई की जाएगी। जिससे विकास का कार्य किया जाएगा, नई कॉलोनियां डेवलपमेंट की जाएगी।

वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान की शुरूआत कल से, भजनलाल शर्मा करेंगे विभिन्न कार्यक्रमों में शिरकत

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। प्रदेश में भूजल स्तर बढ़ाने और जल संचयन के प्रमुख उद्देश्यों के दृष्टिगत मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर 5 से 20 जून तक प्रदेशभर में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान चलाया जाएगा। विश्व पर्यावरण दिवस व गंगा दशहरा के शुभ संयोग पर 5 जून से इस अभियान की शुरूआत होगी। इस अभियान में हमारी गौरवशाली संस्कृति में निहित पर्यावरण संरक्षण के पुनीत कार्यों का व्यापक रूप से आयोजन किया जाएगा और आमजन को पर्यावरण की महत्ता के प्रति जागरूक भी किया जाएगा। जिससे यह अभियान जन आंदोलन बन सकें। वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के अन्तर्गत शर्मा 5 जून को प्रातः जयपुर के रामगढ़ बांध (जमवारामगढ़) पर मोरी के निकट गोपालगढ़ ग्राम में श्रमदान करेंगे और अमृतम जलम अभियान कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसके बाद मुख्यमंत्री विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर (आरआईसी) में आयोजित होने वाली राज्य स्तरीय कार्यशाला को संबोधित करेंगे। इसके पश्चात् मुख्यमंत्री बूंदी के गोहाटा पहुंचकर रामजल सेतु लिंक परियोजना (संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल परियोजना) के अंतर्गत निर्मित होने वाले एक्वाडक्ट का निरीक्षण करेंगे। यहां से मुख्यमंत्री केशोरायपाटन (बूंदी) में चम्बल घाट कार्यक्रम स्थल पहुंचेंगे जहां वे पूजन (गंगा लहरी), चुनरी महोत्सव और कलश यात्रा में शिरकत करेंगे। साथ ही शर्मा केशोरायपाटन मंदिर में दर्शन व पूजन भी करेंगे। मुख्यमंत्री शाम को भरतपुर पहुंचेंगे जहां वे गंगा मदिर में विशेष पूजा व महाभोग, कलश यात्रा, प्रसाद व गंगाजल वितरण और तुलसी पौधा वितरण कार्यक्रम में सम्मिलित होगें। इसके बाद मुख्यमंत्री मंशा माता मन्दिर के पास सुजानगंगा में दीपदान भी करेंगे।

विपक्ष एकजुट: ऑपरेशन सिंदूर पर संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग

16 पार्टियों ने पीएम को लिखा पत्र

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)।। विपक्षी आईएनडीआईए गठबंधन की 16 पार्टियों ने पहलगाम आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर की कार्रवाई के बीच अमेरिकी मध्यस्थता के दावे और पाकिस्तान की गोलीबारी में जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती इलाकों में हुई जान-माल की क्षति के घटनाक्रमों के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से संसद का विशेष सत्र तत्काल बुलाने की मांग की है। लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी और राज्यसभा में नेता विपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे समेत 16 विपक्षी दलों के नेताओं ने विशेष सत्र बुलाने के लिए प्रधानमंत्री को साझा पत्र लिखा है जिसमें इन दलों के सभी सांसदों की ओर से भी इसका अनुरोध किया गया है। विपक्षी दलों ने कहा है कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई और वैश्विक कूटनीतिक पहल में हमने सरकार का पूरा समर्थन किया है। सरकार विश्व के देशों और मीडिया को इसकी जानकारी दे रही मगर हमारी संसद, देश की जनता और उनके चुने हुए प्रतिनिधियों को अंधेरे में रखा जा रहा है। विशेष सत्र बुलाने की अलग-अलग आवाज उठाते रहे विपक्षी दलों ने अब एकजुट होकर सरकार पर दबाव बनाने के लिए प्रधानमंत्री को यह साझा पत्र भेजा है।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने की मानसून तैयारियों की समीक्षा, दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों को मानसून में अलर्ट मोड पर रहने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि मानसून पूर्व ही सड़कों को संधारित रखने के लिए की जाने वाली सभी आवश्यक तैयारियाँ पूरी कर ली जायें ताकि बरसात के सीजन में परिवहन व यातायात व्यवस्था सुचारू एवं निर्बाध रहें। उपमुख्यमंत्री ने मंगलवार को निर्माण भवन में आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए मानसून पूर्व की तैयारियो की समीक्षा की। उपमुख्यमंत्री ने निर्देश दिए है कि जिन स्थानों पर पानी जमा होता है वहां कच्ची ड्रेन खोदकर पानी निकासी की व्यवस्था रखें और पानी जमा नही होने दे। इसके साथ ही यदि किसी सड़क मार्ग पर बरसात के कारण कटाव या खड्डे हो गये हो तो उन्हें प्रारम्भिक स्तर ही भरवा दे। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि क्षतिग्रत पुलिया, रपट आदि की मरम्मत के लिए जो स्वीकृतियां जारी हो चुकी है उन कार्यों को जल्दी पूरा करवा ले। उन्होंने कहा है कि यदि बरसात के मौसम में कार्मिकों की लापरवाही से सड़क टूटने और यातायात बाधित होने की शिकायत मिलेगी तो संबंधितों के खिलाफ कठोर कार्यवाही की जाएगी। उपमुख्यमंत्री ने निर्देश दिए है कि अधिकारी सभी पुराने भवनों का निरीक्षण करें और जो भवन जर्जर हो चुके हैं उन्हें अनुपयोगी घोषित कर तुरंत प्रभाव से खाली करवायें। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि संबधित अधिकारी तत्काल प्रभाव से कंट्रोल रूम स्थापित करवाकर अति वर्षा व व बाढ जैसी स्थिति से निपटने की सभी आवश्यक तैयारिया पूरी कर लें। उपमुख्यमंत्री ने कहा है कि प्रदेश में जितने भी अटल पथ व अन्य सड़कें बनायी जाए, उनके साथ नाली बनाने का भी प्रावधान रखें ताकि जल भराव के कारण बार बार सड़क टूटने की समस्या से निजात मिल सकें।

अब हर सप्ताह संभाग वार समीक्षा होगी

उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए है की प्रदेश की सड़क परियोजनाओं के प्रभावी एवं समयबद्ध क्रियान्वयन के लिए इसी माह से हर सप्ताह संभागवार समीक्षा बैठक आयोजित की जाए। इस बैठक में उस संभाग की सभी सड़क परियोजनाओं, बजट घोषणाओं सहित सभी कार्यों की प्रगति की समीक्षा की जाएंगी। इस दौरान उन्होंने संभाग वार सड़क परियोजनाओं की प्रगति और मानसून की तैयारियो की समीक्षा की। इस अवसर पर विभाग के एसीएस प्रवीण गुप्ता, शासन सचिव डी आर मेघवाल, मुख्य अभियंता व अतिरिक्त सचिव टी सी गुप्ता सहित पीडब्ल्यूडी व एनएचएआई के अधिकारी, वीसी के माध्यम से संभाग व जिलों के अधिकारी उपस्थित रहे।

अलवर जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
4 जून, 2025

नगरपालिका की अतिक्रमण पर कार्रवाई

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) नगरपालिका द्वारा कस्बे के तहसील परिसर के सामने अस्पताल रोड की तरफ लम्बे समय से बंद पड़े खोको से हो रहे अतिक्रमण पर कार्रवाई की गई। नगरपालिका के राजस्व प्रभारी रामहेत बैरवा व नगरपालिका सीओ मीनाक्षी मिश्रा ने बताया कि नगरपालिका द्वारा समय-समय पर अतिक्रमण पर कार्रवाई की जा रही है। अस्पताल व तहसील के आसपास जिन लोगों ने अस्थाई दुकानें व खोखे लगाकर अतिक्रमण कर रखा है उनका सामान जब्त कर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया सड़कों पर जिन दुकानदारों ने अतिक्रमण कर रखा है उनको पूर्व में नोटिस भी जारी किए गए हैं। इस दौरान नगरपालिका अतिक्रमण प्रभारी ऋतिक, राजस्व प्रभारी रामहेत बैरवा, राजगढ़ नगरपालिका सीओ मीनाक्षी मिश्रा सहित नगरपालिका के कर्मचारी मौजूद रहे।

हर घर परिंडे लगाओ अभियान का हुआ शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.)। हिंदुस्तान स्काउट एवं गाइड राजस्थान जिला मुख्यालय अलवर के तत्वाधान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धमरेड में अभिरुचि व कौशल विकास शिविर चल रहा है। इस शिविर में मेहंदी, सिलाई, पेंटिंग, ब्यूटीशियन, नृत्य, कंप्यूटर कोर्स, इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स सिखाए जा रहे हैं। हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड जिला उपाध्यक्ष कृष्ण अवतार शर्मा ने बताया कि भीषण गर्मी को देखते हुए बेजुबान पक्षियों को पानी की आवश्यकता के लिए पानी की व्यवस्था के लिए विद्यालय एवं हर घर परिंडे लगाओ अभियान की शुरुआत की गई। हर घर परिंडे लगाओ अभियान के तहत जिला कमिश्नर अमित कुमार मीणा ने बताया कि हम हमारे आसपास बेजुबान पक्षियों के लिए अधिक से अधिक पानी के परिंडे लगाएंगे और प्रत्येक परिंडे की जिम्मेदारी वहीं के स्थानीय लोगों को देंगे। हर घर परिंडा अभियान की शुरुआत के अवसर पर भजेड़ा सरपंच सीमा मीना, जिला कमिश्नर अमित कुमार मीना, जिला उपाध्यक्ष कृष्ण अवतार शर्मा, प्रोफेसर विक्रम मीना, शिविर प्रभारी चरण सिंह, रमेश शर्मा, समाजसेवी धर्म प्रकाश शर्मा, विजय बैरवा सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

क्रिकेट प्रतियोगिता का हुआ समापन

जयपुर टाइम्स

राजगढ(निसं.) उपखंड क्षेत्र के ग्राम गढ़ में खेली जा रही गढ़ प्रीमियर लीग 2025 क्रिकेट प्रतियोगिता के संस्करण 8 का समापन मंगलवार को हुआ। जिसमें फाइनल मुकाबला गौर पहाड़ी और दादर के बीच हुआ। जिसमें गौर पहाड़ी ने फाइनल मुकाबले में दादर को 9 विकेट से मात दी । ओर प्रथम विजेता 1 लाख 11 हजार का पुरस्कार जीता वही उपविजेता को 51 हजार का पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि भाजपा प्रत्याशी बन्नाराम मीणा, मंडल अध्यक्ष पुरण सिंह नरूका,युवा मोर्च के जिला मंत्री जगत सिंह, युवा मोर्च के मंडल अध्यक्ष सोनू राजपूत, विशन लाल बैरवा, पूर्व सरपंच भमसा नरूका, नवल गुर्जर,नत्थू सिंह,मोहर सिंह, कॉमेंटेटर प्रदीप शर्मा,मोनु, सुरेश मीणा, रामनिवास बनास्या आदि उपस्थित रहे।

दो दिवसीय 15वां मीन भगवान महोत्सव आज से

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) पंचायत समिति क्षेत्र के भजेड़ा गांव में दो दिवसीय 15वां मीन भगवान महोत्सव और विशाल भंडारे का आयोजन 4 और 5 जून को आयोजित होगा। भजेड़ा सरपंच सीमा मीना ने बताया कि इस मौके पर आदिवासी सांस्कृतिक संगीत पद व ढ़ांचा दंगल का आयोजन होगा। मीन महोत्सव में आसपास क्षेत्र के हजारों की संख्या में लोग शामिल होंगे।

शहर में वर्षाजल संचय कर भूमिगत जल स्तर वृद्धि हेतु नगर विकास न्यास के संयुक्त प्रयास

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। नगर विकास न्यास की सचिव धीगदे स्नेहल नाना ने बताया कि जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला के निर्देशन पर अलवर शहर में वर्षाजल संचय कर शहर के गिरते भूजल स्तर को सुधारने के उद्देश्य से नगर विकास न्यास, स्वयंसेवी संस्थाओं एवं आम नागरिकों की संयुक्त सहभागिता से जल संरक्षण के कार्य कर रही है। इसी कडी में एनजीओ वीएसएसएम एवं पारीक फाउंडेशन की संयुक्त टीम द्वारा शहर के विभिन्न स्थानों का निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि संयुक्त टीम ने लालखान चमेली बाग के निरीक्षण करने पर पाया कि क्षेत्र में स्थित पहाडों से वर्षाकाल के दौरान आने वाले पानी को चमेली बाग स्थित कुएं में लाने एवं एक तालाब भी कुएं के पास बनाए जाने से पूरे क्षेत्र में भूमि का जल स्तर बढ सकेगा एवं क्षेत्र के निवासियों की पानी की समस्या कम हो सकेगी तथा बोरिंग से निरन्तर जल उपलब्ध हो सकेगा। इस कार्य से लगभग 25 लाख लीटर जल प्रतिवर्ष भूमि में जावेगा। वहीं टीम द्वारा खुदनपुरी जोहड का निरीक्षण कर जोहड की खुदाई करके तालाब का रूप देने से क्षेत्र में पानी का जल स्तर बढेगा एवं इस स्थान का सौन्दर्यकरण भी होगा। टीम के सदस्यों ने खुदनपुरी जोहड एवं लालखान चमेली बाग जल संरचना कार्य को तीन दिवस में ही प्रारम्भ कराने का आश्वास दिया। इसके बाद टीम द्वारा धोबी घट्टा क्षेत्र के कुएं को रिचार्ज करने हेतु बनवाई गई संरचना का निरीक्षण कर कार्य की सराहना की। संयुक्त टीम में नगर विकास न्यास के अभियन्ता अशोक मदान, मनोहर मीणा, वीएसएसएम से मिततल पटेल एवं पारीक फाउण्डेशन से भव्य शाह मौजूद रहे।

''हिट एण्ड रन' दुर्घटना में मृत्यु पर 2 लाख रूपये या उससे अधिक मुआवजा व गंभीर चोट पर 50 हजार रूपये का मुआवजा दिए जाने का प्रावधान है'

'हिट एण्ड रन मामलां पर गठित जिला स्तरीय निगरानी समिति की बैठक सम्पन्न

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। उच्चतम न्यायालय नई दिल्ली के आदेशों की पालना में एवं राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयुपर के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अलवर द्वारा मंगलवार को 'हिट एण्ड रन (टक्कर मारकर भाग जाना)' मामलां पर गठित जिला स्तरीय निगरानी समिति की बैठक का आयोजन मोहन लाल सोनी सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अलवर की अध्यक्षता में किया गया। बैठक के दौरान डॉ तेजपाल सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, मुख्यालय, अलवर, बीना महावर, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट शहर, अलवर उपस्थित रहे। साथ ही सचिन शर्मा, वृत्ताधिकारी नीमराणा, राजेन्द्र सिंह, पुलिस उपाधीक्षक खैरथल-तिजारा, नीरज मीणा, रीडर, उपखण्ड अधिकारी कोटपूतली, मनीष कुमार जाटव, उपखण्ड अधिकारी, किशनगढबास वर्चुअल माध्यम से बैठक में समिलित हुए। बैठक के दौरान राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर से प्राप्त निर्देशानुसार सचिव ने बताया कि 'हिट एण्ड रन' प्रकरणों से संबधित 'टक्कर मारकर भागना मोटर यान दुर्घटना योजना, 2022' की चर्चा की जिसके तहत 'हिट एण्ड रन' दुर्घटना में मृत्यु पर 2,00,000/- रूपये या उससे अधिक मुआवजा व गंभीर चोट पर 50,000/- रूपये मुआवजा दिए जाने का प्रावधान है। सचिव सोनी ने पुलिस विभाग की तरफ से उपस्थित सभी समिति प्रतिनिधियों को 'हिट एण्ड रन' दुर्घटना प्रकरणों में पीडित व्यक्ति को मुआवजा योजना व मुआवजा राशि की जानकारी देने के लिए सभी संबंधित पक्षकारों को पत्र प्रेषित करवाए जाने के बारें में निर्देश दिए।

विद्यार्थी सम्मान समारोह में निकाली रैली, किया प्रतिभाओं का सम्मान

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। कचहरी रोड स्थित सांदीपन विद्यालय में मंगलवार को बोर्ड की कक्षा 12वीं व 10वीं में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण एवं कक्षा आठवी एवं पांचवीं बोर्ड में ए ग्रेड प्राप्त विद्यार्थियों का स्वागत सम्मान किया गया। प्रधानाचार्य मोहित पंडित ने बताया कि सम्मान कार्यक्रम से पूर्व विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण संबंधित एक रैली विद्यालय से कचहरी रोड होते हुए अशोक टॉकीज तक निकाली गई। रैली को कार्यक्रम के अतिथि इंजीनियर राजदीप शर्मा, समाजसेवी अशोक आहूजा, रंगकर्मी राजहंस शर्मा, डॉक्टर अभिनव शर्मा, बिशन कालरा, एडवोकेट संजीव कौशिक एवं शिक्षाविद रचना शर्मा ने रवाना किया। तत्पश्चात रैली विभिन्न मार्गों से होती हुई पुन विद्यालय पहुंची। जहां पर विद्यार्थियों का सम्मान समारोह प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम मां शारदा के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलन किया गया। विद्यालय की छात्रा ज्हान्वी विजय, नीतू राघव, रिया वर्मा, चंचल सैन, नन्दिनी आदि ने बहुत सी मोहक प्रस्तुतियां दी। अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभावान विद्यार्थियों को साफा एवं माला पहनाकर, स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में विद्याभूषण, हितेश ठाकुर चंद्र प्रकाश सैन, एडवोकेट अमित, बेनी प्रसाद, ओम प्रकाश आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों के शिक्षकों का भी सम्मान किया गया। विद्यालय निदेशक मंजू शर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

जिले में एन्टी मलेरिया माह के तहत मच्छररोधी विभिन्न गतिविधियां होंगी आयोजित

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. योगेन्द्र शर्मा ने जून माह में आयोजित किए जाने वाले एन्टी मलेरिया माह के तहत केंद्र सरकार के दिशा-निर्देशों के गतिविधियां आयोजित कराने हेतु समस्त ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को निर्देशित किया है। उन्होंने निर्देश दिये कि रैलियां, चित्रकला प्रतियोगिताएं आदि के माध्यम से जन समुदाय को मलेरिया रोधी गतिविधियां जैसे बुखार के रोगियों की जांच करने, मच्छरदानी का उपयोग करने तथा मच्छरों के प्रजनन स्थलों को समाप्त करने के लिए स्वच्छ भारत मिशन के साथ समन्वय करते हुए गतिविधियां आयोजित करावे। उन्होंने निर्देश दिये कि एन्टी मलेरिया माह के तहत अन्तर विभागीय समन्वय स्थापित करते हुए आमजन को जागरूक करें। उन्होंने निर्देश दिये कि जन समुदाय को जागरूक करने के लिए हाई रिस्क क्षेत्रों जैसे आदिवासी क्षेत्र, क्रॉस बार्डर वाले क्षेत्र, जंगल के किनारों के क्षेत्र तथा अरबन/पैरी अरबन क्षेत्रों में विशेष अभियान चलाकर मच्छररोधी गतिविधियां करावे एवं रोग के तुरन्त निदान व उपचार की गतिविधियां सम्पादित करावे। उन्होंने निर्देश दिये कि बीएचएसएसी की बैठक में आशा, सीएचओ, एएनएम, पंचायत स्तर के जनप्रतिनिधियों के माध्यम से जन समुदाय को मच्छररोधी गतिविधियों के प्रति जागरूक करें। उन्होंने निर्देश दिये कि दूरस्थ व पहुंच से दूर क्षेत्रों में मलेरिया डायग्नोस्टिक, दवाइयां व मच्छरदानी की उपलब्धता सुनिश्चित करें। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि सामान्य जन बुखार न होने पर नजदीकी चिकित्सा संस्थान पर जाकर अपनी मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया की जांच करवाकर व जांच में पॉजीटिव पाये जाने पर परिवारों के लोगों की भी स्क्रीनिंग एवं जांच करावे एवं तुरन्त उपचार शुरू करवाए।

असंगठित क्षेत्र के कामगारो को सीएम स्वनिधि से मिलेगा लोन

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.)। मुख्यमंत्री ने वित्तीय वर्ष 2025-26 में शहरी क्षेत्रो में जरूतमंद और असहाय परिवारो के लिए मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना शुरू करने की घोषणा की थी। इसका उद्देश्य अंसगठित क्षेत्र में सेवाएं देने वाले लोगो को आर्थिक मदद देना है। नगरपालिका के अधिशाषी अधिकारी जगदीश खींचड ने बताया कि योजना के तहत नगर पालिका की सीमा में रहने वाले गिर्ग, वर्कर, ट्रांसपोर्ट वर्कर, घरेलू कामगार, भवन निर्माण श्रमिक, हॉकर, कचरा बिनने वाला, कचरा पृथक करने वाला, स्ट्रीट वैण्डर, दस्तकार जैसे लोग, जिन्हे प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना का लाभ नही मिला है, उन्हें इस योजना में शामिल किया जाएगा। ऐसे पात्र व्यक्तियों को कुल 80 हजार रूपये तक का ऋण मिलेगा। 18 से 60 वर्ष की उम्र वाले लोग इस योजना के लिए पात्र होंगे। उन्हें बैंक के माध्यम से 10 हजार 20 हजार और 50 हजार रूपये का ऋण क्रमशः 12 माह, 18 माह और 36 माह की अवधि के लिए मिलेगा। इस पर 7 प्रतिशत ब्याज में छूट दी जाएगी। पालिका ने पात्र लाभार्थियों की पहचान कर चिन्हित किया जा रहा है। आवेदन पत्र के साथ जनआधार, आधार कार्ड, बैंक पास बुक, ई-श्रम कार्ड, पेन कार्ड और व्यवसाय शपथ-पत्र लगाना जरूरी होगा। इच्छुक व्यक्ति ई-मित्र या sso.rajasthan.gov.in के माध्यम से आवेदन कर सकते है। अधिक जानकारी नगर पालिका राजगढ कार्यालय में कमरा नं0 09 में मिनाक्षी मिश्रा (सी.ओ.) से सम्पर्क करे।

विधायक ने विभिन्न विकास कार्यों की कि घोषणा

जयपुर टाइम्स

बहरोड़(निसं.)। विधायक डॉ. जसवन्त सिंह यादव मंगलवार को गादोज गांव में आयोजित धार्मिक कार्यक्रम में शामिल हुए और क्षेत्र की खुशहाली की कामना करते हुए ग्रामीणों के साथ पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर उन्होंने कई विकास कार्यों का शिलान्यास किया और नई घोषणाएं कीं गांव में मुख्य सड़क से हनुमान मंदिर (पुराना खेड़ा) तक इंटरलॉकिंग सड़क का शिलान्यास किया गया, जिसकी लागत 10 लाख रुपये है और यह कार्य विधायक कोष से करवाया जाएगा। साथ ही, सत्ती माता मंदिर से भोमिया बाबा मंदिर तक 5 लाख रुपये की लागत से बनने वाली सीसी रोड का भी शिलान्यास किया गया, जो प्रधान कोटे से स्वीकृत है डॉ. यादव ने गादोज गांव में हनुमान मंदिर से मुख्य सड़क तक इंटरलॉकिंग रोड निर्माण के लिए विधायक कोष से अतिरिक्त 5 लाख रुपये देने की घोषणा भी की इसके बाद उन्होंने नारनौल रोड स्थित अपने विधायक कार्यालय पर जनसुनवाई की। डॉ. यादव ने सभी समस्याएं गंभीरता से सुनते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि क्षेत्र का चहुंमुखी विकास और जनसेवा ही उनकी प्राथमिकता है, और इसी दिशा में लगातार कार्य किया जा रहा है इस दौरान उनके साथ शिवचरण यादव, देवेंद्र यादव, प्रशांत यादव मंडल अध्यक्ष, रामनरेश यादव, अनिल यादव, कर्मवीर यादव, ईश्वर गुर्जर, सुरेश ठेकेदार, कृष्ण कुमार, सुभाष यादव, नरेंद्र यादव उपस्थित रहे।

साइबर क्राइम पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) पंचायत तिलवाड़ के पंचायत भवन में सोमवार को साइबर क्राइम और डिजिटल सुरक्षा को लेकर एक विशेष मोहल्ला सभा का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम रोप फाउंडेशन के संस्थापक आशीष टांक के दिशा-निर्देश में तथा प्रोग्राम मैनेजर अमित कुमार शर्मा के नेतृत्व में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का संचालन फेसिलिटेटर सोनू सैनी द्वारा किया गया। मोहल्ला सभा का उद्देश्य ग्रामीण समुदाय को साइबर अपराध, ऑनलाइन धोखाधड़ी और डिजिटल खतरे के प्रति जागरूक करना था। सभा के मुख्य वक्ता अमित कुमार शर्मा ने साइबर क्राइम के विभिन्न प्रकार जैसे ओटीपी धोखाधड़ी, बैंकिंग फ्रॉड, सोशल मीडिया हैकिंग, फेक कॉल और लिंक के ज़रिए होने वाले जालसाज़ी के मामलों पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कैसे सामान्य जागरूकता, सतर्कता और सही जानकारी के ज़रिए इन खतरों से बचा जा सकता है। साथ ही, उन्होंने साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 और राष्ट्रीय साइबर अपराध पोर्टल के उपयोग की जानकारी भी साझा की। सभा में सरपंच सुगन शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने ग्रामीणों से आग्रह किया कि वे डिजिटल तकनीक का उपयोग करें, लेकिन सजग रहें और संदिग्ध गतिविधियों की तुरंत शिकायत करें। इस अवसर पर शिवसिंह, धर्मेंद्र पालपुर, मामराज सैनी, सुरेश, दिनेश, भूरेलाल, विष्णु शर्मा सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे। सभी ने कार्यक्रम की सराहना की और भविष्य में इस प्रकार की और सभाएँ आयोजित करने की मांग की।

जिला कांग्रेस कमेटी की बैठक में किया विचार-विमर्श

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिला कांग्रेस कमेटी अलवर के प्रभारियों की मंगलवार को एक आवश्यक मीटिंग कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा के नेतृत्व में मौजपुर हॉउस पर आयोजित की गई। कांग्रेस प्रवक्ता रिपु दमन गुप्ता ने बताया की मीटिंग में अलवर जिले की 11 विधानसभा क्षेत्र में नियुक्त प्रभारी मौजूद रहे। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने प्रभारियों से कहा कि आगामी दिनों में आयोजित होने वाले संविधान बचाओ रैली, पूर्व केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह के 12 जून को जन्मदिन के अवसर पर कार्यक्रमों के बारे में विचार-विमर्श किया और सभी प्रभारियों को निर्देशित किया कि वो 2 दिवस में अपने-अपने विधानसभा क्षेत्र में जाकर विधायक, विधायक प्रत्याशी, ब्लॉक अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष, वरिष्ठ कांग्रेसजन, कांग्रेस पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं के साथ मीटिंग का आयोजन करके कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा तैयार करें और जिला कांग्रेस कमेटी को सौंपे। मीटिंग में रोहिताश चौधरी, गफूर खान, शादी खान, बलराम यादव, चंद्रभान गुर्जर, हरिशंकर रावत, अंकित गोयल, जीत कौर सांगवान, अनवर साजिद खान, रामप्रकाश शर्मा मौजूद रहे।

ना स्थायी उपखण्ड अधिकारी नगरपालिका ईओ के पास अतरिक्त चार्ज

क्षेत्र की आमजनता को करना पड़ रहा परेशानी का सामना

राजगढ (निसं.)राजगढ़ में विगत कई महिनों से उपखंड अधिकारी का पद रिक्त होने से आमजन के कार्य रूक गये है। विदित है कि कस्बे में उपखंड अधिकारी पद पर रैणी उपखंड अधिकारी हरकेश मीना को अतिरिक्त कार्यभार दिया हुआ है। राजगढ़ उपखंड अधिकारी नहीं होने से आमजन के कार्य तथा क्षेत्र का विकास नहीं हो पा रहा है। स्थानीय लोगों ने बताया कि राजगढ़ उपखंड अधिकारी के कार्यालय में नहीं मिलने से आमजन की मूलभूत समस्याओं का निराकरण नहीं हो पा रहा है। वहीं लोगों ने सरकार से मांग की है कि राजगढ़ उपखंड क्षेत्र में स्थाई रूप से उपखंड अधिकारी लगाकर आमजन की समस्याओं का निस्तारण हो सकें। राजगढ़ नगरपालिका के अधिशाषी अधिकारी जगदीश खीचड़ के पास राजगढ़ नगरपालिका के अतिरिक्त अन्य नगरपालिकाओं का चार्ज होने के कारण नगरपालिका क्षेत्र का विकास ठप हो गया है। कस्बे के जागरूक लोगों ने बताया कि नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी अक्सर अन्य नगरपालिकाओं में रहते हैं राजगढ़ नगरपालिका में कब आते हैं कब जाते हैं जिसके बारे में किसी को पता नहीं है।

नगर निगम ग्रेटर महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने हिंगोनिया गौशाला का किया औचक निरीक्षण

गायों के लिए पानी, चारा, छाया की पर्याप्त व्यवस्था के दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर महापौर डॉ सौम्या गुर्जर ने सोमवार को हिंगोनिया गौशाला का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने गोवंश से संबंधित सभी व्यवस्थाओं को जाँचा परखा। महापौर ने गायों को हरा चारा खिलाया और दुलार भी किया। महापौर ने आईसीयू, चारा गोदाम का भी निरीक्षण किया। इस अवसर पर डॉ राकेश कारोलिया, सुरेंद्र, पशुधन निरीक्षक उमाशंकर सहित हिंगोनिया गौशाला से संबंधित प्रतिनिधि मौजूद रहे। महापौर ने बताया कि गर्मी को देखते हुए गायों के लिए हरे चारे, पानी, ग्रीन नेट आदि की व्यवस्था समुचित रूप से की जाए एवं बीमार गायों की देखभाल की जाए। महापौर ने राजस्थान की देसी नस्ल के संरक्षण हेतु बनाई गई काऊ सफारी का भी निरीक्षण किया। जहाँ राठी, साहीवाल, काँकरेज, थारपारकर, नागौरी, गिर सहित 5 से भी अधिक प्रकार की नस्लों को रखा गया है। इसके साथ ही गौ परिक्रमा की भी व्यवस्था की गई है। महापौर ने आमजन से भी अपील की कि सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग न करें क्योंकि इसे खाकर गौ माता बीमार पड़ती है। यदि गौ वंश को बचाना है तो हमें सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग छोड़ना ही होगा।

नगर निगम ग्रेटर सतर्कता शाखा की टीम द्वारा की गई कार्यवाही

2 केन्टर सामान जब्त

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर आयुक्त रूकमणि रियाड़ के निर्देशानुसार उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में मंगलवार को सतर्कता शाखा की टीम द्वारा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में शिवानन्द मार्ग मालवीय नगर, सेक्टर 8 इन्दिरा गाँधी नगर, जेएलएन मार्ग फोर्टिस अस्पताल, सीतावाली फाटक के पास बैनाड़ रोड़, सागर एनक्लेव धोलाई सर्किल, पत्रकार कॉलोनी आदि स्थानों से अस्थाई अतिक्रमण को करने वालों से 2 केन्टर सामान जब्त किया गया। उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार ने बताया कि नगर निगम ग्रेटर क्षेत्राधिकार में शिवानन्द मार्ग मालवीय नगर, सेक्टर 8 इन्दिरा गाँधी नगर, जेएलएन मार्ग फोर्टिस अस्पताल, सीतावाली फाटक के पास बैनाड़ रोड़, सागर एनक्लेव धोलाई सर्किल, पत्रकार कॉलोनी से अस्थाई अतिक्रमण हटवाया गया। उपरोक्त कार्यवाही के दौरान 2 केन्टर सामान जब्त कर गोदाम में भिजवाया गया तथा दौरे के दौरान कार्यवाही सतर्कता टीम द्वारा मौके पर समझाइश करते हुए मौखिक पाबंद करवाया कि भविष्य में अस्थाई अतिक्रमण समय से हटा ले अन्यथा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में अवैध अतिक्रमण करने वालों के विरूद्ध भारी चालान या प्रभावी कार्यवाही अमल में लाई जायेगी।

आवासीय विद्यालयों के लिए प्रतिनियुक्ति पर कार्मिक लिये जाने वाला साक्षात्कार कार्यक्रम निरस्त

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के नियंत्राणाधीन राईस द्वारा संचालित आवासीय विद्यालयों के लिए प्रतिनियुक्ति पर कार्मिकों को लिये जाने के लिए होने वाले साक्षात्कार कार्यक्रम को अपरिहार्य कारणों से निरस्त कर दिया गया है। निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव बचनेश अग्रवाल ने आदेश जारी करते हुए बताया कि 10 मई, 2025 को विज्ञप्ति जारी कर, रिक्त शैक्षणिक पदों को प्रतिनियुक्ति के माध्यम से भरने के लिए 27 मई, 2025 से 6 जून, 2025 तक साक्षात्कार आयोजित किया जाना निर्धारित था। उन्होंने बताया कि यह साक्षात्कार कार्यक्रम अपरिहार्य कारणों से निरस्त किया जाता है।

नई दिल्ली के बीकानेर हाउस में आयोजित शोक सभा

राजस्थान के अतिरिक्त मुख्य सचिव स्वर्गीय आलोक को केन्द्रीय मंत्री, सांसदों सहित प्रशासनिक और अन्य विशिष्ट सेवाओं के अधिकारियों ने दी श्रद्धांजली

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान के अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं प्रमुख आवासीय आयुक्त आलोक के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, केंद्रीय कानून मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल, सांसद मंजू शर्मा, सी पी जोशी, उद्योग एवं वाणिज्य राज्य मंत्री, राजस्थान सरकार के.के. विश्नोई पूर्व मंत्री अजय सिंह किलक सहित राजस्थान कैडर के भारतीय प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा एवं अन्य विशिष्ट सेवाओं के सेवारत एवं सेवानिवृत अधिकारियों ने उन्हें अपनी श्रद्धांजली अर्पित की। नई दिल्ली स्थित बीकानेर हाउस में स्वर्गीय आलोक की स्मृति में आयोजित शोक सभा में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों ने 2 मिनट का मौन रखते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उनकी पत्नी ऋतु सिंह और पुत्र अमन व अवि सहित अन्य परिवारजनों को इस दुखद घड़ी में हिम्मत रखने की प्रेरणा दी। सभा में आईएएस तन्मय कुमार, रोहित कुमार, सिद्धार्थ महाजन, रोली सिंह, ए एस भाटिया, आलोक रंजन, राजीव ठाकुर, आईपीएस ओम प्रकाश, रोली अग्रवाल सहित काफी संख्या में सेवारत आईएएस, आईपीएस और सेवानिवृत अधिकारी सु ए के आहूजा, मत पांडेय, जे सी मोहंती इत्यादि भी उपस्थित थे। शोक सभा में उपस्थित विभिन्न व्यक्तियों ने स्वर्गीय आलोक के साथ अपने अनुभवों को साझा कर उनकी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और प्रशासनिक निर्णयों का स्मरण किया। उन्होंने बताया कि आलोक एक सुलझे हुए, नीतिनिष्ठ और दूरदर्शी प्रशासनिक अधिकारी के रूप मे जाने जाते थे और उन्हें प्रशासनिक ढ़ांचे को सशक्त बनाने में उनके सकारात्मक योगदान के लिए सदैव याद किया जाएगा।

सीकर में तेज रफ्तार बोलेरो ने ईंट-भट्टा मालिक को उड़ाया

नीमकाथाना

(निसं.)।सीकर में तेज रफ्तार बोलेरो ने सड़क पार कर रहे ईंट-भट्?टा मालिक को उड़ा दिया। हवा में करीब 12 फीट तक उछले पीड़ित की सड़क पर गिरते ही मौत हो गई। हादसा 31 मई की शाम को नीमकाथाना इलाके में हुआ। चला गांव में हुई टक्कर का वीडियो बोलेरो के आगे चल रही कार के रियर कैमरे में रिकॉर्ड हो गया।

वंदे गंगा जल संरक्षण- जन अभियान से बदलेगी जयपुर के जल स्रोतों की तस्वीर और तकदीर

जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने अधिकारियों को दिये निर्देश

वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान की समस्त तैयारियां हो सुनिश्चित

अभियान के तहत जयपुर के 1 हजार 778 कार्यों का लोकार्पण एवं अवलोकन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। विश्व पर्यावरण दिवस एवं गंगा दशमी के अवसर पर गुरुवार (5 जून) को प्रदेशव्यापी वंदे गंगा जल संरक्षण- जन अभियान का शुभारंभ होगा। राज्य सरकार ने 5 से 20 जून तक प्रदेशभर में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान संचालित करने का फैसला किया है। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने विभागीय अधिकारियों को अभियान को सफल बनाने एवं जन-जन का अभियान बनाने के लिए आपसी समन्वय एवं सहयोग से अभियान की समस्त तैयारियां सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए हैं। अभियान के तहत जिले के जल स्रोतों, नदियों, जलधाराओं एवं तालाबों पर जल पूजन, कलश यात्रा, जागरूकता कार्यक्रम व स्वच्छता अभियान, जल संग्रहण संरचनाओं का लोकार्पण और नई संरचनाओं के शिलान्यास जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। हर गांव और हर व्यक्ति को अभियान से जोड़ते हुए इसे जन आंदोलन का स्वरूप दिया जाएगा। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने जिले के भामाशाहों, जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, कार्मिकों और आमजन से अभियान को जन आंदोलन बनाने का आह्वान किया। मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद प्रतिभा वर्मा ने बताया कि ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज, वन विभाग, जल संसाधन एवं अन्य विभागों के 56.49 करोड़ की लागत के 1778 कार्यों का लोकार्पण एवं अवलोकन किया जावेगा। शहरी क्षेत्र में गलता जी तीर्थ, जग्गा की बावडी, खनिया की बावड़ी एवं अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर श्रमदान, पौधारोपण तथा साफ सफाई का आयोजन किया जावेगा। साथ ही, विभिन्न विभागों के करीब 99 करोड़ की कुल 1 हजार 949 कार्यों का शुभारंभ एवं शिलान्यास किया जायेगा। अभियान के तहत 1 हजार 500 राजस्व गांवों में पौधारोपण के कार्य भी किया जाएंगे। उन्होंने बताया कि अभियान के दौरान महापुरुषों के प्रतिमाओं की सफाई, अस्पतालों की स्वच्छता, तुलसी के पौधों का वितरण जैसी अन्य गतिविधियों भी आयोजित होंगी। इस अवसर पर जल पूजन कार्यक्रम किया जाएगा। जागरूकता बढ़ाने और परंपरागत स्रोतों के संरक्षण के प्रति जागरूक करने के विशेष कार्यक्रमों का भी राजस्व ग्राम स्तर पर आयोजन किया जावेगा। उन्होंने बताया कि वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान को सफल बनाने के लिए अधिकांश विभागों को जिम्मेदारी दी गई है साथ ही जिले समस्त जन प्रतिनिधियों से भी अनुरोध किया गया है, अभियान में राजीविका स्वयं सहायता समूह की महिलाओ का ग्रामीण क्षेत्र में जागरूकता के लिये विशेष सहयोग लिया जावेगा।

राजस्व लक्ष्यों की शत-प्रतिशत प्राप्ति पहली प्राथमिकता, किसी तरह की छीजत और कोताही नहीं होगी बर्दाश्त- प्रमुख सचिव माइन्स

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा का राजस्व वसूली और वैध खनन को प्रोत्साहित करने पर जोर

अप्रेल मई में 1306 करोड़ 44 लाख का राजस्व अर्जित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। खान एवं भूविज्ञान विभाग के प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने कहा है कि राजस्व लक्ष्यों की शतप्रतिशत प्राप्ति विभागीय अधिकारियों की पहली प्राथमिकता है। राजस्व वसूली में किसी भी स्तर पर किसी तरह की छीजत और कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। विभागीय अधिकारियों की वर्चुअल बैठक को संबोधित करते हुए रविकान्त ने बताया कि खान विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष के शुरुआती दो माह में 1306 करोड़ 44 लाख रुपए का राजस्व अर्जित किया गया है जो गत वित्तीय वर्ष की इसी अवधि से 57 करोड़ 71 लाख रुपए अधिक है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा खान विभाग के राजस्व लक्ष्यों की वसूली पर विशेष ध्यान देने और अवैध खनन गतिविधियों पर प्रभावी कार्रवाई के निर्देश दिए जाते रहे हैं। प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने कहा कि अवैध खनन गतिविधियों के दौरान विभाग द्वारा लगाई जा रही शास्ति राशि की वसूली भी उसी सख्ती से सुनिश्चित की जाए ताकि अवैध गतिविधि करने से हतोत्साहित किया जा सके। उन्होंने खान विभाग के अधिकारियों की फील्ड में प्रभावी प्रजेन्स की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि इससे सरकार और खनन क्षेत्र से जुड़े लोगों के बीच बेहतर समन्वय, अवैध गतिविधियों पर रोक व राजस्व और रोजगार की बढ़ोतरी होगी। हमारा उद्देश्य प्रदेश में वैध खनन को प्रोत्साहित करना और राजस्व व रोजगार के नए अवसर विकसित करना है। रविकान्त ने जब्त खनिजों की नीलामी और जब्त वाहनों को राजसात करने के निर्देश दिए। राइजिंग राजस्थान के दौरान हुए एमओयू की चर्चा करते हुए उन्होंने अधिकारियों से एमओयू धारकों से संबंधित खनि अधिकारियों को समन्वय बनाने और धरातल पर लाने में सहयोग के निर्देश दिए। उन्होंने न्यायालयों में विचाराधीन प्रकरणों में समय पर जबावदावा प्रस्तुत करने, निर्णित मामलों में पालना सुनिश्चित करने और मुख्यमंत्री कार्यालय सहित प्राप्त प्रकरणों पर तत्काल कार्रवाई करने को कहा। निदेशक माइंस दीपक तंवर ने कहा कि फील्ड अधिकारियों के विजिलेंट रहने से अवैध गतिविधियों पर अंकुश संभव है। उन्होंने फील्ड स्तर पर बकाया प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए। वर्चुअल बैठक में खान विभाग के अतिरिक्त निदेशक, एसएमई, एमई एएमई, वित्तीय सलाहकार के साथ ही संयुक्त सचिव मती आशु चौधरी, ओएसडी कृष्ण शर्मा, एसजी सचिवालय सुनील कुमार वर्मा, एसजी जयपुर संजय सक्सेना, जेएलआर गजेन्द्र सिंह सहित विभागीय अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

जल्द शुरू होंगे मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा के रजिस्ट्रेशन, पशुपालन मंत्री ने योजना की समीक्षा बैठक में दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। पशुपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग मंत्री जोराराम कुमावत ने कहा कि राज्य सरकार की बजट घोषणा 2025-26 के तहत मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के लिए रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया जल्द ही प्रारंभ होगी। योजना के तहत पशुपालक परिवारों के 42 लाख गाय, भैंस, भेड़, बकरी और ऊंट का रिस्क कवर किया जाएगा। कुमावत मंगलवार को शासन सचिवालय में आयोजित योजना की समीक्षा बैठक में बोल रहे थे। बैठक में पशुपालन विभाग के शासन सचिव डॉ. समित शर्मा, निदेशक डॉ. आनंद सेजरा, वित सचिव नवीन जैन, राज्य बीमा और प्रावधायी निधि विभाग के अधिकारी तथा पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ सुरेश मीना सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। कुमावत ने कहा कि यह योजना मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की महत्वाकांक्षी योजना है। उन्होंने योजना का प्रभावी रूप से क्रियान्वयन करने के लिए अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि पशुओं के हेल्थ सर्टिफिकेट के साथ ही उसकी बीमा पॉलिसी भी जारी की जाए जिससे यह काम अपने निर्धारित समयावधि में पूरा हो सके। उन्होंने पिछले वर्ष की बीमा पॉलिसी जारी करने की धीमी गति पर नाराजगी जाहिर करते हुए सर्वेयर की संख्या में बढ़ोतरी करने के निर्देश दिए। बैठक में बजट घोषणा के मुताबिक इस वर्ष 42 लाख पशुओं का बीमा कवर करने के संबंध में विस्तार से चर्चा हुई और कुमावत ने विभाग के अधिकारियों को इसी महीने नए रजिस्ट्रेशन के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए। बाद में मीडिया से बात करते हुए कुमावत ने बताया कि वर्ष-2024-25 में कुल 16 लाख 72 हजार ऑनलाइन आवेदन प्राप्त हुए थे। इनमें से पशुपालन विभाग ने 9 लाख 76 हजार पशुओं के हेल्थ सर्टिफिकेट जारी कर दिए हैं। इनमें से 4 लाख 40 हजार राज्य बीमा और प्रावधायी निधि विभाग (एसआईपीएफ) की ओर से बीमा पॉलिसी जारी कर दी गई है। शेष बीमा पॉलिसी व हेल्थ सर्टिफिकेट जारी करने के कार्य को जल्द से जल्द पूरा करने के लिए अधिकारियों को पाबंद किया गया है। इसके साथ ही बजट 2025-26 की घोषणा के तहत नए रजिस्ट्रेशन के लिए इसी महीने ऑनलाइन आवेदन शुरू करने के लिए भी कहा गया है। उन्होंने बताया कि इस बार इस कार्य को निर्धारित अवधि में पूरा करने के उदेश्य से बीमा कंपनी को भी सर्वेयर की संख्या बढ़ाने के लिए कहा गया है। उल्लेखनीय है कि इस योजना के तहत पशुओं की आकस्मिक मृत्यु पर पशुपालक परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना में प्रदेश के जनआधार धारक पशुपालक पात्र होंगे। बीमा के लिए गोपालक क्रेडिट कार्ड धारक और लखपति दीदी पशुपालकों को प्राथमिकता दी जाएगी। साथ ही अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए क्रमशः 16 और 12 प्रतिशत का आरक्षण है। चयनित पशुपालकों के दुधारू पशु (गाय, भैंस) या बकरी, भेड़ व ऊंट का निःशुल्क बीमा किया जाएगा। लेकिन यह बीमा केवल उन्हीं पशुओं का होगा जो अन्य किसी योजना में बीमित नहीं हैं। यह बीमा एक वर्ष के लिए होगा और पशुपालक को इसके लिए कोई प्रीमियम नहीं देना होगा। बीमा राशि का निर्धारण पशु की नस्ल, उम्र और उत्पादन क्षमता के आधार पर किया जाएगा, लेकिन अधिकतम राशि 40 हजार रुपए से अधिक नहीं होगी।

अनुसूचित जाति-जनजाति, सफाई कर्मचारी, दिव्यांगजन व अन्य पिछड़ा वर्ग स्वरोजगार ऋण के लिए अब कर सकेंगे ऑनलाइन आवेदन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत ने मंगलवार को राजस्थान अनुसूचित जाति जनजाति वित्त एवं विकास सहकारी निगम लि. के ऋण आवेदन पोर्टल का शुभारम्भ किया। गहलोत ने सचिवालय स्थित अपने कक्ष में पोर्टल शुभारंभ के मौके पर कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की दूरदर्शी और प्रगतिशील सोच के परिणामस्वरूप अनुजा निगम के ऋण पोर्टल में वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सफाई कर्मचारी, दिव्यांगजन एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के आवेदक स्वरोजगार के ऋण के लिए अब ऑनलाईन आवेदन कर सकेंगे। गहलोत ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा वंचित वर्ग के व्यक्तियों के स्वरोजगार के लिए इन निगमों को पहली बार राज्य सरकार की तरफ़ से ऋण उपलब्ध करवाया गया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार वंचित तबके के उत्थान और कल्याण के लिए पूरी तरह संकल्पबद्ध है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने कहा कि इन वर्गों के आवेदक 31 अगस्त, 2025 तक ऋण के लिए ऑनलाईन आवेदन कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पारदर्शी और सुशासन की मंशा के चलते विभाग ने यह नवाचार किया है। उन्होंने बताया कि आवेदक ऑनलाइन ऋण आवेदन ई-मित्र के माध्यम से अथवा लाभार्थी अपनी स्वयं की एसएसओ आई डी से भर सकता है। गहलोत ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2025-26 में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के व्यक्तियों को 37.50 करोड़ रुपए का ऋण उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है। यह ऋण राशि राज्य सरकार द्वारा अनुजा निगम को उपलब्ध कराई गई है। उन्होंने कहा कि सफाई कर्मचारी एवं दिव्यांगजनों को भारत सरकार की राष्ट्रीय निगमों के माध्यम से लगभग 10 करोड़ रूपए का ऋण उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है। गौरतलब है कि बजट घोषणा वर्ष 2025-26 में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सफाई कर्मचारी, दिव्यांगगजन एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के डिफाल्टर ऋणियों को ऋण चुकाने में राहत के लिए एकमुश्त समाधान योजना (ओटीएस-वन टाइम सेटलमेंट स्कीम) प्रारम्भ की गई है। इन वर्गों के ऋणी जो 30 सितंबर, 2025 तक अपना मूलधन जमा करा देंगे उनको अतिदेय ब्याज एवं पेनल्टी की छूट भी दी जावेगी तथा राज्य सरकार द्वारा अतिदेय ब्याज एवं पेनल्टी की राशि उपलब्ध कराई जावेगी।

कॉलेज शिक्षा विभाग ने जारी की नई प्रवेश नीति, राजकीय कॉलेजों में 4 जून से शुरू होगी प्रवेश प्रक्रिया

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप प्रवेश नीति में किए संशोधन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। कॉलेज शिक्षा विभाग ने उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा के अनुमोदन उपरांत सत्र 2025-26 के लिए राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों की नई प्रवेश नीति जारी कर दी है। जिसे विभागीय वेबसाईट https://hte.rajasthan.gov.in/dept/dce/Circulars.php पर देखा जा सकता है। राज्य के 663 राजकीय महाविद्यालयों में विभिन्न संकायों में स्नातक प्रथम वर्ष की 2,52,000 सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया शुरू होगी। कॉलेज शिक्षा आयुक्त डॉ. ओम प्रकाश बैरवा ने बताया कि राज्य सरकार का लक्ष्य है कि वर्ष 2035 तक सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) को 50 प्रतिशत तक पहुँचाया जाए, जिससे अधिक से अधिक विद्यार्थी उच्च शिक्षा से जुड़ सकें।

सत्र 2025-26 से प्रदेश के समस्त महाविद्यालयों में स्नातक के त्रिवर्षीय पाठ्यक्रमों में पूर्ण रूप से सेमेस्टर प्रणाली लागू कर दी गई है। इससे पाठ्यक्रम संचालन अधिक व्यवस्थित और गुणवत्तापूर्ण हो सकेगा।

नई प्रवेश नीति के तहत प्रवेश प्रक्रिया के अंतिम चरण में ऐसे विद्यार्थी जो फीस जमा नहीं करने के कारण डिफॉल्टर हो जाते हैं, उन्हें भी सीटें रिक्त होने पर प्रवेश का अवसर दिया जाएगा।

नई प्रवेश नीति में उन विद्यार्थियों का भी ध्यान रखा गया है जो अगली कक्षा में प्रमोट नहीं हो पाए हैं। उन्हें उसी या किसी अन्य संकाय में, निर्धारित सीटों के अतिरिक्त सीटों पर प्रवेश की सुविधा दी जाएगी, ताकि उनका शैक्षणिक भविष्य सुरक्षित रह सके।

मुख्य सचिव ने की राइजिंग राजस्थान 2024 के दौरान एमओयू क्रियान्वयन की समीक्षा बैठक

मुख्य सचिव ने राजस्थान की व्यापार प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने हेतु अनुपालन में कमी और विनियमन शिथिलीकरण अभ्यास की प्रगति की भी समीक्षा की

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्य सचिव सुधांश पंत ने 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 के दौरान हस्ताक्षरित एमओयू के क्रियान्वयन की प्रगति की द्वि-साप्ताहिक समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में उन्होंने तीव्र भूमि आवंटन की प्रक्रिया को एमओयू क्रियान्वयन में तेजी लाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया और जिला कलेक्टरों को निर्देश दिया कि वे अपने-अपने जिलों में भूमि बैंकों के निर्माण प्रक्रिया को तेज करें। पंत ने पर्यटन विभाग को निर्देश दिया कि वह उदयपुर, जैसलमेर, पुष्कर (अजमेर) आदि प्रमुख जिलों में सरकारी भूमि की नीलामी एवं आवंटन हेतु उपयुक्त प्रावधान तैयार करे। उन्होंने कहा कि भूमि की उपलब्धता के साथ-साथ विभागों को एमओयू के शीघ्र क्रियान्वयन को प्रोत्साहित करने तथा विभिन्न क्षेत्रों में नियामक ढांचे को सरल बनाने की दिशा में भी कार्य करना चाहिए। एमओयू क्रियान्वयन पर द्वि-साप्ताहिक समीक्षा बैठक के अतिरिक्त, पंत ने भारत सरकार द्वारा निर्देशित अनुपालन में कमी और विनियमन शिथिलीकरण अभ्यास की प्रगति की समीक्षा बैठक की भी अध्यक्षता की। विभागीय सचिवों ने पंत को केंद्रीय मंत्रिमंडल सचिवालय द्वारा निर्धारित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु उठाए गए प्रमुख कदमों से अवगत कराया। मुख्य सचिव ने राजस्थान कारखाना एवं बॉयलर विभाग, श्रम विभाग, रीको, बीआईपी, राजस्व विभाग, शहरी विकास एवं आवास विभाग (यूडीएच), राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (आरएसपीसीबी) सहित विभिन्न विभागों द्वारा उठाए गए कदमों की समीक्षा की। जिन प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर कार्य किया जा रहा है, उनमें उद्योगों के लिए जीआईएस-आधारित भूमि बैंक का विकास, भवन विनियमों में संशोधन, सिंगल विंडो अप्रूवल प्रणाली, लघु अपराधों को अपराध की श्रेणी से बाहर करना, कुछ वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को डी-लाइसेंस करना, महिलाओं को रात्रि शिफ्ट में और कुछ खतरनाक उद्योगों में कार्य की अनुमति देना आदि शामिल हैं। मुख्य सचिव ने यह भी निर्देश दिया कि राज्य सरकार के विशिष्ट व्यापारिक सुधारों को भारत सरकार के ऑनलाइन पोर्टल पर 'बेस्ट प्रैक्टिस' के रूप में अपलोड किया जाए और अन्य राज्यों द्वारा अपनाए गए सुधारों से भी सीख ली जाए। यह उल्लेखनीय है कि 9 से 11 दिसंबर 2024 को आयोजित निवेश सम्मेलन के दौरान सरकार ने ?35 लाख करोड़ के रिकॉर्ड निवेश प्रस्तावों पर हस्ताक्षर किए थे। मार्च में आयोजित '1.0' कार्यक्रम में सरकार ने घोषणा की थी कि सम्मेलन के तीन माह के भीतर ही 3.08 लाख करोड़ के एमओयू धरातल पर उतारे जा चुके हैं। इस बैठक में उपस्थित अधिकारियों में लोक निर्माण विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव प्रवीण गुप्ता, उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के प्रमुख शासन सचिव अजिताभ शर्मा, राजस्व विभाग के प्रमुख शासन सचिव दिनेश कुमार, स्थानीय स्वशासन विभाग के प्रमुख शासन सचिव राजेश यादव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण विभाग की प्रमुख शासन सचिव मती गायत्री राठौड़, खान एवं पेट्रोलियम विभाग के प्रमुख शासन सचिव टी. रविकांत, खाद्य, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामले विभाग के प्रमुख शासन सचिव सुबीर कुमार, विधि एवं कानूनी मामले विभाग के प्रमुख शासन सचिव ब्रजेन्द्र कुमार जैन, उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के आयुक्त रोहित गुप्ता तथा राजस्थान सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

दोस्ती या मौत की सैरः युवाओं की असमय विदाई का बढ़ता सिलसिला

"जब यार ही यमराज बन जाएं, तो मां-बाप किस पर भरोसा करें?"

डॉ सत्यवान सौरभ

हरियाणा में इन दिनों एक डरावना चलन पनपता दिख रहा है। हर हफ्ते कहीं न कहीं से यह खबर आती है कि कोई युवा दोस्तों के साथ घूमने गया और लौट कर अर्थी में आया। ये घटनाएं केवल अखबार की सुर्खियां नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक ताने-बाने और व्यवस्था की खामियों की वीभत्स तस्वीर हैं। 'दोस्ती' अब 'दुर्घटना' का पर्याय बनती जा रही है।

घटनाएं जो झकझोर देती हैं

पिछले कुछ हफ्तों में ही हरियाणा में कई ऐसी घटनाएं सामने आई हैं

हिसार में दो युवकों की झील में डूबकर मौत, जहां वे अपने दोस्तों के साथ पिकनिक मनाने गए थे। परिजनों का आरोप है कि साथी दोस्त वीडियो बनाते रहे, मदद नहीं की। सोनीपत में एक लड़के की दोस्तों ने गला दबाकर हत्या कर दी, फिर शव को नहर में फेंक दिया। रेवाड़ी में एक छात्र का शव जंगल में मिला, जो आखिरी बार अपने दोस्तों के साथ देखा गया था। इन घटनाओं में कुछ समानताएं हैं (1) युवा अपने भरोसेमंद दोस्तों के साथ थे,

(2) परिवार को जानकारी नहीं थी कि असल में कहां गए हैं,

(3) मौत के बाद दोस्तों की भूमिका संदिग्ध रही।

दोस्ती के पीछे छिपता अपराध

माना जाता है कि दोस्ती सबसे मजबूत रिश्ता होता है, खून से भी गाढ़ा। पर हरियाणा में यह धारणा दरक रही है। अब दोस्ती की आड़ में जलन, प्रतिस्पर्धा, चालबाज़ी और यहां तक कि हत्या तक के मामले सामने आ रहे हैं। कई बार ये दोस्त ड्रग्स, जुए, बाइक रेसिंग जैसे खतरनाक कामों में एक-दूसरे को फंसा देते हैं।

परिवारों की असहायता और गूंगी चीखें

इन घटनाओं में सबसे ज़्यादा पीड़ित वे माता-पिता हैं, जिन्होंने अपने बच्चों को घर से हँसते हुए विदा किया और फिर लाशों में बदलकर पाया। वे न समझ पा रहे हैं कि गलती उनकी थी या सिस्टम की या फिर उस 'दोस्ती' की, जिस पर उन्होंने आँख मूँदकर विश्वास किया था। कई बार परिवार को यह भी नहीं पता होता कि बच्चा किसके साथ गया है। सोशल मीडिया और मोबाइल की दुनिया ने एक झूठी पारदर्शिता बनाई है, जिसमें हर चीज़ दिखती है, पर सच्चाई कहीं छिप जाती है।

सिस्टम की नाकामी

प्रशासन और पुलिस का रवैया भी इन मामलों में बेहद सुस्त रहा है। अधिकतर मामलों में पुलिस तब हरकत में आती है जब मीडिया दबाव डालता है या परिजन सड़क पर उतर आते हैं। शुरुआती रिपोर्ट में अकसर दुर्घटना कहकर मामला रफा-दफा कर दिया जाता है। बच्चों की लोकेशन ट्रेसिंग, उनके घूमने की सूचना, पार्क और पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा बंदोबस्त–इन सभी में भारी कमी दिखाई देती है।

शिक्षा और संवाद की कमी

एक और बड़ा कारण है युवाओं के साथ संवादहीनता। परिवार, शिक्षक और समाज युवाओं को केवल 'कैरियर' या 'शादी' के चश्मे से देखते हैं। दोस्त कौन हैं? जीवन में क्या तनाव है? किस दिशा में सोच रहे हैं?–इन सवालों पर कोई ध्यान नहीं देता।

जब संवाद की जगह सन्नाटा ले लेता है, तो दोस्ती ही सबसे बड़ा प्रभाव बन जाती है–फिर चाहे वह सकारात्मक हो या घातक।

क्या हर सैर मौत की मंज़िल बनेगी?

क्या अब हर माता-पिता को डरना होगा जब उनका बच्चा कहेगा, "दोस्तों के साथ घूमने जा रहा हूँ"? क्या अब युवाओं को बाहर जाने के लिए पुलिस वेरिफिकेशन कराना होगा? ये सवाल जितने बेतुके लगते हैं, आज के संदर्भ में उतने ही वास्तविक हैं। अगर समाज ने अभी चेतावनी नहीं ली, तो वह दिन दूर नहीं जब 'दोस्ती' शब्द से ही डर लगेगा।

समाधान की राह

इन घटनाओं को रोकने के लिए महज शोक या गुस्से से काम नहीं चलेगा, हमें ठोस कदम उठाने होंगे

1. युवा सुरक्षा नीति हरियाणा सरकार को युवाओं की सुरक्षा को लेकर अलग नीति बनानी चाहिए, जिसमें घूमने वाले समूहों की जानकारी, पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा, और आपातकालीन हेल्पलाइन जैसी व्यवस्थाएं हों।

2. माता-पिता से संवाद स्कूलों और कॉलेजों में माता-पिता और बच्चों के बीच संवाद को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम होने चाहिए।

3. मनोवैज्ञानिक परामर्श युवाओं को काउंसलिंग और मेंटल हेल्थ सपोर्ट मिलना चाहिए, ताकि वे सही और गलत दोस्ती के बीच फर्क समझ सकें।

4. सोशल मीडिया निगरानी कई बार लड़ाई-झगड़े या जलन की जड़ें इंस्टाग्राम, स्ड्डश्चष्द्धड्डह्ल या ङ्घद्धड्डह्लह्यड्डश्चश्च जैसे प्लेटफॉर्म से उपजती हैं। अभिभावकों को डिजिटल व्यवहार पर भी सतर्क रहना होगा।

5. सख्त कानूनी कार्रवाई जिन मामलों में दोस्त ही अपराधी पाए जाते हैं, वहां त्वरित और सख्त कार्रवाई की जाए ताकि एक स्पष्ट संदेश जाए।

6. युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना शिक्षा व्यवस्था में ऐसी सामग्री और संवाद जोड़े जाएं जो युवाओं को जीवन मूल्यों, संबंधों की समझ और संवेदनशीलता सिखा सकें।

दोस्ती के मायने फिर से गढ़ने होंगे

हरियाणा के युवाओं को एक ऐसे समाज की जरूरत है जहां दोस्ती भरोसे का पर्याय बने, भय का नहीं। और माता-पिता को भी एक ऐसे माहौल की दरकार है जहां वे अपने बच्चों को मुस्कुराकर विदा कर सकें–बिना इस डर के कि लौटेंगे या नहीं।

हमें मिलकर यह तय करना होगा कि दोस्ती की राह मौत की मंज़िल न बने। वरना वो दिन दूर नहीं जब "मैं दोस्तों के साथ जा रहा हूँ" सुनते ही हर माता-पिता का कलेजा कांप उठेगा।

फर्जी रिश्तों का व्यापारः शादी नहीं, ठगी का धंधा

हिसार पुलिस ने हाल ही में ऐसे गिरोह का पर्दाफाश किया है जो विवाह के नाम पर लोगों को ठगने का सुनियोजित कारोबार चला रहा था। आरोपी पहले से कई फर्जी शादियाँ कर चुका था। इस बार, न केवल दुल्हन नकली थी, बल्कि उसके 'माता-पिता' भी फर्जी निकले। एक भोला-भाला युवक, जो जीवनसाथी की तलाश में था, शादी के सपने लिए इस जाल में फँस गया और लौटे तो खाली जेब, टूटी उम्मीदें और गहरी मानसिक चोट के साथ।

सोचिए, जब किसी के जीवन की सबसे बड़ी खुशी को शातिर गिरोह पैसे कमाने का साधन बना लें, तब कानून और समाज की जिम्मेदारी क्या बनती है?

आंकड़ों की चिंता से ज़्यादा ज़रूरत जागरूकता की नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो के अनुसार, हर साल भारत में हजारों लोग विवाह के नाम पर ठगी का शिकार होते हैं। 2023 में ही देशभर में लगभग 3200 से अधिक फर्जी विवाह और उनसे जुड़ी ठगी की शिकायतें दर्ज हुईं। इनमें से अधिकांश में महिला और उसके तथाकथित परिजनों ने विवाह के बाद धन, जेवर और नकद लेकर फरार होने की योजना पहले से बनाई होती है।

इस बढ़ती प्रवृत्ति का सबसे दुखद पहलू यह है कि ऐसे अपराधों में शामिल महिलाएं न केवल कानून का मजाक उड़ाती हैं, बल्कि असल में शोषित और ज़रूरतमंद महिलाओं की आवाज को भी कमजोर करती हैं।

कानून की कमजोरी या सिस्टम की सुस्ती?

ऐसे मामलों में सबसे बड़ा सवाल उठता है क्या हमारा कानूनी सिस्टम इतना सुस्त है कि शादी जैसे गंभीर और सामाजिक तौर पर महत्वपूर्ण विषय में भी फर्जीवाड़ा बेरोकटोक जारी रह सके? विवाह पंजीकरण प्रणाली को यदि सख्त और डिजिटल तरीके से लागू किया जाए, तो ऐसे 90 प्रतिशत मामलों को शुरुआती स्तर पर ही रोका जा सकता है।

इसके लिए ज़रूरी है

1. आधार वेरिफिकेशन से जुड़ा विवाह पंजीकरण हर शादी का डिजिटल दस्तावेजीकरण और पहचान सत्यापन अनिवार्य किया जाए।

2. शादी ब्यूरो और मैरिज एजेंटों की निगरानी जिन संस्थानों के माध्यम से रिश्ता तय हो, उनकी पृष्ठभूमि की जांच और पंजीकरण जरूरी बनाया जाए।

दुल्हन फर्जी, रिश्ता असली बेवकूफी का! फर्जी रिश्तों का व्यापार- शादी नहीं, ठगी का धंधा भारत में शादियों को लेकर एक सांस्कृतिक उत्सव, पारिवारिक प्रतिष्ठा और भावनात्मक जुड़ाव की भावना जुड़ी होती है। लेकिन जब इस पवित्र रिश्ते को ठगों का व्यवसाय बना दिया जाए, तो यह सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, बल्कि पूरे समाज के विश्वास की हत्या होती है। हरियाणा के हिसार से सामने आया ताज़ा मामला इसी सामाजिक बीमारी की खतरनाक तस्वीर पेश करता है- जहाँ दुल्हन, उसके माता-पिता और पूरा रिश्ता ही नकली निकला। यह घटना सिर्फ एक समाचार नहीं, बल्कि एक सामाजिक चेतावनी है-÷अब भी नहीं चेते तो हर घर को अपनी आबरू खुद बचानी होगी।÷

प्रियंका सौरभ

3. फर्जीवाड़ा रोकने के लिए विशेष अदालतें ऐसे मामलों की सुनवाई के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाए जाएँ ताकि पीड़ितों को न्याय जल्दी मिले।

समाज की भोली सोच और अंधा भरोसा

कई बार ऐसे मामलों में लोग यह सोचकर धोखा खा जाते हैं कि रिश्ता तय करने वाले लोग 'परिचित' हैं या 'समाज के जानकार'। रिश्तों के नाम पर 'प्रस्ताव' भेजना, फिर थोड़ा दिखावा, एक-दो मुलाकातें, और शादी का दबाव – यही ट्रेंड बन चुका है।

फिर आती है समाज की सबसे बड़ी विडंबना लड़की के परिवार को कम सवाल पूछे जाते हैं, जबकि लड़के के घरवालों से लाख शर्तें मानी जाती हैं। यह असंतुलन भी ठगों के लिए रास्ता आसान करता है।

महिलाओं की छवि पर भी असर

फर्जी दुल्हन गिरोह की खबरें समाज में महिलाओं को शक की निगाह से देखने की प्रवृत्ति को और बढ़ावा देती हैं। यह न केवल महिलाओं के अधिकारों के लिए खतरनाक है, बल्कि असल पीड़ितों को भी न्याय से वंचित करता है। जब कोई महिला सही नियत से रिश्ता बनाना चाहती है, तब समाज का यह अविश्वास उसे शर्मिंदगी और मानसिक पीड़ा देता है। ऐसे में ज़रूरी है कि कानून ऐसे फर्जीवाड़ों को जड़ से खत्म करे, ताकि महिलाओं के प्रति समाज का विश्वास भी सुरक्षित रह सके।

मीडिया की जिम्मेदारी और भूमिका

आजकल मीडिया भी ऐसे मामलों को सनसनीखेज बनाकर परोसता है। 'दुल्हन फरार', 'फर्जी सास-ससुर', 'लुटेरा परिवार' जैसे शीर्षक बिकते हैं, लेकिन इससे आगे की पड़ताल – जैसे कि ठगों के नेटवर्क, एजेंटों की भूमिका, और पुलिस की निष्क्रियता – अक्सर छूट जाती है। मीडिया को चाहिए कि वह समाज को जागरूक करे, न कि सिर्फ मज़ाक उड़ाए या TRP के लिए खबरों को मसालेदार बनाए। यह पत्रकारिता की नैतिक जिम्मेदारी है कि वह लोगों को जानकारी दे, चेतावनी दे और सही कदम उठाने की दिशा दिखाए। पीड़ितों को शर्म नहीं, समर्थन चाहिए

सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तब पैदा होती है जब ठगी के शिकार हुए लोग समाज में मज़ाक बन जाते हैं। पीड़ित लड़का या उसका परिवार जब पुलिस के पास जाता है, तो अक्सर 'तू ही बेवकूफ है', 'थोड़ा देख-परख लिया होता', 'लड़की की फोटो में ही शक था' जैसे ताने सुनने को मिलते हैं। ऐसी सोच को बदलना होगा। पीड़ितों को मदद, काउंसलिंग और कानूनी समर्थन चाहिए, न कि समाज से दुत्कार। अगर समाज पीड़ित के साथ खड़ा हो, तो अपराधियों की हिम्मत नहीं होगी दोबारा किसी के साथ ऐसा छल करने की। आजकल ठग टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर रहे हैं – फर्जी दस्तावेज, फर्जी पहचान, और यहां तक कि Deepfake वीडियो और नकली सोशल मीडिया प्रोफाइल्स भी इस्तेमाल किए जा रहे हैं।

हम किसे गरीब माने

यही तथ्य यह साबित करता है कि आखिर काम कितना कठिन है। इसने अचानक तो ऐसा सुझाव दिया नहीं है। पहले के सारे मानकों और आंकड़ों का अध्ययन किया, उन पर आई प्रतिक्रियाओं की भी जांच-परख की, फिर सरकारी कार्यक्रमों का इनके साथ मिलान किया। इन सबके बाद जब कोई सर्वसम्मत सूत्र और आंकड़ा निकालना संभव नहीं हुआ तो लगा कि क्यों न इसके लिए एक अलग से पैनल बनवा दिया जाए। चलिए, इसके लिए एक अलग ही पैनल बन जाए और कोई सर्वसम्मत और व्यावहारिक मानक तय हो। कम से कम तत्काल तो हम इस पैनल का स्वागत करेंगे। आखिर गरीबों की पहचान का कोई तो सर्वसम्मत और व्यावहारिक मानक तय हो, जिससे हमें यह पता चले कि वास्तव में भारत में कितने लोग या परिवार ऐसे हैं जिन्हें गरीब कहा जा सकता है। नीति आयोग हर मामले में नए रुख के लिए जाना जाता है इसलिए उम्मीद कर सकते हैं कि इस मामले में भी उसकी सोच और दृष्टिकोण में

हमारे-आपके लिए कौन गरीब है इसे अपने आसपास पहचानना कठिन नहीं है। लेकिन जब सरकार की ओर से गरीबों की औपचारिक पहचान की बात आती है तो समस्या बढ़ जाती है। वास्तव में भारत में कौन गरीब है इसके निर्धारण का प्रश्न एक जटिल पहेली की तरह हमारे सामने लंबे समय से खड़ा है। गरीबी तय करने को लेकर समय-समय पर कुछ मानक निर्धारित किए गए और उनके आधार पर एक रेखा तय की गई जिसे गरीबी रेखा कहा जाता है। इसके अनुसार इस बात का आंकड़ा निकाला गया कि कितनी आबादी गरीबी रेखा के नीचे है। मगर कभी भी न संख्या पर आम सहमति रही न इसके लिए बनाए गए आधारों पर। इन मानकों और इनसे निकले आंकड़ों पर जितने विवाद हुए वे सब हमारे सामने हैं। दरअसल, यह मांग लंबे समय से है कि गरीबी को मापने का एक ऐसा आधार बनाया जाना चाहिए जो सर्वमान्य हो। यह कहना जितना आसान है, करना उतना ही कठिन। जो सूचना मिल रही है उसके मुताबिक नीति आयोग ने प्रधानमंत्री कार्यालय को लिखा है कि इसके लिए नई समिति बनाई जाए। सरकार नीति आयोग के माध्यम से गरीबी मिटाने के लिए एक कार्य-योजना बनाने पर काम रही है। इसके लिए नीति आयोग के उपाध्यक्ष अरविंद पनगढ़िया के नेतृत्व में एक कार्यबल गठित हो चुका है। इसी ने सरकार को एक पैनल गठित करने का सुझाव दिया है। इससे लगता है कि पिछले डेढ़ साल की कवायद में कार्यबल गरीबी के मानक को लेकर स्वयं किसी निष्कर्ष पर पहुंचने में सफल नहीं रहा है। यानी मानकों को लेकर सहमति नहीं बन सकी है। इसलिए उसने एक अलग पैनल का सुझाव दे दिया।

यही तथ्य यह साबित करता है कि आखिर काम कितना कठिन है। इसने अचानक तो ऐसा सुझाव दिया नहीं है। पहले के सारे मानकों और आंकड़ों का अध्ययन किया, उन पर आई प्रतिक्रियाओं की भी जांच-परख की, फिर सरकारी कार्यक्रमों का इनके साथ मिलान किया। इन सबके बाद जब कोई सर्वसम्मत सूत्र और आंकड़ा निकालना संभव नहीं हुआ तो लगा कि क्यों न इसके लिए एक अलग से पैनल बनवा दिया जाए। चलिए, इसके लिए एक अलग ही पैनल बन जाए और कोई सर्वसम्मत और व्यावहारिक मानक तय हो। कम से कम तत्काल तो हम इस पैनल का स्वागत करेंगे। आखिर गरीबों की पहचान का कोई तो सर्वसम्मत और व्यावहारिक मानक तय हो, जिससे हमें यह पता चले कि वास्तव में भारत में कितने लोग या परिवार ऐसे हैं जिन्हें गरीब कहा जा सकता है। नीति आयोग हर मामले में नए रुख के लिए जाना जाता है इसलिए उम्मीद कर सकते हैं कि इस मामले में भी उसकी सोच और दृष्टिकोण में नयापन होगा।

वास्तव में गरीबों की पहचान करने के लिए पिछले आधे दशक से ज्यादा समय से औपचारिक कोशिशें की जा रही हैं। 1979 में डॉ वाइके अलघ की अध्यक्षता में गठित कार्यबल ने शहरों में प्रतिदिन 2400 कैलोरी और गांवों में 2100 कैलोरी से कम भोजन करने वालों को गरीब माना। इसके अनुसार शहरों में 53.64 रु. और गांवों में 49.09 रु. प्रतिव्यक्ति प्रति माह खर्च को गरीबी रेखा माना गया। यानी इससे ज्यादा जो खर्च करते थे वे गरीब नहीं थे। इसके अनुसार गरीबों की संख्या कुल पैंतालीस प्रतिशत मानी गई। उस समय भी इसे लेकर अलग-अलग राय प्रकट की गई। लेकिन यही मान्यता लंबे समय तक चलती रही। कारण, कोई दूसरा इससे बेहतर आधार सामने नहीं आया। 1993 में डीटी लकड़ावाला के नेतृत्व में गठित कार्यबल ने इस मानक में कोई बदलाव नहीं किया।

ऐसा ही 2005 में सुरेश डी तेंदुलकर की अगुआई वाले

कार्यबल ने किया। उसने लकड़ावाला के तरीके से 2004-05 में तैयार गरीबी रेखा को ही मूल्यों पर आधारित गरीबी रेखा में बदल दिया। इसमें गांवों में प्रतिदिन सत्ताईस रुपए और शहरों में तैंतीस रुपए से कम खर्च करने वालों को गरीब माना गया। 2012 में सी रंगराजन की अध्यक्षता में बने समूह ने गांवों में एक दिन में बत्तीस रुपए और शहरों में सैंतालीस रुपए खर्च करने वालों को गरीब नहीं माना। यानी इससे कम खर्च करने वाले गरीब माने गए। सी. रंगराजन के इस आधार पर तब के विपक्ष यानी भाजपा ने काफी हंगामा मचाया और इसका मजाक भी उड़ाया। जाहिर है, जब आप सरकार में आए हैं तो आपकी जिम्मेवारी बनती है कि आप इसे परिवर्तित करें और ऐसा मानक लाएं जो उससे बेहतर हो तथा जिसे ज्यादातर लोग व्यावहारिक कह सकें।

चूंकि केंद्र व राज्य सरकारों की अनेक योजनाएं गरीबी रेखा से नीचे जीने वालों के लिए हैं, इसलिए कोई समूह (पैनल) इसे ध्यान में रख कर गरीबी का पैमाना तय करता है। इसमें उनकी मानसिकता यह रहती है कि एक सीमा से ज्यादा संख्या न हो। तो सबसे पहले योजनाओं के लिए गरीबी रेखा के निर्धारण की सोच को बदलने की आवश्यकता है। हम पहले गरीब का निर्धारण करें, यह न सोचें कि उनके लिए क्या योजनाएं हैं और उन पर सरकारों को कितना खर्च करना पड़ेगा। वैसे भी कोई जरूरी नहीं कि जिसे हम गरीब मानें उसे ऐसी सभी योजनाओं का लाभ देना अपरिहार्य ही हो। गरीबों के कल्याण की योजनाएं आवश्यकता के अनुसार बनें तथा उनमें भी वर्गीकरण किया जाए कि किसे कौन-सी योजना की आवश्यकता है और किसे नहीं।

उदाहरण के लिए, एक किसान परिवार है जो इतना अनाज पैदा कर लेता है कि उसके परिवार का पेट भर जाए। लेकिन उसके पास नकदी आय बिल्कुल नहीं है। वह अपने बच्चों को न उचित शिक्षा दे सकता है न स्वास्थ्य सुविधाएं ही। उसे हम गरीब मानेंगे कि नहीं? वाकई व्यवहार में वह परिवार गरीब ही है। भले वर्तमान परिभाषा में उसे गरीबी रेखा के ऊपर माना गया हो। उसे गरीब मान लें तो भी हम उस परिवार को गरीबी रेखा के नीचे मिलने वाली खाद्यान्न की सुविधाएं देकर क्या लक्ष्य हासिल कर पाएंगे? यह तो अंधेर नगरी चौपट राजा वाली व्यवस्था हो गई। कहने का तात्पर्य यह कि कौन गरीब है इसका निर्धारण करने के लिए सोच में आमूल बदलाव की जरूरत है। यह जो गरीबी रेखा है, समस्या इसी में है। वास्तव में केंद्रीकृत गरीबी रेखा का निर्धारण अपने आप में समस्या है। हालांकि यह अंतरराष्ट्रीय शब्दावली है, लेकिन यह दोषपूर्ण है। ऐसा कैसे संभव है कि जो प्रतिदिन 47 रुपया खर्च कर सकता है वह तो गरीबी रेखा के नीचे नहीं है, लेकिन जो 46 रुपया 99 पैसा खर्च कर सकता है वह गरीबी रेखा के नीचे है। ऐसा मानक हास्यास्पद है। इसका परित्याग करना होगा। मोटा-मोटी तौर पर यदि मानक बनाएं तो कहना होगा कि जिस परिवार में पोषणयुक्त भोजन का अभाव हो, जिसके पास इतना धन नहीं कि आम वस्त्र परिवार के सदस्यों को उपलब्ध करा सके, समुचित शिक्षा दे सके, बीमार पड़ने पर उचित स्वास्थ्य सुविधाएं दे सकेज। ऐसे परिवारों को हमें गरीबी की श्रेणी में रखना पड़ेगा। लेकिन इसके लिए गरीबी रेखा के नीचे जीने वालों की खातिर जो कल्याणकारी योजनाएं हैं उनको भी बदलना होगा।

योजनाएं इस ढंग की हों कि जिसे जिस चीज की सबसे ज्यादा आवश्यकता है उसमें मदद मिल सके। भारत में गरीबों का निर्धारण करते समय यह भी ध्यान रखना होगा कि तमाम बदलावों के बावजूद अब भी परिवार प्रथा बहुत हद तक जीवित है, जबकि गरीबी रेखा का निर्धारण व्यक्ति को इकाई मान कर किया जाता है। हमें परिवार को इकाई मानने की ओर बढ़ना होगा। यही भारतीय संदर्भ में यथेष्ट होगा। ऐसे परिवार हैं जहां कोई एक नया पैसा अर्जित न करता हो, लेकिन उसके परिवार में दूसरे अर्जन करने वाले हैं तो वह गरीब नहीं कहला सकता। हमारे यहां घर के बड़े-बुजुर्ग की जिम्मेवारी का भार परिवार पर रहा है। हालांकि इसमें गिरावट आई है और इसे भी हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। पर इसके आंकड़ों की तैयारी स्थानीय स्तरों पर ही हो सकती है। जो परिवार से परित्यक्त हैं, या जो बिना परिवार के हैं उनकी श्रेणी बनाई जा सकती है और उनकी आवश्यकता के अनुरूप योजनाओं के लाभ की संस्तुति हो सकती है। सवाल है कि क्या सरकार इस दिशा में विचार कर रही है? अगर नहीं कर रही है तो उसे करना चाहिए। गरीबी को खत्म करने का यही सही रास्ता होगा। अगर हम मनुष्य को संसाधन मानते हैं तो कोई व्यक्ति ऐसा नहीं हो सकता जिसे हम पूरी तरह गरीब कह सकें। मसलन, कोई पूरी तरह स्वस्थ व हट्टा-कट्टा है तो कम से कम शरीर से गरीब नहीं है। वह मेहनत कर सकता है। उसे मेहनत का फल मिलना चाहिए। किसी ने कठिनाइयों के बावजूद पढ़ाई की है तो उसकी गरीबी केवल काम के अवसर न मिलने तक सीमित है। कोई अच्छा मिस्त्री है तो यह उसका हुनर है और इस दृष्टि से वह गरीब नहीं है

सम्पादकीय

शौर्य और संसाधन! उम्मीद है सरकार सेना के अधिकारियों के बयान गंभीरता से लेगी

दुनिया भर में दिनोंदिन सामरिक चुनौतियां बढ़ रही हैं। हथियारों को अधिक मारक, कारगर और रणनीतिक रूप से सक्षम बनाने की होड़ तेज हो रही है। इसलिए हथियारों का बाजार लगातार विस्तृत हो रहा है। बहुत सारे देश प्रतिरक्षा व्यय में बढ़ोतरी करते देखे जाते हैं। अब आमने-सामने के युद्ध का दौर लगभग समाप्त हो गया है। हवाई और लक्षित हमले से दुश्मन को पराजित करने की कोशिश की जाती है। फिर, अब कोई भी युद्ध केवल दो देशों का मामला नहीं रह गया है। इसमें बहुध्रुवीय रणनीति अपनाई जाने लगी है। ऐसे में भारत युद्ध की स्थितियों से निपट पाने में कितना सक्षम है, इसका आकलन स्वाभाविक है। पिछले दिनों पहलगाम हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों पर लक्षित हमले किए, तो उसके नतीजों को केवल दुश्मन देश के मुकाबले अपने शौर्य प्रदर्शन तक सीमित करके नहीं देखा जा रहा। उसमें देश की सेना ने अपनी तैयारियों, कमियों और तकनीकी क्षमता का भी आकलन करना शुरू कर दिया है। इस संदर्भ में प्रमुख रक्षा अध्यक्ष ने कहा कि युद्ध का मैदान अब कृत्रिम मेधा, मशीन लर्निंग, एलएलएम और क्वांटम तकनीक से संचालित हो रहा है। हमें अपनी नीति, संगठनात्मक संस्कृति और मानव संसाधन को नए सांचे में ढालना होगा। हालांकि पिछले नौ-दस वर्षों में भारत ने अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली को अत्याधुनिक बनाने पर विशेष ध्यान दिया है। वायुसेना को अत्याधुनिक बमवर्षक विमानों, उन्नत संचार प्रणाली युक्त, ध्वनि से कई गुना तेज गति की मिसाइलों आदि से सुसज्जित किया गया है। रक्षा अनुसंधान पर विशेष बल दिया गया है। स्वदेशी तकनीक से विश्वस्तरीय बमवर्षक विमान और पनडुब्बियां तैयार की जा रही हैं। इसके बावजूद भारतीय सेना दुनिया के अत्याधुनिक हथियारों के सामने खुद को पूरी तरह सक्षम नहीं महसूस कर पाती। कुछ दिनों पहले वायुसेना प्रमुख ने कहा था कि सेना से संबंधित परियोजनाएं समय पर पूरा नहीं हो पाती हैं। हालांकि सरकार का दावा है कि भारत जल्दी ही दुनिया के प्रमुख आयुध सामग्री आपूर्तिकर्ता देशों की कतार में शामिल होगा। अब बहुत सारे उपकरण और साजो-सामान स्वदेशी तकनीक से देश के भीतर ही तैयार कर लिए जाते हैं। हथियार के मामले में दूसरे देशों पर निर्भरता लगातार कम हो रही है। मगर, जब वायुसेना प्रमुख और रक्षा अध्यक्ष संगठनात्मक ढांचे और रक्षा उपकरणों के मामले में बदलाव की बात कर रहे हैं, तो निस्संदेह इस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। भारत बेशक कभी युद्ध के पक्ष में नहीं रहता, हमेशा शांति और सौहार्द की नीति का हिमायती रहा है, मगर पाकिस्तान और चीन की तरफ से उसे लगातार जिस तरह की चुनौतियां मिलती रहती हैं, उसमें वह अपने पारंपरिक हथियारों के जखीरे पर भरोसा करके नहीं चल सकता। पाकिस्तान के साथ संघर्ष में चीन के पाकिस्तान के पीठ पीछे खड़ा हो जाने से कड़ी चुनौती महसूस की गई। इससे भारतीय सेना के लिए नए ढंग से रणनीतिक तैयारी की जरूरत रेखांकित हुई। निस्संदेह भारतीय सेना ने जिस तरह पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों का लक्ष्य भेदन किया, उससे पूरी दुनिया ने माना कि भारत अत्याधुनिक सामरिक तकनीक का उपयोग करने में सक्षम है। फिर भी बड़ी चुनौती चीन के साथ है, जो उन्नत हथियारों के मामले में अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, रूस आदि बड़े हथियार उत्पादक देशों से लगातार प्रतिस्पर्धा करता रहा है। उम्मीद की जा सकती है कि सरकार सेनाधिकारियों के बयानों को गंभीरता से लेगी।

ऋतिक रोशन ने अपकमिंग प्रोजेक्ट के लिए होम्बले फिल्म्स से मिलाया हाथ

अभिनेता ऋतिक रोशन एक बार फिर से धमाल मचाने को तैयार हैं। उन्होंने अपकमिंग प्रोजेक्ट के लिए प्रोडक्शन हाउस होम्बले फिल्म्स के साथ हाथ मिलाया है। होम्बले फिल्म्स के साथ ऋतिक पहली बार काम करने जा रहे हैं। प्रोजेक्ट की डिटेल को अभी निर्माताओं ने शेयर नहीं किया है। यह स्पष्ट नहीं है कि ऋतिक इस प्रोजेक्ट में किस तौर पर शामिल होने जा रहे हैं। हालांकि अभिनेता ऋतिक रोशन होम्बले फिल्म्स के साथ काम करने को लेकर उत्साहित जरूर हैं। होम्बले फिल्म्स के साथ काम करने को लेकर ऋतिक ने बताया, होम्बले ने पिछले कुछ सालों में इंडस्ट्री को एक से बढ़कर एक बेहतरीन कहानी दी है। मैं उनके साथ साझेदारी करने और अपने दर्शकों को शानदार सिनेमाई अनुभव देने के लिए उत्सुक हूं। हम बड़े सपने देख रहे हैं और इस सपने को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस बारे में होम्बले फिल्म्स के संस्थापक विजय किरागंदूर ने बताया, इस सहयोग से मैं बहुत खुश हूं। होम्बले फिल्म्स का उद्देश्य दर्शकों को ऐसी कहानियां सुनाना है, जो प्रेरित करती हैं और सोच की सीमाओं से परे हैं। ऋतिक रोशन के साथ काम करना इस सपने को आकार देता है, जो हमने मिलकर देखा है। हम दर्शकों को खास और बेहतरीन अनुभव देने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो दमदार और टाइमलेस दोनों हो। होम्बले फिल्म्स एक ऐसा प्रोडक्शन हाउस है जो भारत में सबसे बड़े कंटेंट क्रिएटर्स में से एक के रूप में उभरा है, जिसने पिछले कुछ वर्षों में केजीएफ चैप्टर 1' और 'चैप्टर 2', सलार- पार्ट 1 - सीजफायर और 'कांतारा' जैसी ब्लॉकबस्टर पैन-इंडिया फिल्में दी हैं। ऋतिक रोशन के वर्कफ्रंट की बात करें तो उनके पास 'वॉर 2' और 'कृष 4' भी है, जिसका प्रशंसकों को बेसब्री से इंतजार है। वॉर 2 में ऋतिक के साथ कियारा आडवाणी, जूनियर एनटीआर भी नजर आएंगे। फिल्म 14 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

फिल्म 'लग जा गले' में जान्हवी कपूर के अपोजिट नजर आएंगे टाइगर श्रॉफ

जान्हवी कपूर ने अपने करियर की शुरुआत एक रोमांटिक ड्रामा फिल्म 'धड़क' से की थी। इस फिल्म के प्रोड्यूसर करण जौहर थे। हाल ही में वह करण जौहर की फिल्म 'होमबाउंड' को लेकर भी चर्चा में रही हैं, इस फिल्म के प्रोड्यूसर भी करण जौहर हैं। जान्हवी अगले साल रिलीज होने वाली फिल्म 'लग जा गले' में नजर आएंगी, इसे भी करण जौहर ही प्रोड्यूस कर रहे हैं। इस फिल्म में जान्हवी का हीरो कौन होगा? इसकी जानकारी भी मिली है। एक्टर टाइगर श्रॉफ फिल्म 'लग जा गले' में जान्हवी कपूर के अपोजिट नजर आएंगे। यह दोनों पहली बार किसी फिल्म में साथ एक्टिंग कर रहे हैं। फिल्म को राज मेहता निर्देशित करेंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार यह एक बदला लेने वाली लव स्टोरी होगी। इस फिल्म में एक्शन भी खूब होगा।

कब शुरू होगी फिल्म की शूटिंग

इन दिनों टाइगर श्रॉफ फिल्म 'बागी 4' में व्यस्त हैं और जान्हवी कपूर 'सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी' में व्यस्त हैं। दोनों जब इन फिल्मों से फ्री हो जाएंगे तो ही फिल्म 'लग जा लगे' की शूटिंग शुरू करेंगे। सूत्रों के अनुसार इस फिल्म की शूटिंग इस साल के आखिर में शुरू होने की उम्मीद है।

टाइटल को कैसे चुना गया

जान्हवी कपूर की फिल्म 'लग जा गले' का टाइटल लंबे डिस्कशन के बाद तय किया गया। आखिर में 'लग जा गले' टाइटल फाइनल हुआ क्योंकि यह फिल्म की कहानी पर फिट बैठता है। यह फिल्म अगले साल यानी 2026 में रिलीज हो सकती है।

इन फिल्मों में भी जान्हवी आएंगी नजर

जान्हवी कपूर की अगली फिल्म 'परम सुंदरी' है। इस फिल्म में वह सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ नजर आएंगी। 'सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी' नाम की फिल्म भी जान्हवी कर रही हैं। इसके अलावा अगले साल रिलीज होने वाली एक साउथ फिल्म 'पेद्दी' में भी जाह्नवी अभिनय करती नजर आएंगी। इस फिल्म में वह राम चरण के साथ नजर आएंगी।

हॉरर फिल्मों में काजोल का डेब्यू मां का ट्रेलर रिलीज

अभिनेत्री काजोल की अगली फिल्म मां का ट्रेलर रिलीज हो गया है। मुंबई में हुए एक इवेंट में इसे रिलीज किया गया। ट्रेलर में काजोल अपनी बेटी की राक्षसों से रक्षा करती हुई नजर आ रही है। काजोल फिल्म मां से हॉरर फिल्म में डेब्यू कर रही हैं। ट्रेलर की शुरुआत काजोल से होती है। वह गाड़ी चला रही हैं और पीछे उनकी बेटी बैठी है। वह कह रही है कि मां पेट में काफी दर्द हो रहा है। इस पर काजोल कहती हैं कि आगे होटल दिखेगा तो रुक जाएंगे। इसके बाद अचानक काजोल की गाड़ी पर कोई कूदता है। दोनों डर जाते हैं। इसके बाद काजोल एक घर में पहुंचती हैं। काजोल अपनी बेटी से कहती हैं कि यह नई जगह है। इसलिए यहां से कहीं नहीं जाना। फिर काजोल की बेटी और एक लड़की एक पुरानी हवेली में जाती है। यहां अचानक काजोल की बेटी को एक राक्षस खींच ले जाता है। अब काजोल की बेटी मुसीबत में पड़ जाती है। इसके बाद काजोल अपनी बेटी को

फिल्म में कौन-कौन हैं?

मां फिल्म में काजोल लीड रोल में हैं। काजोल इस फिल्म से तीन साल बाद बड़े पर्दे पर लौट रही हैं। काजोल के अलावा फिल्म में रोनित रॉय, इंद्रनील सेनगुप्ता, जितिन गुलाटी, गोपाल सिंह और सूर्य शिखा दास होंगी। हाल ही में काजोल ने बताया कि फिल्म में उनका किरदार सबसे जबरदस्त होगा। फिल्म का ट्रेलर रिलीज होने से पहले काजोल ने 28 जून को लिखा था जब एक मां टूट जाती है तो एक देवी का जन्म होता है। मां का ट्रेलर कल रिलीज होगा।

फिल्म के बारे में

काजोल की यह फिल्म हॉरर, सुपरनेचुरल ड्रामा है। फिल्म विशाल फुरिया के निर्देशन में बनी है। फिल्म को अजय देवगन फिल्म्स ने प्रोड्यूज किया है। मां फिल्म 27 जून 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। हिंदी के अलावा यह फिल्म तमिल, तेलुगू और बांग्ला भाषा में भी रिलीज होगी।

शैतान से जोड़ा जा रहा फिल्म का कनेक्शन

मां फिल्म का कनेक्शन शैतान से जोड़ा जा रहा है। शैतान फिल्म में आर माधवन ने निगेटिव रोल निभाया था। इस फिल्म में भी आर माधवन निगेटिव रोल में हैं। हालांकि, इसकी अभी तक कोई अधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। फिल्म के प्रोड्यूसर अजय देवगन ने भी कहा है कि इस फिल्म को शैतान से न जोड़ा जाए।

टाइगर जिंदा है और पद्मावत से नाम कमाने वाली अनुप्रिया गोयनका ने इन सीरीज में निभाया दमदार रोल

हिंदी और तमिल सिनेमा में अपनी अदाकारी का जलवा दिखाने वाली अभिनेत्री अनुप्रिया गोयनका अपना जन्मदिन मना रही हैं। अनुप्रिया गोयनका ने बॉबी जासूस से 2014 में बॉलीवुड में कदम रखा। इसके बाद उन्होंने 'पद्मावत', 'टाइगर जिंदा है' जैसी फिल्में कीं। फिल्मों के अलावा अनुप्रिया गोयनका ने सीरीज में अच्छा काम किया है। वह अनुराग बसु द्वारा निर्देशित टीवी सीरीज स्टोरीज बाई रबींद्रनाथ टैगोर (2015) में नजर आईं। विक्रमादित्य मोटवानी के निर्देशन में बनी सेक्रेड गेम्स (2018) में अनुप्रिया गोयनका ने मेघा सिंह का किरदार अदा किया। इसमें उनकी एक्टिंग की काफी तारीफ हुई। द फाइनल कॉल (2019) टीवी सीरीज एक उपन्यास पर आधारित थी। विजय लालवानी के निर्देशन में बनी इस सीरीज में गोयनका ने परिनीता परी का किरदार निभाया। क्रिमिनल जस्टिस (2019) टीवी सीरीज को भी खूब पसंद किया गया। इसमें अनुप्रिया गोयनका के किरदार निखत हुसैन को खूब सराहा गया। साइकोलॉजिकल क्राइम थ्रिलर असुर (2020) में अनुप्रिया गोयनका के काम की काफी तारीफ हुई। इसका निर्देशन ओनी सेन ने किया था। आश्रम (2020) सीरीज को लोगों ने खूब सराहा। इसमें बॉबी देओल लीड रोल में थे। 2023 में आई टीवी सीरीज सुल्तान ऑफ देल्ही में अनुप्रिया ने शंकर देवी का किरदार निभाया। इसके अलावा अनुप्रिया गोयनका ने खोज, असुर 2, क्राइम नेक्स्ट डोर और अभय जैसी टीवी सीरीज में अच्छा काम किया है।

सूरज पंचोली ने जेल में बिताए बुरे दिनों को किया याद

साल 2013 में बॉलीवुड की दिवंगत एक्ट्रेस जिया खान के आत्महत्या मामले में अभिनेता सूरज पंचोली को गिरफ्तार किया गया था और उन्हें जेल भी जाना पड़ा था। अब अभिनेता ने अपने जेल में बिताए गए संघर्ष के दिनों को याद किया है और उन्हें कैसे ट्रीट किया जाता था, इसके बारे में भी खुलासा किया है। अभिनेता सूजर पंचोली ने हिंदी रश के साथ बातचीत में अपने जेल के खराब अनुभवों को साझा किया है। उन्होंने कहा, मैं उस समय सिर्फ 21 साल का लड़का था। मुझे आर्थर रोड जेल भेज दिया गया और एकांत कारावास में डाल दिया गया। मैं उसी सेल में था, जिसमें 26/11 हमले के आतंकी अजमल कसाब को रखा गया था। उन्होंने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जैसे मैंने कोई बम विस्फोट किया हो।' आगे बातचीत में अभिनेता ने कहा, वहां मेरे पास तकिया भी नहीं था, मैं अखबारों पर सोता था। उन्होंने मेरे साथ बहुत बुरा व्यवहार किया, जैसे मैंने कोई भयानक अपराध किया हो। मैं अतिशयोक्ति नहीं कर रहा हूं। चार या पॉंच साल बाद मुझे समझ में आया कि मैं वास्तव में किस दौर से गुजरा था। ये सारी चीजें, जब घट रही थी, तो यह सब एक सपने जैसा लग रहा था।' साथ ही आपको बताते चलें कि सूरज पंचोली को इस केस में साल 2023 में सीबीआई ने क्लीन चिट दे दी थी।

मैं चाहता हूं कि दिमाग पर सक्सेस चढ़े और मैं उसे नियंत्रित करूं

अपने हर किरदार में अलग रंग भरने वाले नैशनल अवॉर्ड विनर एक्टर पंकज त्रिपाठी इन दिनों अपनी मशहूर सीरीज क्रिमिनल जस्टिस के चौथे सीजन को लेकर चर्चा में हैं। फुकरे, मिमी, ओएमजी 2, मिर्जापुर, स्त्री जैसी तमाम फिल्मों और शोज में यादगार भूमिकाएं निभा चुके पंकज त्रिपाठी से खास बातचीत

थोड़ा तो गुरूर चढ़े तो मैं खुद को संभालूं

अपनी चिरपरिचित मुस्कान के साथ पंकज कहते हैं, मैं तो चाहता हूं कि कुछ बदलाव आए, लेकिन नहीं आ पा रहा है। पता नहीं क्या प्रॉब्लम है। कुछ तो होना चाहिए यार कि लगे कि मैं सफल हूं। ये मेरे दिमाग में तो होना चाहिए। मेरे दिमाग में भी नहीं आता है। मैं तो चाहता हूं कि दिमाग पर सक्सेस चढ़े और मैं अपने विचार और बुद्धि से उसे नियंत्रित करूं कि विनम्र रहना है, ये सक्सेस का गुरूर है, पर वही नहीं आ रहा है और यही प्रॉब्लम है कि क्यों नहीं आ रहा है? थोड़ा तो आना चाहिए ना, कोई केमिकल लोचा है।

बिजी रहना पसंद नहीं करते पंकज

यही नहीं, पिछले कुछ समय में धड़ाधड़ कई फिल्में और सीरीज करने वाले पंकज त्रिपाठी इतनी व्यस्तता भी पसंद नहीं करते। उनका कहना है, हम ऐक्टिंग के लिए नहीं जी रहे हैं। हमें जीवन जीना है और वो जीवन ठीकठाक चले, उसके लिए ऐक्टिंग करते हैं। वह पैशन है, जिससे थोड़ी आदमनी हो जाए और परिवार की बेसिक जरूरतें पूरी हो जाएं। हम कई बार यह बात नहीं समझ नहीं पाते हैं और काम के पीछे बहुत ज्यादा भागने लगते हैं। जैसे, मैं खुद अपना संतुलन खो चुका था। अब मैं उसको ठीक करने में लगा हुआ हूं।

गुंडा, दरबान, दूधवाला जैसे रोल ही मिलते थे

पंकज त्रिपाठी आज अभिनय की पाठशाला माने जाते हैं, मगर करियर के शुरुआत में उन्हें उनके साधारण बैकग्राउंड की वजह से जज किया जाता था। उन्होंने बताया, पहले कास्टिंग को लेकर मुझे जज किया जाता था। शुरू में कोई मुझे ढंग के रोल में सोचता ही नहीं था। चूंकि, हम बिहार से थे, तो कास्टिंग के समय पानवाला, दूधवाला, दरबान, गुंडा, ऐसे ही रोल के लिए बुलाया जाता था। यह तो किस्मत अच्छी थी कि मैंने एक दिन दाढ़ी कटाई और कास्टिंग वालों को मेरा दूसरा चेहरा दिखा। फिर मसान के बाद उनकी सोच काफी बदली, वरना गैंग्स ऑफ वासेपुर के बाद मुझे सिर्फ खूंखार क्रिमिनल चाकू लिए आदमी का रोल ही मिल रहा था।

इन दिनों बॉलिवुड में टॉक्सिक माहौल पर आ रहे बयानों पर पंकज क्या सोचते हैं?

उनके करीबी फिल्मकार अनुराग कश्यप तक इसके चलते बॉलिवुड छोड़ने की बात कह चुके हैं? इस सवाल पर उन्होंने कहा, अनुराग कहीं नहीं गए हैं। उनकी दो तीन फिल्में बनी हुई हैं। वो कहानी लिख रहे हैं, बना रहे हैं। कहीं किसी मनःस्थिति में वे बोल दिए होंगे या कई बार बिन बोले भी खबरें आ जाती हैं।

बॉलिवुड वो नरक, जो मैंने नहीं देखा

वो आगे कहते हैं, देखिए, स्टोरी टेलिंग अच्छी नहीं हो रही है, जड़ों से जुड़ी कहानियां नहीं आ रही हैं, इससे मैं भी सहमत हूं, पर अभी मैं कई पॉडकास्ट या रील में देखता हूं कि लोग सिनेमा इंडस्ट्री के बारे में ऐसी-ऐसी बात कहते हैं कि लगता है कि इससे ज्यादा नरक वाली तो कोई जगह ही नहीं होगी। फिर मुझे लगता है कि यार, ये सब अनुभव मुझे क्यों नहीं हुआ? मेरा कास्टिंग को लेकर जो अनुभव था, वो मैंने बताया। बाकी, मेरे हिसाब से इंडस्ट्री की आलोचना इस बात के लिए होनी चाहिए कि यहां पर लेबर लॉ होना चाहिए कि 12 घंटे की शिफ्ट क्यों? हर जगह 8 घंटे की शिफ्ट होती है। वर्क कल्चर ठीक करना चाहिए। अभी जब से डिजिटल आया है, लोग रीटेक पर रीटेक लेते रहते हैं। एडिटिंग क्लियर नहीं है तो 360 शूट कर लो और सजा यूनिट भुगतती है कि 12 के 16 घंटे हो गए। मगर इंसानी शरीर और दिमाग 18 घंटे कैसे काम करेगा।

माधव की तरह की है सर्वाइवल की लड़ाई

क्रिमिनल जस्टिस के वकील माधव मिश्रा को पंकज पिछले 6 सालों में चार बार पर्दे पर जी चुके हैं। वह मानते हैं कि यह किरदार उनका हमसाया बन चुका है। बकौल पंकज त्रिपाठी, जब श्रीधर राघवन ने ये किरदार सुनाया था, तो लगा था कि हम बहुत एक जैसे हैं। वह भी बिहार से आए हैं एलएलबी करके, मुंबई में नोटरी-वोटरी देखते हैं। सर्वाइवल की लड़ाई है। वन रूम किचन में रहते थे। मैं ऐक्टिंग का माधव मिश्रा हूं। मैं भी बिहार से ऐक्टिंग में आया। वैसे ही सर्वाइवल की लड़ाई थी, वन रूम किचन में जी रहा था। उनकी तरह हम भी ऑटो में घूमते हैं। बस ये जुगाड़ू आदमी थे। मैं जुगाड़ू नहीं हूं। मुझे सिर्फ मेहनत पर भरोसा है। मुझे लगा कि चलो, मैं इनसे जुगाड़ू बनना सीखूंगा, तो मैंने इनसे जुगाड़ के गुर सीखे हैं। हालांकि अभी भी हुआ नहीं हूं, पर यह सही है कि हम दोनों साथ-साथ आगे बढ़ रहे हैं।

टीम रघुकुल जोन 1 के माल्यार्पण समारोह में उमड़ा समाज बंधुओ का सैलाब

जयपुर टाइम्स

नरैना(निसं)। जयपुर माहेश्वरी समाज के त्रैवार्षिक चुनाव सत्र 25-28 के टीम रघुकुल के जोन 1 के प्रत्याशियों के माल्यार्पण समारोह में समाज बंधुओ का सैलाब उमड़ पड़ा। टीम रघुकुल के माल्यार्पण समारोह का आयोजन सी स्कीम स्थित एक निजी गार्डन में आयोजित किया गया। गार्डन के मुख्य द्वार पर टीम रघुकुल के प्रत्याशी आगंतुक समाज बंधुओ का विन्रम व स्नेह भाव से "सबका साथ समाज का विकास" लिखा हुआ केसरिया दुपट्टा ओढ़ाकर कर स्वागत कर रहे थे। कार्यक्रम में उपस्थित समाज बंधुओ को टीम रघुकुल के अध्यक्ष प्रत्याशी उमेश सोनी, महिला परिषद् अध्यक्ष प्रत्याशी स्नेहलता साबू, नवयुवक मंडल अध्यक्ष प्रत्याशी अखिल भाला ने संबोधित कर अपने विजन पर प्रकाश डाला। इस दौरान गौरव मंत्री सहित लगभग दो दर्जन से अधिक प्रत्याशियों का मंच पर माल्यार्पण कर अभिनंदन किया गया। समाज बंधुओ के सैलाब की वजह से गार्डन खचाखच भरा नजर आया। कार्यक्रम में सैकड़ों समाज बंधुओ की उपस्थिति देखकर अध्यक्ष पद प्रत्याशी उमेश सोनी गदगद नजर आयें।

वन विभाग के अधिकारियों पर वैध खदान मालिकों को परेशान कर अवैध वसूली का आरोप

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां(निसं.)। परमाल सेंड स्टोन विकास समिति ने मुख्यमंत्री के नाम उपखण्ड अधिकारी को ज्ञापन सौंप कर वन विभाग के अधिकारियों पर वैध पत्थर खदान मालिकों को नाजायज परेशान करने व अवैध वसूली का आरोप लगाया।ज्ञापन में बताया कि माण्डलगढ वन विभाग के रेंजर मनीन्द्र सिंह पाल,वनकर्मी प्रकाश शर्मा और स्टाफ द्वारा आए दिन वैध खदानों पर बिना वजह चैकिंग करके व पानी को प्रदूषित बताकर पम्प जब्त कर के परेशान किया जा रहा हैं और पैसों की मांग की जा रही हैं। जिससे वैध खनन व्यवसायी वर्ग परेशान हैं। महुपुरा, बृजपुरा, सदाराम जी का खेड़ा, नयानगर, गोविन्दपुरा में इन वैध खानों में वन विभाग द्वारा बेवजह परेशान करने की कार्यवाही की जा रही हैं। 30 मई को वन विभाग के अधिकारी महुपुरा में अचानक सरकारी गाडी लेकर पहुँचे और सारे कागजात दिखाने के बाद भी फंसाने की धमकी देकर पैसों की मांग की।दूसरा मामला बृजपुरा खान क्षेत्र में वैध खदान पर जाकर काम बन्द करा दिया और झुठे मुकदमें की धमकी देकर पैसे मांगे। वन विभाग की अवैध चौथ वसूली से सभी वैध पत्थर खदान मालिक परेशान हैं। खनन कार्य सुचारू रूप से नही चलने के कारण आर्थिक नुकसान भी हो रहा हैं। ज्ञापन की प्रतिलिपि जिला कलक्टर भीलवाड़ा, प्रधान मुख्य वन संरक्षक जयपुर, विधायक गोपाल खंडेलवाल माण्डलगढ़ को भी प्रेषित की गई।

बरसाती पानी की निकासी के लिए रोड का लेवल कम रखने की मांग

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां(निसं.)। मंदाकिनी महादेव मार्ग पर बनने वाले सीसी रोड का लेवल बड़ी मस्जिद के पास स्थित फूटाकोट से निकल रहे रास्ते के अनुरूप रखे जाने की मांग को लेकर रावणा राजपूत समाज अध्यक्ष संजय सिंह चौहान ने सार्वजनिक निर्माण विभाग के कनिष्ठ अभियंता नरेंद्र धाकड़ को ज्ञापन सौंपा।चौहान ने बताया कि मंदाकिनी महादेव मार्ग पर मुख्य सड़क के नीचे से गुजर रहे नाले में वार्ड 12,13,14 व 15 की नालियों का पानी निकलता हैं।सीसी सड़क का निर्माण करते समय इसका लेवल अंदर के रास्ते के अनुरूप हो ताकि मोहल्ले में बरसाती पानी के जल भराव की समस्या नहीं रहे।इस पर जेईएन धाकड़ ने हाथोंहाथ मौका निरीक्षण किया और सड़क के नीचे से गुजर रहे नाले में 2 फ़ीट चौड़ाई का पाइप डालने व फूटा कोट के सामने निर्माणाधीन रोड का लेवल कम रखे जाने का आश्वासन दिया।ताकि मोहल्ले वासियों को बारिश के दिनों में जल भराव की समस्या का सामना नहीं करना पड़े।

स्वयंसेवक भूतपूर्व सैनिकों को सिविल डिफेंस पोर्टल पर करवाना होगा पंजीकरण

बीकानेर महानिदेशक अग्निशमन सेवा, नागरिक रक्षा और गृह रक्षक एमएचए नई दिल्ली के द्वारा ऑनलाइन पोर्टल www.civildefencewarriors.gov.in और मोबाइल एप "CD warriors तैयार किया गया है, जिस पर इच्छुक स्वयंसेवी भूतपूर्व सैनिक अपना पंजीकरण करवा सकते हैं। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी कर्नल यश राठौड़ (से0नि0) ने बताया कि पंजीकरण के उपरान्त सम्बंधित विभाग द्वारा आवश्यकतानुसार भूतपूर्व सैनिकों को स्वयं सेवक के तौर पर नियुक्त किया जाएगा।

बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय का तृतीय दीक्षांत समारोह आयोजित

अच्छी शिक्षा पद्धति ही किसी देश को बलवान और चरित्रवान बनाती है : राज्यपाल बागडे

राजस्थान तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल- देवनानी

तकनीकी विकास के बिना किसी देश का विकास संभव नहीं- मेघवाल

चुनौतियों से निबटकर सशक्त भारत बनाना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी- उप मुख्यमंत्री डॉ. बैरवा

जयपुर टाइम्स

जयपुर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि अच्छी शिक्षा पद्धति ही किसी देश को बलवान और चरित्रवान बनाती है। जिस देश की शिक्षा पद्धति बिगड़ती है, वह देश चारित्रिक रूप से कमजोर हो जाता है। बागडे ने सोमवार को बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करते हुए यह उद्गार व्यक्त किए। राज्यपाल ने कहा कि हमारा देश तकनीक के क्षेत्र में आरम्भ से ही अत्यंत समृद्ध रहा है। रणकपुर मंदिर के कला कौशल्य को मूर्त रूप देने कलाकार अपनी कला में निपुण थे। दक्षिण का गोरखपुर मंदिर और अजंता एलोरा की गुफाएं भी हमारी तकनीकी समृद्धता को दर्शाती हैं। राज्यपाल ने कहा कि अच्छे तकनीकी विशेषज्ञ तैयार करना इंजीनियरिंग कॉलेजों और तकनीकी विश्वविद्यालयों का कार्य है। बीकानेर का तकनीकी विश्वविद्यालय इसे समझते हुए देश को अच्छे तकनीकी विशेषज्ञ उपलब्ध करवाए। बागडे ने नशे की बढ़ती प्रवृति पर चिंता जताई और कहा कि युवा इसके सबसे अधिक शिकार हो रहे हैं। इससे युवाओं की शारीरिक और मानसिक शक्ति प्रभावित हो रही है। उन्होंने शिक्षा को किसी भी देश की प्रगति का मूल बताया और कहा कि एक हजार वर्षों में विदेशी आक्रांताओं ने देश की शिक्षा पद्धति को प्रभावित करने का प्रयास किया। राज्यपाल ने कहा कि एक दौर में विश्व में छह विश्वविद्यालय थे। इनमें से दो विश्वविद्यालय तक्षशिला और विक्रमशिला भारत में थे। यहां विदेशों से विद्यार्थी पढ़ने आते। धीरे-धीरे यह कमजोर होने लगे। आज इन्हें पुन: मजबूत करने की जरूरत है। राज्यपाल ने कहा कि तकनीकी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी देश के प्रति सकारात्मक भाव रखते हुए आगे बढ़ें और चरित्रवान बनें। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि प्रदेश में तकनीकी शिक्षा का सतत विकास हुआ है। आज राजस्थान देश भर में तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी राज्यों में शामिल है। उन्होंने कहा कि दीक्षांत कार्यक्रम सिर्फ डिग्री प्राप्त करने का कार्यक्रम नहीं है, यह हमें हमारे दायित्वों का बोध करवाने वाला कार्यक्रम है। इंजीनियर डिग्री हासिल कर लाखों रुपए के पैकेज को अपना ध्येय नहीं बनाएं बल्कि समाज और देश के प्रति अपना दायित्व निभाएं। उन्होंने कहा कि एक अभियंता देश के बड़े गरीब तबके का जीवन स्तर कैसे ऊपर उठा सकता है? इसके लिए अपने तकनीकी ज्ञान का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत के डिफेंस सिस्टम ने शत्रु देश के इरादों को नेस्तनाबूद कर दिया। यह हमारे तकनीकी ज्ञान का नायाब उदाहरण था। उन्होंने कहा कि आज के दौर में स्टार्ट अप और मेक इन इंडिया जैसी व्यवस्थाएं हमारे पास हैं, हमें इन्हें समझते हुए नौकरी मांगने वाला नहीं बल्कि नौकरी देने वाला बनना जरूरी है। विधानसभा अध्यक्ष ने चार आश्रम और चार पुरुषार्थों का वर्णन करते हुए कहा कि हमारा देश तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे शिक्षा केंद्रों और अश्वघोष और चाणक्य जैसी गुरु परंपरा वाला देश है। हमें इसे आगे बढ़ाने की जरूरत है। देवनानी ने कहा कि हमें दूषित शिक्षा से ऊपर उठकर भारतीयता के भाव को आगे बढ़ना जरूरी है। जिससे हम वर्ष 2047 तक भारत को विकसित भारत बना सके। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि स्टीम के आविष्कार से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की खोज तकनीक में आमूलचूल बदलाव आया है। भारत में भी इसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। उन्होंने कहा कि तकनीक के विकास के बिना किसी भी देश का विकास संभव नहीं है। किसी भी देश के निवासियों का चरित्र और नैतिक बल मजबूत होगा, तो उसे देश को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकेगा। मेघवाल ने कहा कि चरित्र का संबंध शिक्षा, संस्कार, ज्ञान, आचरण और व्यवहार से होता है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद की उक्तियों के माध्यम से इसे समझाया। उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने कहा कि तकनीकी शिक्षा व्यक्ति नहीं बल्कि समूचे समाज और देश की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। इसके मध्यनजर प्रदेश के इंजीनियरिंग कॉलेजों में अत्यधिक सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही हैं। आईआईटी की तर्ज पर आरआईटी स्थापित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी दक्षता के लिए डिग्री हासिल करें। डिग्री हासिल कर नवाचार करें और अधिक से अधिक युवाओं को इन नवाचारों का भागीदार बनाएं। उप मुख्यमंत्री ने युवाओं को रोजगार देने वाले बनने का आह्वान किया और कहा कि प्रदेश में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और जैसे भविष्य केंद्रित पाठ्यक्रमों की शुरुआत भी की गई है। उन्होंने कहा कि डिग्री प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों पर समाज को अपार उम्मीदें हैं। विश्वविद्यालय से निकले विद्यार्थी इन पर खरे उतरें। उन्होंने कहा कि आज का युग तकनीक का युग है। यहां अभूतपूर्व अवसर और चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों से निपटकर सशक्त भारत बनाना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने 27 मेधावी विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए। इस दौरान 4 हजार 80 विद्यार्थियों को डिग्री प्रदान की गई। बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. अखिल रंजन गर्ग ने स्वागत उद्बोधन दिया और विश्वविद्यालय का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

कर्रा बीमारी से जागरूक रह बचाव करे पशुपालक

विकसित कृषि संकल्प अभियान में दी भेड़ बकरी व प्राकतिक खेती की जानकारी

जयपुर टाइम्स

पोकरण, कृषि विज्ञान केंद्र पोकरण के वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष डॉ दशरथ प्रसाद ने बताया कि भारत सरकार के केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय व भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की तरफ से विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरूआत 29 मई से 12 जून तक की गयी। पाँचवे दिन कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ के जी व्यास, डॉ सुनील शर्मा, डॉ रामनिवास ने किया। तीनो टीमो ने किसान वैज्ञानिक संवाद सांकड़ा ब्लॉक में गांव दूधिया, सादा, रिखियों की ढाणी, सोनाराम की ढाणी, दूधिया द्धद्ध, जालोड़ा, पोकरना, फिटको की ढाणी में किया। पूर्व जिला अध्यक्ष बीजेपी जैसलमेर जुगल किशोर व्यास ने कहा कि यह अभियान निश्चित तौर पर किसानों के लिए लाभकारी होगा एवं वैज्ञानिकों के प्रयासों से नवाचारों का लैब से खेतों तक पर प्रचार प्रसार होगा। किसान उत्तम गुणवत्ता का नया विकसित बीज सरकारी संस्था से खरीदे व बिजाई से पहले बीजोपचार करके खेती की लागत कम सकते है। बकरी पालन हेतु सोजत, सिरोही, मारवाड़ी किस्म का चयन करें और भारत सरकार की राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत सबसिडी का लाभ लेकर इसे व्यवसाय के रूप में बदल सकते है। इस संवाद में स्मार्ट एग्रीकल्चर पर फोकस करने का सरकार की नवीनतम जानकारियां अपना कर उपज बड़ा सकते है प्राकृतिक खेती, नवाचार, मिट्टी जांच, फसल बीमा, पी एम किसान इत्यादि पर चर्चा की गई।पशु चिकित्सक डॉ राजेन्द्र चौधरी ने पशु में समसामयिक बीमारी, टीकाकरण, व टैगिंग के बारे में बताया। इस प्रोग्राम में काजरी के वैज्ञानिक डॉ दिलीप डांगी, डॉ शिरन के, कृषि विभाग के प्रेम नारायण, सौरभ सिडाना, भरत वर्मा, पशु प्रसार अधिकारी आशु सिंह भाटी एवं किसान जोगाराम, दीपाराम, प्रताप, भीमाराम इत्यादि सम्मिलित हुए।

नगरपालिका ने चरागाह में रुकवाया अवैध कब्जा

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां(निसं.)। कस्बे के विजयसिंह पथिक महाविद्यालय के सामने नगरपालिका के डंपिंग यार्ड के पास चरागाह भूमि पर चारदीवारी कर अवैध कब्जा करने के प्रयास की जानकारी सामने आई हैं।सामाजिक कार्यकर्ता यशवंत सिंह पुंगलिया ने बताया कि जब वो कॉलेज के सामने से गुजर रहे थे तो डंपिंग यार्ड के पास एक व्यक्ति पत्थरों से कच्ची चारदीवारी करता नजर आया।जब उससे पूछा गया कि ये चारदीवारी कौन करवा रहा हैं।तो उसने किसी समाज के नोहरे के लिए चारदीवारी किए जाने की बात कही।पुंगलिया द्वारा नगरपालिका अधिशासी अधिकारी पंकज कुमार मंगल को दूरभाष पर इसकी सूचना देने पर तुरंत प्रभाव से काम बंद करवा दिया गया।

सांगानेर के डिग्गी रोड स्थित (मुहाना) मोड़ मदरामपुरा में तालाब और पार्क की जमीन पर बना बस्ती

जयपुर टाईम्स

जयपुर(कासं.) सांगानेर क्षेत्र के डिग्गी रोड स्थित (मुहाना) मोड़ मंदरामपुरा में जयपुर विकास प्राधिकरण के जोन 11 में स्थित सरकारी जमीन पर हो रहे अवैध कब्जे को लेकर बड़ा खुलासा सामने आया है। कच्ची बस्ती के बालाजी मंदिर के पीछे की भूमि, जो कि तालाब और पार्क के लिए चिन्हित थी, आज भूमाफियाओं की शिकार बन चुकी है। पानी से भरी इस जमीन पर अवैध तरीके से मलबा डालकर कब्जा कर लिया गया है स्थानीय लोगों के मुताबिक, ये भूमाफिया गरीब मजदूरों को झूठे वादों में फंसा कर 50,000 से लेकर 2 लाख रुपए तक लेकर उन्हें ज़मीन की जगह बताते हैं - न कोई कागज़, न रजिस्ट्री। गरीब अपनी ज़िंदगी की जमा पूंजी लगाकर यहां कच्चे-पक्के मकान बना लेते हैं, और फिर जब JDA कार्रवाई करता है, तो उनके पास कानूनी बचाव का कोई साधन नहीं होता।, इस समय स्थिति यह है कि यहां सौ से अधिक अवैध मकान बन चुके हैं। बरसात में हालात और भी खराब हो जाते हैं - पानी भर जाता है, बीमारियाँ फैलती हैं, और प्रशासन चुप्पी साधे रहता है, स्थानीय पार्षद शिवराज गुर्जर ने बताया कि उन्होंने इस मामले में JDA और पुलिस प्रशासन को कई बार शिकायत दी है, लेकिन कोई स्थायी समाधान नहीं हुआ। कभी पुलिस आती है, कभी नहीं। JDA अधिकारी भी अपनी ज़मीन की सुरक्षा में पूरी तरह विफल नजर आ रहे हैं।,

संयुक्त निदेशक (कृषि) का नोखा दौरा

विकसित कृषि संकल्प अभियान में लिया भाग, कार्यालय सहायक निदेशक (कृषि) विस्तार का किया औचक निरीक्षण

कृषि आदान विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों का निरीक्षण कर जानी कृषि आदान बीज एवं उर्वरक की अद्यतन स्थिति

जयपुर टाइम्स

बीकानेर, जिले में कृषि विज्ञान केन्द्र व कृषि विभाग द्वारा चार टीमों के माध्यम से ग्राम पंचायत स्तर पर विकसित कृषि संकल्प अभियान का आयोजन किया जा रहा है। इसमें 7314 किसान, कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों से संवाद कर चुके हैं। अभियान के पांचवें दिन सोमवार को संयुक्त निदेशक (कृषि) श्री कैलाश चौधरी ने रोड़ा (नोखा) में आयोजित विकसित कृषि संकल्प अभियान में भाग लिया। सहायक निदेशक (उद्यान) श्री मुकेश गहलोत ने किसानों को नवीनतम कृषि एवं उद्यानिकी तकनीकी की जानकारी दी। कृषि वैज्ञानिक डॉ केशव मेहरा व डॉ बीडीएस नाथावत, सहायक निदेशक (कृषि) राजूराम डोगीवाल ने चरकड़ा, रोड़ा एवं हिंयादेसर में आयोजित विकसित कृषि संकल्प अभियान में किसानों से संवाद किया। संयुक्त निदेशक (कृषि) श्री कैलाश चौधरी ने सहायक निदेशक (कृषि) विस्तार कार्यालय नोखा का आकस्मिक निरीक्षण किया एवं आवश्यक निर्देश दिए। संयुक्त निदेशक कृषि मय सहायक निदेशक उद्यान नोखा क्षेत्र में स्थित कृषि आदान विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों का सघन निरीक्षण किया। इस दौरान नोखा क्षेत्र में कृषि आदान बीज एवं उर्वरक की आपूर्ति व मांग के संदर्भ में विस्तृत निरीक्षण किया एवं कृषि आदान खरीदने आए किसानों से भी चर्चा की। मूंगफली फसल में डीएपी के स्थान पर एस एस पी व यूरिया के उपयोग की सलाह दी। किसानों को गुणवत्ता युक्त कृषि आदान बीज एवं उर्वरक की आपूर्ति आदान विक्रेता सुनिश्चित करें। कृषि आदान विक्रेताओं को निर्देश दिए कि किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर नियमानुसार कठोर कार्रवाई की जाएगी।

रांकावत परिवार ने किया उप-मुख्यमंत्री श्री प्रेमचंद बैरवा का स्वागत, स्वागत समारोह में बोले उप मुख्यमंत्री

जयपुर टाईम्स

बीकानेर उप मुख्यमंत्री श्री प्रेमचंद बैरवा सोमवार को ओएसडी श्री कुंजीलाल स्वामी (रांकावत) के पूगल रोड़ स्थित निवास स्थान पर पहुंचे। जहां श्री बैरवा का रांकावत परिवार की ओर से स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रांकावत समाज और बंगला नगर क्षेत्र के गणमान्य लोगों ने साफा, शॉल, श्रीफल और स्मृति चिन्ह देकर के उप मुख्यमंत्री का स्वागत किया। स्वागत समारोह में खाजूवाला विधायक डॉ विश्वनाथ मेघवाल, बीकानेर पश्चिम विधायक श्री जेठानंद व्यास, श्रीडूंगरगढ़ विधायक श्री ताराचंद सारस्वत समेत अन्य जनप्रतिनिधि भी शामिल हुए। स्वागत समारोह में राजकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय के कर्मचारियों, भारतीय किसान संघ समेत विभिन्न संगठनों द्वारा भी उप-मुख्यमंत्री का स्वागत किया गया। राष्ट्रीय मुस्लिम मंच के प्रदेश संयोजक श्री अयूब कायमखानी ने भी उपमुख्यमंत्री का स्वागत किया।इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री ने कहा कि बीकानेर को तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में महिला पॉलीटेक्निक महाविद्यालय को डिग्री कोर्स की मान्यता प्रदान की गई। राजकीय पॉलीटेक्निक महाविद्यालय को अलग से कंप्यूटर ब्रांच की मान्यता प्रदान की गई और इंजीनियरिंग कॉलेज बीकानेर को आरआईटी (₹द्धञ्ज) बनाया गया है। साथ ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पदोन्नति को लेकर लंबित प्रकरणों को निस्तारित किया गया है। इसके अलावा उच्च शिक्षा क्षेत्र में नई शिक्षा नीति को लागू करने के प्रयास चालू कर दिए गए हैं। इस अवसर पर बीकानेर पश्चिम विधायक श्री जेठानंद व्यास ने अपने क्षेत्र में किए गए विकास कार्यों के संबंध में जानकारी दी और भविष्य में हर समस्या के समाधान के लिए जनता के साथ खड़े रहने को लेकर खुद को प्रतिबद्ध बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैष्णव स्वामी चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र स्वामी द्वारा की गई। कार्यक्रम के अंत में तकनीकी शिक्षा के विशेष अधिकारी श्री कुंजीलाल स्वामी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

राज्य जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
4 जून, 2025

वंदे गंगा जल संरक्षण - जन अभियान जिले में 5 से 20 जून तक जल संग्रहण एवं जल संरक्षण पखवाड़ा

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में 5 जून को गंगा दशमी एवं विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में प्रत्येक ग्राम एवं शहर में समस्त विभागों द्वारा जल स्त्रोतों, नदियों, जलधारा एवं तालाब पर पूजन कलश यात्रा, जागरूकता अभियान, स्वच्छता अभियान एवं अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी ने बताया कि वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत आगामी मानसून से पूर्व वर्षा जल के अधिक से अधिक संग्रहण तथा विद्यमान जल स्त्रोतों के रख-रखाव एवं स्वच्छता के लिए जिले में 5 जून से 20 जून तक जल संग्रहण एवं जल संरक्षण पखवाड़ा का आयोजन किया जाएगा। जिसमें विभिन्न विभागों द्वारा गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद ए एन सोमनाथ ने बताया कि जिले में गंगा दशहरा के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का शुभारंभ किया जाकर नरेगा में निर्मित तालाब, अमृत सरोवर, नाड़ी, बावड़ी, टांका इत्यादि पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जल स्त्रोतों पर स्वच्छता के लिए जन भागीदारी से साफ-सफाई का कार्य किया जाएगा। प्रत्येक ग्राम में शामिल गतिविधियों में राजीविका के ग्राम स्तरीय संगठन को जोड़ा जाएगा साथ ही स्थानीय जनप्रतिनिधि, समस्त राजकीय-कर्मचारी, आमजन एवं स्वयंसेवी संगठन के माध्यम से जल संग्रहण संरचनाओं पर जल पूजन, कलश यात्रा, जागरूकता अभियान, स्वच्छता अभियान आयोजित किया जाएगा।

राज स्किल-2025 प्रतियोगिता का आयोजन 9 जून को

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान मचकुन्ड रोड़ धौलपुर में 9 जून सोमवार को प्रातः 10 बजे से राज स्किल-2025 प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। उप निदेशक औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान ने बताया कि प्रतियोगिता में जिले के राजकीय एवं निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के फिटर, इलैक्ट्रीशियन, मैकेनिक डीजल, कोपा, ड्रेसमेकिंग व्यवसाय के वर्ष 2023 एवं 2024 के 80 प्रतिशत या इससे अधिक अंको के उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थी भाग ले सकते है। उन्होंने बताया कि इच्छुक अभ्यार्थी 5 जून को दोपहर 2 बजे तक सम्बन्धित संस्थान में आवेदन जमा करा सकते है।

आपदा बाढ़ नियंत्रण कक्ष 15 जून से किया जाएगा संचालित

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। संयुक्त शासन सचिव आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग के निर्देशानुसार जिला स्तरीय आपदा-बाढ़ प्रबंधन कक्ष के दायित्वों का निर्वहन करने के लिए जिला स्तरीय आपदा बाढ़ नियंत्रण कक्ष का संचालन किया जाएगा। जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी ने बताया कि जिला स्तरीय आपदा-बाढ़ नियंत्रण कक्ष का संचालन जिला कलक्ट्रेट कार्यालय के कमरा नम्बर 51 में किया जाएगा, जिसका दूरभाष नम्बर 05642-220033 रहेगा। उन्होंने बताया कि नियंत्रण कक्ष के प्रभारी अधिकारी सहायक लेखाधिकारी मांगीलाल आर्य मोबाइल नम्बर 941413473 रहेगें। बाढ़ नियंत्रण कक्ष 15 जून से तीन पारियों में 24 घण्टे कार्यरत रहेगा। उन्होंने बताया कि प्रथम पारी प्रातः 6 बजे दोपहर 2 बजे तक में रामकुमार शर्मा अध्यापक मोबाइल नम्बर 8890921093 एवं राजेश कुमार प्रबोधक मोबाइल नम्बर 9875161676, द्वितीय पारी दोपहर 2 बजे से रात्रि 10 बजे तक में विष्णु दयाल शर्मा विद्यालय सहायक मोबाइल नम्बर 9887431034 एवं रामकुमार शर्मा प्रबोधक मोबाइल नम्बर 7014331152 तथा तृतीय पारी रात्रि 10 बजे से प्रातः 6 बजे तक में सत्यपाल प्रबोधक मोबाइल नम्बर 9636700795 एवं संजय खान शिक्षक मोबाइल नम्बर 9667324041 कार्यरत रहेगें।

ग्राम पंचायत खानपुर मीना में रात्रि चौपाल का होगा आयोजन

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निस.)। ग्राम पंचायत खानपुर मीना में रात्रि चौपाल का आयोजन किया जाएगा। जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी की अध्यक्षता में 5 जून को ग्राम पंचायत खानपुर मीना में सायं 6 बजे से रात्रि चौपाल का आयोजन किया जाएगा।

नगर पालिका क्षेत्र में सम्मिलित गांवों के ग्रामीण परेशान

न नगरपालिका में हो रहे काम न ग्राम पंचायत में

जयपुर टाइम्स

बिजौलियाँ(निसं.)। पुरोहितों का खेड़ा और फतेहपुर को बिजौलियां नगर पालिका क्षेत्र में सम्मिलित करने पर आ रही समस्याओं को लेकर ग्रामीणों द्वारा उपखंड अधिकारी अजीत सिंह राठौड़ को ज्ञापन सौंपा गया।ज्ञापन में बताया कि पुरोहितों का खेड़ा को हाल ही में नगर पालिका बिजौलियां में जोड़ा गया हैं।जिसके चलते ग्रामवासियों को नरेगा योजना में काम नहीं मिलने से रोजगार छिन गया हैं।पेंशन, राशनकार्ड, आधारकार्ड, जन आधारकार्ड अपडेट करवाने व जाति-मूल निवास प्रमाण पत्र के लिये भी उमाजी का खेड़ा ग्राम पंचायत के सम्बन्धित कार्मिक द्वारा मना कर दिया जाता हैं और नगर पालिका बिजौलियां में काम होने की बात कही जाती हैं।वहीं नगर पालिका में जाते हैं तो वहां के कार्मिक द्वारा मना कर दिया जाता हैं कि अभी इस सम्बंधित कोई कार्य नही हो रहा हैं। इसी के साथ प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत स्वीकृत आवास की किश्तें भी समय पर प्राप्त नहीं हो रही हैं। जिसके चलते लोगों के आवास अधूरे पड़े हुए हैं। ग्रामीणों ने उक्त सभी कार्यों के लिए सम्बन्धित विभाग को आदेश दिए जाने की मांग प्रशासन से की हैं।

अतिक्रमण पर राज्य सरकार संवेदनशील, नगरपालिका बढ़ावा देने में प्रयासरत

पालिका की अनदेखीः सुमेरपुर में बढ़ता अतिक्रमण, बच्चों से लेकर आमजन परेशान

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.)। आमजन की समस्या समाधान एवं अतिक्रमण को लेकर प्रदेश सरकार पूरी तरह से संवेदनशील हैं,वही नगरपालिका अतिक्रमण को बढ़ावा देने में प्रयासरत है। सुमेरपुर पालिका क्षेत्र में अतिक्रमण की भरमार लगी हुई है। लापरवाही का फायदा उठाने को लोग आतुर हैं यहां चारों तरफ अतिक्रमण ही अतिक्रमण दिखाई दे रहा है। जनता के लिए पैदल चलने की जगह फुटपाट से लेकर दुकानों के सामने अतिक्रमण कर रखा है। आपको बता दे कि पाली रोड़ जाखानगर के मुख्य मार्गों पर दुकानों के आगें टीन शेड लगे हुए हैं जो आंधी, तूफान चलने पर हादसे का कारण बन रहे है। इसकी और जिम्मेदार अधिकारी कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। जबकि पिछले वर्षों में शेड उडने् की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। दुकानदारों ने धूप,बारिश से बचने के लिए दुकानदार अपनी सुविधा के अनुसार टीन शेड लगाते हैं। यह शेड सिर्फ पाइप डालकर उनके सहारे रख दिए जाते हैं,जिससे मजबूती नहीं रहती है। तेज आंधी चलने पर उड़कर सीधे सड़क पर गिरते हैं। इस बीच अगर कोई राहगीर आ जाए तो उसकी जान भी जा सकती है। यही नहीं रोड़ किनारे शेड उड़कर बिजली हाइटेंशन लाइन में जाकर फंसा तो कभी बड़ा हादसा भी हो सकता है। कई बार वाहन चालक उसकी चपेट में आने से बचे हैं। यदि शॉर्ट सर्किट के बाद तार टूटकर सड़क पर गिर जाता,तो वाहन चालकों को करंट लग सकता था,और बड़े हादसे का रूप ले सकता है । अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के समय टीन शेड हटवा भी दिए जाते हैं,लेकिन कुछ दिन बाद ही व्यापारी फिर से शेड लगाकर अस्थायी अतिक्रमण कर लेते हैं। इस पर पालिका प्रशासन गंभीर नहीं होने के कारण शहर में यह स्थिति बन रही है। यह जाखा नगर में ही नहीं,बल्कि शहर के विभिन्न स्थानों पर खतरनाक स्थिति बनी हुई है। और दिन ब दिन शहर की व्यवस्था बिगड़ती जा रही है।

लापरवाही आमजन पर भारी

पालिका प्रशासन की यह लापरवाही आमजन पर भारी पड़ती जा रही है। जहां शेड, रोड़ तक फैला रहे हैं,और पुराने सामान रखकर कर अतिक्रमण दुकानदार दुकान के बाहर कर रहे हैं। जहां तक शेड लगे रहते हैं,उसें आगें तक सामान फैलाकर रखते हैं,जिससे वाहन चालको को परेशानी उठानी पड़ती है।वही पास मे सरकारी स्कूल होने से बच्चों को रोड़ पर चलने को मजबूर हैं । वहां के लोगों ने बताया जब बच्चों की स्कूल की छुट्टी होती है, तो हमें डर लगता है,कभी बड़ा हादसा न हो रोड़ के किनारे अतिक्रमण से हमारे बच्चे परेशान हो रहे हैं। दुकानदारो ने बाहर तक फैला रखा हैं सामान,और टीन शेड। उन्होंने कहा कि बाहर तक सामान फैलाने से रोड़ तक नहीं बचता है।

सर्वाइकल कैंसर की जांच और निदान शिविर का समापन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मीरा हॉस्पिटल ने 47 वर्ष सफलतापूर्वक पूरे करके अब 48वें वर्ष में प्रवेश लेने के अवसर पर गर्भाशय के मुख का कैंसर यानि सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के लिए पेप स्मियर की निःशुल्क जांच की सुविधा का आयोजन मीरा चैरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से मीरा हॉस्पिटल, शिव मार्ग, बनीपार्क, जयपुर में किया गया। डायरेक्टर आचार्य सत्यनारायण पाटोदिया ने बताया कि इस अवसर पर कुल 357 महिलाओं ने गर्भाशय के मुख की निःशुल्क जांच करवाई। उसके अलावा ओरल कैंसर से बचाव हेतु 272 लोगों के दांतों की जाँच मीरा डेंटल हॉस्पिटल के द्वारा निःशुल्क की गई । साथ ही बच्चों के डॉक्टर, गायनोकोलॉजिस्ट, लैबोरेट्री, बोन मैरो डेंसिटी (बी.एम.डी.) की जांच की गई। लाइफ केयर क्लब द्वारा 120 लोगों की बी.एम.आई. की जांच भी निःशुल्क की गई।

खाते से उड़े 99 हजार, 81 हजार वापस मिले

बूंदी(निसं.) कापरेन थाना क्षेत्र में एक साइबर ठगी का मामला सामने आया। अख्तर हुसैन के कैनरा बैंक खाते से ठगों ने 99 हजार 999 रुपए निकाल लिए। पुलिस की कार्रवाई से 81 हजार रुपए वापस मिल गए। घटना 5 मार्च की है। अख्तर हुसैन को उनके मोबाइल पर दो अलग-अलग ट्रांजैक्शन के मैसेज आए। प्रत्येक ट्रांजैक्शन 49 हजार 999 रुपए का था। बैंक से पता चला कि उनका मोबाइल हैक कर लिया गया था।

विश्व योग दिवस हरियालो राजस्थान एवं वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान कार्यक्रम की प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करते हुए जिले की रैंकिग सुधार के लिए निष्ठापूर्वक कार्य करें - मंगल

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर आशीष मोदी के द्वारा गुड गवर्नेस एवं शिक्षा विभागीय शैक्षिक एवं विभागीय कार्यो के समयबद्ध रूप धरातल स्तर पर क्रियान्विती हेतु प्रत्येक माह के प्रथम मंगलवार को आयोजित बैठक के अंतर्गत जिला स्तरीय समीक्षा बैठक मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी महेश कुमार मंगल की अध्यक्षता में आजोजित हुई। बैठक में उन्होंने उपस्थित डीईओ एवं सीबीईओ को शैक्षिक उन्नयन एवं गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के साथ अन्य विभागीय कार्यों को भी समय पर पूर्ण करने लिए गम्भीरता पूर्वक एवं सतर्कता के साथ अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने के लिए निर्देश दिये। मंगल ने गत बैठक की समीक्षा की। मंगल ने बैठक में उपचारात्मक शिक्षा, शाला संबलन टिकट्स, शाला सम्बलन विद्यालय अवलोकन, विभागीय पदोन्नति, एपीएआर, यूडाइस आधार एनसीपीआई सीडिंग, लंबित न्यायालय प्रकरण, विभागीय जांच, संपर्क पोर्टल पर लंबित परिवादों के निस्तारण, जिला रैंकिग, आरटीई प्रवेश एवं पुनर्भरण, कर्मयोगी, ईएलसी, इ-फाइल, ई-डाक पर गहन चर्चा की। साथ ही उन्होंने यूडाइस, एपीएआर आधार एवं एनसीपीआई कार्य को बहुत ही गम्भीरता से करने निर्देश दिये। साथ उन्होंने निर्देश दिये की बहुत ही जल्दी माननीय शासन सचिव महोदय, आयुक्त महोदया, निदेशक माध्यमिक शिक्षा बीकानेर शिक्षा विभागीय कार्यों की समीक्षा करेंगें। अतः उक्त कार्यों में जिले का प्रदर्शन एवं उपलब्धि सर्वश्रेठ होनी चाहिये। सीडीईओं मंगल ने विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रम जो निदेशालय से प्राप्त होते है उन्हें सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ ग्रासरूट पर क्रियान्वयन करने का भी सभी से आव्हान किया। उन्होने विश्व योग दिवस, हरियालो राजस्थान एवं वंदे जल संरक्षण जन अभियान की प्रभावी क्रियान्विती के लिए पूर्ण गम्भीरता से कार्य करने हेतु चर्चा की। अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक रोहित विष्ट ने एनपीसीआई आधार सीडिंग के बारे में संपूर्ण जानकारी दी, साथ ही सभी सीबीईओ से शत प्रतिशत लक्ष्य अर्जित करने के निर्देश दिए। जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा प्रतिनिधि ने मिड डे मील के सघन निरीक्षण एवं राजसिम कि प्रभावी क्रियान्विति के निर्देश दिये। नवागन्तुक एडीपीसी जीतेन्द्र सिंह जादौन ने ट्रांसफर वाउचर योजना एवं परियोजना के प्रत्येक कम्पोनेंट पर विस्तृत चर्चा कर जानकारी दी। सहायक निदेषक अखिलेष कुमार श्रीवास्तव ने एपीएआर एवं विद्यार्थी विज्ञान मन्थन प्रतियोगिता की विस्तृत चर्चा की। बैठक में सीबीईओं दामोदर लाल मीणा, कल्याण सिंह मीणा, राजेंद्र मीणा, रामप्रसाद राघव, एपीसी बबिता पाराशर एवं चरन सिंह जादौन ने अपने अपने क्षेत्र एवं प्रभार की प्रगति से अवगत कराया। बैठक में प्रशासनिक अधिकारी अशोक उपाध्याय ने निदेशालय से प्राप्त विभिन्न कार्यक्रमों की आयोजन के संबंध में प्राप्त पत्रों की सूचना देते हुए प्रगति रिपोर्ट भिजवाने के लिए निवेदन किया।

नगर परिषद सुजानगढ (चूरू) राजस्थान

E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/स्टोर शाखा/2025/1895 दिनांक :– 30.05.2025

निविदा सूचना – 2025

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यो के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मस से निविदा दिनांक 06.06.2025 को दोपहर 3:00 बजे तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रतियां दिनांक 06.06.2025 को दोपहर 2:00 बजे तक विक्रय की जावेगी प्राप्त निविदायें उसी दिन उपस्थित ठेकेदारों के समक्ष सायं 4:00 बजे खोली जावेगी। उक्त निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड कमांक–(DLB2526GSOB06367), (DLB2526GSOB06379) कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

आयुक्त
नगर परिषद सुजानगढ

राज.संवाद/सी/25/3440

नगर परिषद सुजानगढ (चूरू) राजस्थान

E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/स्टोर शाखा/2025/1888 दिनांक :– 30.05.2025

निविदा सूचना – 2025

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यो के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मस से निविदा दिनांक 06.06.2025 को दोपहर 3:00 बजे तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रतियां दिनांक 06.06.2025 को दोपहर 2:00 बजे तक विक्रय की जावेगी प्राप्त निविदायें उसी दिन उपस्थित ठेकेदारों के समक्ष सायं 4:00 बजे खोली जावेगी। उक्त निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड कमांक–(DLB2526GSOB06347) कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

आयुक्त
नगर परिषद सुजानगढ

राज.संवाद/सी/25/3438

टीम रघुकुल जोन 1 के माल्यार्पण समारोह में उमड़ा समाज बंधुओ का सैलाब

जयपुर टाइम्स

नरैना(निसं)। जयपुर माहेश्वरी समाज के त्रैवार्षिक चुनाव सत्र 25-28 के टीम रघुकुल के जोन 1 के प्रत्याशियों के माल्यार्पण समारोह में समाज बंधुओ का सैलाब उमड़ पड़ा। टीम रघुकुल के माल्यार्पण समारोह का आयोजन सी स्कीम स्थित एक निजी गार्डन में आयोजित किया गया। गार्डन के मुख्य द्वार पर टीम रघुकुल के प्रत्याशी आगंतुक समाज बंधुओ का विन्रम व स्नेह भाव से "सबका साथ समाज का विकास" लिखा हुआ केसरिया दुपट्टा ओढ़ाकर कर स्वागत कर रहे थे। कार्यक्रम में उपस्थित समाज बंधुओ को टीम रघुकुल के अध्यक्ष प्रत्याशी उमेश सोनी, महिला परिषद् अध्यक्ष प्रत्याशी स्नेहलता साबू, नवयुवक मंडल अध्यक्ष प्रत्याशी अखिल भाला ने संबोधित कर अपने विजन पर प्रकाश डाला। इस दौरान गौरव मंत्री सहित लगभग दो दर्जन से अधिक प्रत्याशियों का मंच पर माल्यार्पण कर अभिनंदन किया गया। समाज बंधुओ के सैलाब की वजह से गार्डन खचाखच भरा नजर आया। कार्यक्रम में सैकड़ों समाज बंधुओ की उपस्थिति देखकर अध्यक्ष पद प्रत्याशी उमेश सोनी गदगद नजर आयें।

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड चूरु

ई-44 अग्रसेन नगर चूरू
E-mail: cemhchuru@yahoo.com
फोन नं. 01562-254670

क्रमांक- प.01 ()/ चि. स्वा. / खण्ड-चूरु / 2025-26 / 165 दिनांक- 19.05.2025

निविदा सूचना संख्या - 05/2025-26

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड चूरु के अन्तर्गत जिला चूरू एवं हनुमानगढ़ के प्रा. स्वा. केन्द्र एवं उप स्वास्थ्य केन्द्रों पर विधुतीकरण के कार्य राशि रु. 40.00 लाख तक के कार्य के लिए निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेबसाईट www. dipronline. org,http// sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता हैं।

UBN No.- NRH2526WSOB00323

(राजेश कुमार सोलंकी)
अधिशाषी अभियन्ता
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य
खण्ड चूरू

DIPR/C/6810/2025

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, सा0नि0वि0 वृत चूरू

क्रमाक- 366 दिनांक - 20.05.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 03/2025-26

इच्छुक निविदादाताओं से जिला चूरू में सडक निर्माण व अण्डर ब्रिज का कार्य (मय पाँच वर्ष के दोष निवारण व सुधार अवधि) कार्य हेतु अनुमानित लागत राशि रू0 1381.42 लाख की ई-निविदा आमन्त्रित की जाती है। कार्य के निविदा प्रपत्र दिनांक 23.06.2025 सांय 6.00 बजे तक ऑनलाईन अपलोड करना आवश्यक होगा। उक्त निविदा से सम्बन्धित विवरण राज्य सरकार के प्रोक्योरमेंट पोर्टल http://sppp.rajasthan.gov.in, http:// eproc. rajasthan.gov.in व विभागीय वेबसाईट http://pwd.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते हैं।

NIB No- PWD2526A0685

UBN No- PWD2526WLOB02067, PWD2526WSOB02069, PWD2526WSOB02072, PWD2526WSOB02074, PWD2526WSOB02076, PWD2526WSOB02078,

पंकस्य अधीक्षण
अभियन्ता सा.नि.विवृत चूरू

DIPR/C/6853/2025

राजस्थान पवित्र कैलाश मानसरोवर तीर्थयात्री की बैठक संपन्न

जयपुर(कासं.) राजस्थान पवित्र कैलाश मानसरोवर तीर्थयात्री की कार्यकारिणी की बैठक का आयोजन हुआ संस्था के अध्यक्ष कैलाशी शिवचरण हाड़ा ने सर्वप्रथम डॉक्टर के आर जाजू, के. एन .सिंह, सुमन सिंह सभी संरक्षकों का माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया। इसी दौरान कैलाशी रवि सैनी पार्षद का नगर निगम में अध्यक्ष बनने पर संस्था की तरफ से माला एवं साफा पहनाकर अभिनंदन किया गया। बैठक में कैलाशी कृष्ण गुप्ता महासचिव के बीमार होने से उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना, संस्था के बैंक अकाउंट, फिक्स्ड डिपॉजिट तथा मुख्यमंत्री से संस्था के लिये एक भूखंड आवंटन हेतु चर्चा की गई। कैलाशी के. एन.सिंह ने बताया कि आगामी आमसभा दीपावली तक आयोजित की जाएगी।

कोटा में सांडों की लड़ाई में बुजुर्ग की मौत

कोटा(निसं.) दो सांडों की लड़ाई में 85 साल के बुजुर्ग की मौत हो गई। सांड गली में खड़ी एक कार के पास लड़ रहे थे। बचने के लिए बुजुर्ग दुकान की सीढ़ियों पर चढ़े। इस दौरान एक सांड ने बुजुर्ग को गिरा दिया। हादसा सुभाष नगर इलाके का शनिवार दोपहर का है। इसका वीडियो मंगलवार को सामने आया है। हादसा जिस गली का है, उसी में बुजुर्ग देवकरण गुर्जर का घर है। बुजुर्ग गली में टल रहे थे। इसी दौरान दो सांड लड़ते हुए आए। बचने के लिए बुजुर्ग वहां स्थित दुकान की सीढ़ियों पर चढ़ गए। इस बीच एक सांड भी दुकान की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ता है और बुजुर्ग को टक्कर मारकर गिरा देता है। इसके बाद एक युवक सांड को भगाकर बुजुर्ग को संभालता है। पड़ोसी राकेश नायक ने बताया- चीख सुनकर उनके परिवार वाले बाहर आए तो वे दुकान के बाहर पड़े थे। उन्हें तुरंत हॉस्पिटल लेकर गए, जहां इलाज के दौरान रविवार रात को मौत हो गई।

कार्यालय नगरपालिका रतनगढ़ (चूरू) राजस्थान

क्रमाकं- नपार/तामीर/2025/ 635-637 दिनांक 3.6.25

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नांकित आवेदकगण द्वारा नामान्तरण हेतु इस कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। (जिसका पूर्ण विवरण नीचे दिया गया हे इस संबंध में किसी व्यक्ति / संस्थान को कोई आपत्ति हो तो उक्त आपत्ति आमंत्रण पत्र के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के भीतर निम्न अद्योहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष अपनी लिखित आपत्ति मय सबूत प्रस्तुत कर सकते हैं, बाद मियाद गुजरने पर प्रस्तुत आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा एवम् वस्तुगत प्रकरणों में संबंधित के पक्ष में नियमानुसार स्वीकृति जारी कियेजाने की कार्यवाही सम्पादित कर दी जावेगी

क्र.सं.	पत्रावली संख्या / दिनांक	आवेदक का नाम मय पूर्ण पता	प्रस्तावित निर्माण स्थल का पता एवं आसा पासा (वार्ड नं0 10, रतनगढ़)				प्रस्तावित भूमि का क्षेत्रफल	प्रयोजनार्थ
			उत्तर	दक्षिण	पूर्व	पश्चिम		
01	LSG/RATANGARH/MUT/2024- 25/123526/07-03-2025	श्री कुलदीप सिंवाल पुत्र श्री कुंज बिहारी सिंवाल, वार्ड नं0 10, रतनगढ़	मकान मोहन लाल	आम रास्ता	भूमि जयदेव	आम रास्ता	238.67 वर्गमीटर	नामान्तरण

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका रतनगढ़

मंडावा में झमाझम बारिश

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। अंचल में मौसम ने अचानक करवट ले ली है। वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के प्रभाव के चलते ल मौसम में बदलाव आया, जिसके बाद से जिले के कई हिस्सों में रुक-रुक कर बारिश का सिलसिला जारी है। आज सुबह करीब नौ बजे से ही क्षेत्र में आंधे घण्टे तक बारिश का दौर जारी है। जिससे तापमान में गिरावट आई है और ठंडक का एहसास बढ़ गया है। मौसम में आई इस ठंडक के कारण लोग घरों में दुबके रहे और सड़कों पर आवाजाही भी कम देखी गई। जयपुर मौसम केंद्र के अनुसार, क्षेत्र में 5 जून तक आंधी और बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। 3 जून को जिले में 40 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज आंधी चलने और बारिश होने का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। वहीं, 4 और 5 जून को 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाओं और बारिश का यलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव के चलते पूरे राजस्थान में मौसम में बदलाव आया है। इसके असर से 2 से 4 जून तक प्रदेश के कई हिस्सों में भारी बारिश की संभावना है, जबकि 5 जून के बाद से बारिश की गतिविधियों में कमी आने की उम्मीद है। पिलानी में मंगलवार सुबह न्यूनतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। सोमवार को यहां न्यूनतम तापमान 22.3 डिग्री और अधिकतम तापमान 35.6 डिग्री रहा, जबकि रविवार को अधिकतम तापमान 40.7 डिग्री तक पहुंच गया था। तापमान में गिरावट से लोगों को गर्मी से कुछ राहत मिली है।

विद्यार्थियों ने किया पौधारोपण

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। स्थानीय श्री भगवानदास तोदी महाविद्यालय में सोमवार को भूगोल विभाग के विद्यार्थियों की ओर से पौधरोपण कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने तोदी महाविद्यालय के बगीचे में फलों के पेड़ लगाएं। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबंध समिति के सचिव आशकरण शर्मा, प्राचार्य डॉ एन एस नाथावत व विभागाध्यक्ष डॉ मनीषा शर्मा व डॉ नरेश कुमार वर्मा उपस्थित रहे। सचिव व प्राचार्य की ओर से वृक्षों के महत्व पर प्रकाश डाला गया और उपस्थित सभी विद्यार्थी को पौधरोपण करने व उसके संरक्षण और सार संभाल की जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए प्रेरित किया। डॉ मनीषा शर्मा की ओर से जलवायु परिवर्तन एवं बढ़ते भूमंडलीय तापमान को कम करने के लिए पौधरोपण कार्यक्रम करना आवश्यक बताया गया। कार्यक्रम के दौरान भूगोल के सोनिका जांगिड़, बाबू सिंह, प्रियंका कुमारी, अनिता कुमारी, गुंजन सैनी, आशीष देव, पंकज नायक, ममता कंवर व कंचन कुमावत आदि विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

भीमसर में प्रतिभावन विद्यार्थियों का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। शहीद फारूख अहमद राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भीमसर में मंगलवार को बोर्ड परीक्षाओं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहने पर होनहार छात्र-छात्राओं व अभिभावकों का विद्यालय में स्वागत व सम्मान किया गया। विद्यालय में सम्मान समारोह के अवसर पर पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी लियाकत अली, सरपंच प्रतिनिधि समाजसेवी मुबारिक अली हेबत्त, पूर्व प्राचार्य विधाधर अब्दुल गफार, करणीराम, महफूज अली व अभिभावक व राउप्रावि जालिमपुरा के प्रधानाध्यापक रामविकास आदि मंचासीन अतिथि उपस्थित रहे। इस अवसर पर बोर्ड परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करने वाली छात्र छात्राओं को सम्मान किया गया। विद्यालय प्रधानाचार्य संजीव कुमार ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर लियाकत अली पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी की ओर से विद्यार्थियों को जीवन में सफलता के टिप्स बताए गए।

फुले के जीवन संघर्षों एवं आदर्शों पर आधारित है फिल्म फुले

जयपुर टाइम्स

कांवट(निस)। महात्मा ज्योतिबा फुले व राष्ट्रमाता सावित्रीबाई फुले के जीवन संघर्ष व आदर्शों पर आधारित है फिल्म "फूले" जिसका निशुल्क प्रदर्शन मेघवंश जागृति संस्थान नीमकाथाना की ओर से निशुल्क लक्ष्मी टॉकीज में 11मई से किया जा रहा है। इसी क्रम में सोमवार को सुशील कुमार भंवरिया (नर्सिंगऑफिसर) मंगल भंवरिया (रेलवे), शिवलाल गोरा, प्रकाश गुरुजी आदि के नेतृत्व में मनोज, विमल, प्रमोद मोयल, रोशनी वर्मा, सुरज्ञान, शांति देवी, कमली देवी, भूमिका गोरा सहित ग्राम चौकड़ी के महिला-पुरुषों और बालिकाओं ने यह फिल्म देखी। फिल्म देखने के बाद सभी में एक अलग ही प्रकार का जोश था। इस फिल्म में स्त्री शिक्षा और सामाजिक समरसता के बारे में दिखाया गया है जो समाज में जन जागृति का संदेश है।

वंदे गंगा, जल संरक्षण- जन अभियान में 'सबका श्रम, सबकी सहभागिता' करें सुनिश्चितः जल संसाधन मंत्री

अभियान में सभी खालों की होगी शत प्रतिशत डिसिल्टिंग

पूरे राज्य में 05 जून से 20 जून तक चलेगा वंदे गंगा, जल संरक्षण-जन अभियान

अभियान की तैयारियों को लेकर जल संसाधन मंत्री ने ली संभाग स्तरीय बैठक

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.)। जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने कहा कि आगामी मानसून में वर्षा जल के अधिक से अधिक संग्रहण व विद्यमान जल स्रोतों के रखरखाव व स्वच्छता के लिए 5 जून से 20 जून तक पूरे राज्य में चलने वाले वंदे गंगा, जल संरक्षण जन अभियान को जन आंदोलन बनाना है। रावत मंगलवार को जिला कलेक्ट्रेट सभागार में वंदे गंगा, जल संरक्षण अभियान की तैयारियों को लेकर संभाग के चारों जिलों में तैयारियों की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में खाजूवाला विधायक डॉ विश्वनाथ मेघवाल, बीकानेर पश्चिम विधायक जेठानंद व्यास, श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, सुमन छाजेड़, श्याम पंचारिया भी उपस्थित थे।

अभियान में ''सबका श्रम, सबकी सहभागिता'' करें सुनिश्चित

जल संसाधन मंत्री ने कहा कि इस अभियान में ''सबका श्रम, सबकी सहभागिता'' सुनिश्चित करते हुए कुएं, बावड़ी, तालाब, टांकों और वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर की साफ सफाई को लेकर जनप्रतिनिधियों के अलावा महिलाओं, युवाओं, किसानों, पत्रकारों, पुलिस, एनसीसी, सिविल डिफेंस, एनजीओ, विभिन्न सामाजिक संगठनों समेत सभी वर्गों को आमंत्रित करना है और इस अभियान से जोड़ना है ताकि हम वर्षा जल का अधिक से अधिक संग्रहण कर सकें। अभियान के प्रचार प्रसार को लेकर रथ यात्रा, कलश यात्रा, नुक्कड़ नाटक, प्रभात फेरी समेत विभिन्न एक्टिविटी करवानी है।

सभी खालों की होगी शत प्रतिशत डिसिल्टिंग

जल संसाधन मंत्री रावत ने कहा कि इस अभियान के तहत सभी खालों की शत प्रतिशत डिसिल्टिंग का कार्य किया जाएगा। खालों की सफाई एक-दो दिन में नहीं हो सकती लिहाजा पूरे अभियान के दौरान ही खालों की सफाई चलेगी। प्रशासन इस प्रकार प्लान तैयार करे कि पटवारी और ग्राम पंचायत को भी इससे जोड़ें और मनरेगा से भी इनकी सफाई करवाना सुनिश्चित करें। रावत ने कहा कि बारिश के दिनों में जिन क्षेत्रों में पानी भरा रहता है उनको चिन्हित कर उनका समाधान भी निकाला जाए। अभियान के तहत जिले के प्रत्येक गांव में जल संरक्षण को लेकर कोई ना कोई एक्टिविटी करवाई जाए। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण को लेकर कोई पुराना तालाब इत्यादि बना है तो वहां उस तालाब की जानकारी देने वाला बोर्ड भी लगाया जाए। इससे पूर्व अभियान को लेकर जल संसाधन विभाग के अधिशाषी अभियंता गोविंद सिंह राठौड़ ने विस्तृत जानकारी दी। बैठक में वन विभाग के अधिकारी ने बताया कि इस वर्ष जिले में कुल 17 लाख पौधे वितरित किए जाएंगे और 13 लाख पौधे वन विभाग की ओर से लगाए जाएंगे। बीकानेर संभाग स्तर पर यह आंकड़ा 59 लाख पौधे आमजन को वितरित करने और 22 लाख पौधे वन विभाग द्वारा लगाने का है। जल संसाधन मंत्री ने सभी पौधों की जिओ टैगिंग करवाने , फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी करवाने और हर छह महीने बाद उनकी जानकारी लेने को लेकर निर्देशित किया।

बैठक में जल संसाधन विभाग के चीफ इंजीनियर राकेश कुमार, अतिरिक्त चीफ इंजीनियर मनोज मांझू, भूपेन्द्र सिंह यादव, एसई सुनील कटारिया समेत विभिन्न संबंधित विभागों के आला अधिकारी उपस्थित रहे।

भीम आर्मी ने कलेक्ट्रेट पर किया प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। सुभाष मेघवाल हत्याकांड के आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग, पुलिस पर लापरवाही का आरोप भीम आर्मी भारत एकता मिशन ने मंगलवार को जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय के बाहर जमकर प्रदर्शन किया। राज्यपाल के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा, जिसमें बिरमी निवासी सुभाष मेघवाल हत्याकांड के आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी और 27 मई को कलेक्ट्रेट पर शांतिपूर्वक प्रदर्शन कर रहे लोगों पर पुलिस की ओर से किए गए लाठीचार्ज की न्यायिक जांच की मांग की गई। संगठन के प्रतिनिधियों और समाज के लोगों ने कहा कि 16 मई को सुभाष मेघवाल की बेरहमी से मारपीट की गई जिसकी रिपोर्ट धनूरी थाना में दर्ज की गई है। घटना के इतने दिन बाद भी नामजद आरोपी पुलिस गिरफ्त से बाहर हैं, जिससे जनसमुदाय में भारी रोष है। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि हत्याकांड में नामजद आरोपियों को अभी तक गिरफ्तार नहीं करना पुलिस की बड़ी लापरवाही है। संगठन के पदाधिकारियों ने कहा कि यदि बहुजन समाज से जुड़ा कोई व्यक्ति इस तरह की घटना में शामिल होता, तो पुलिस तुरंत कार्रवाई करती। लेकिन इस मामले में अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया, जो कि न्याय व्यवस्था पर सवाल खड़े करता है। भीम आर्मी के जिला अध्यक्ष विकास आल्हा ने बताया कि 27 मई को सुभाष मेघवाल हत्याकांड के विरोध में बहुजन समाज के लोगों ने जिला कलेक्ट्रेट पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया था। लेकिन प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिसमें कई प्रदर्शनकारी गंभीर रूप से घायल हो गए। अब तक न तो किसी पुलिस अधिकारी ने इसकी जिम्मेदारी ली है और न ही प्रशासन ने कोई जवाबदेही तय की है। ज्ञापन में मांग की गई है कि लाठीचार्ज की न्यायिक जांच कराई जाए।

चूरू में मामूली बारिश के बाद सड़कों पर जमा गंदे पानी से आमजन परेशान

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। अंचल में पड़ रही भयंकर गर्मी से पिछले दो दिनों से हो रही मामूली बारिश से आमजन को गर्मी से राहत जरूर मिली परंतु पानी निकासी के अभाव में इस मामूली बारिश ने प्रशासन के दावों की पोल खोलकर रख दीं। मौसम विभाग के अनुसार मंगलवार को चूरू में 1.6 एमएम बारिश रिकॉर्ड की गई और अधिकतम तापमान में भी गिरावट आयी है। चूरू में मंगलवार को अधिकतम पारा 31.0 डिग्री और न्यूनतम 22.01 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, हालांकि बारिश के बाद लोगों को गर्मी से निजात जरूर मिली है, परंतु शहर में जगह-जगह भरे गंदे पानी से आमजन की राह अवरूद्ध हो गई। शहर के लोहिया कॉलेज, सीटी पोस्ट ऑफिस के पास, डीबी अस्पताल, रेस्ट हाउस, चांदनी चौक, जौहरी सागर क्षेत्र, पुराना बस स्टैण्ड सहित जगह-जगह गंदा पानी जमा हो गया। जिससे वाहन चालकों और आमजन को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा, शहर वासियों ने बताया कि मानसून तो अभी बाकी पड़ा, इससे पूर्व ही प्रशासन की व्यवस्थाओं की पोल खुलकर सामने आ गई।

संघ शिक्षा वर्ग के दौरान स्वदेशी उत्पाद की स्टाल लगाई

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। संघ शिक्षा वर्ग 2025 का आयोजन आदर्श विद्या मन्दिर चूरू में किया गया। यहां जिला संयोजक विक्रम सिंह राठौड़ ने बताया कि इस दौरान स्वदेशी जागरण मंच चूरू की ओर से स्वदेशी उत्पाद की स्टाल लगाई गई। यहां शहर एवं गांव से आए सभी गणमान्य नागरिकों ने स्टाल पर खरीददारी की। राठौड़ ने बताया कि कार्यक्रम में स्वदेशी सूची पत्रक वितरण किए गए। साथ ही फ्लेक्स लगाकर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार व विदेशी आनलाइन कंपनियों का बहिष्कार करने का आग्रह किया गया। उन्होंने कहा कि सिन्दूर को बचाना है तो स्वदेशी अपनाओ। राठौड़ ने कहा कि अपने देश को और अपनी सेना को मजबूत करना है। यहां स्वयंसेवक बंधुओं का बहुत अच्छा सहयोग रहा। इस मौके पर एसपीपी हेम सिंह शेखावत, एपीपी राजेश मटोलिया, एडवोकेट नरेश कुदाल, एडवोकेट मनीष भारद्वाज, एडवोकेट व जिला सह संयोजक योगेन्द्र सिंह शेखावत ख्याली, एडवोकेट सरजीवन सिंह राठौड़, लीलाधर चंदेल सहित मंच के पदाधिकारी मौजूद रहे।

जिला कलेक्टर ने की तैयारियों की समीक्षा, मानसून से पूर्व आवश्यक तैयारियों के लिए दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

बीकानेर (निसं.) जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने कहा कि मानसून से पूर्व सभी विभाग जरूरी तैयारियां कर लें, जिससे आमजन को किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। जिला कलेक्टर ने कहा कि विद्युत निगम और बीकेईएसएल की ओर से ढीले तारों को अविलंब कसवाया जाए। टेढ़े-मेढ़े पोल दुरुस्त करवाए जाएं। कहीं भी ट्रांसफार्मर जमीन पर नहीं रहे। जलभराव वाले संभावित स्थानों पर इसका विशेष ध्यान रखा जाए। आवश्यकता अनुसार फेंसिंग करवाई जाए। जिला कलेक्टर ने कहा कि सड़क से जुड़े सभी विभाग अपने-अपने क्षेत्र की सड़कों का अविलंब निरीक्षण कर लें और मेजर रिपेयरिंग कार्य अगले एक सप्ताह में पूर्ण कर लें। मानसून के मद्देनजर इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। जिला कलेक्टर ने शहरी क्षेत्र के मुख्य नालों की सफाई अविलंब करवाने के निर्देश दिए। संभावित जल भराव क्षेत्रों में अब तक किए गए कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि निगम, बीडीए और पीडब्ल्यूडी अपने संसाधनों का आकलन कर लें। जल निकासी के सभी संसाधन चालू स्थिति में रहे। उन्होंने पेयजल की गुणवत्ता बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पेयजल के अधिक से अधिक नमूने लें और क्लोरिनेशन आदि की पर्याप्त व्यवस्था हो। जिला कलेक्टर ने कहा कि फड़ बाजार को कचरा मुक्त बनाने की दिशा में कार्य हो। इसके लिए एक सप्ताह में कार्य योजना तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निगम की ओर से फड़ बाजार और यहां के नालों को साफ किया जाए। निगम की ओर से व्यापारियों से समन्वय करते हुए डस्टबिन लगवाए जाएं ।

पालिका की लापरवाहीः डंपिंग यार्ड में कचरे का निस्तारण नहीं

मण्डावा(निस)। मंडावा नगरपालिका की बड़ी लापरवाही देखने को मिली है जहा मंडावा तहसील के पीछे डंपिंग यार्ड जहां पर पूरे मंडावा का कचरा डाला जाता है। डंपिंग यार्ड में गौरक्षक युवा साथी पहुंचे तो वहां देखा की 8,10 गायें मरी हुई थी। आसपास के लोगों का कहना है न तो नगर पालिका का ध्यान है, न ही प्रशासनिक अधिकारी का इस ओर ध्यान हैं। गाय को गौ माता के रूप में हिंदू धर्म में पूछते हैं हम सबफिर यह क्या है मंडावा नगरपालिका के लिए बहुत ही बडी शर्म की बात हैं। स्थानीय विधायक को, नगर पालिका के अध्यक्ष को, सांसद को ओर साथ ही प्रशासनिक अधिकारियों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। इसी दौरान मौजूद गौरक्षक हेमंत सैनी, राहुल सैनी, भवानी सिंह, सुमित सैनी ,राजू सैनी, सुमित कुमार, प्रदीप सैनी, रविंद्र कुमार ,पंकज सैनी, सुमित कुमार और सामाजिक कार्यकर्ता अमित मीणा मौजूद रहे, मीणा ने बताया कि जल्द से जल्द इस समस्या का निवारण किया जाए डंपिंग यार्ड में पॉलिथीन की थैली खाकर लगातार गायों की मौत हो रही है साथ ही डंपिंग यार्ड मशीन है लेकिन मशीन लगाने के बाद में चलाई नहीं गई बड़ी ही शर्म की बात है अगर जल्द ही समस्या का हल नहीं होता हैं तो नगर पालिका चुनाव व विधायक को चुनाव में जनप्रतिनिधियों का विरोध किया जाएगा।

लोक सेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। लोक सेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट, लक्ष्मणगढ़ की बैठक का आयोजन मंगलवार को ट्रस्ट संरक्षक सुभाष जोशी व प्रकाश पासोरिया के सानिध्य में किया गया। बैठक का आयोजन संगठन की कार्यप्रणाली को और अधिक सक्रिय व नियमित बनाए रखने के उद्देश्य से किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि ट्रस्ट प्रत्येक माह एक आवश्यक बैठक का आयोजन करेगा ताकि सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों की सुचारू रूप से योजना बनाई जा सके। बैठक में आगामी निर्जला एकादशी के अवसर पर ट्रस्ट की ओर से आध्यात्मिक चेतना अभियान के तहत आमजन को ठंडा, शीतल पाइनएप्पल जूस वितरित करने का निर्णय भी लिया गया। उक्त आयोजन 6 जून को सुबह केसरिया कंवर मंदिर के पास, ट्रस्ट कार्यालय सोनू इंटरप्राइजेज के सामने आयोजित किया जाएगा।

झुंझुनूं में बेस्ट एंड वेल्थ पार्क बनेगा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। झुंझुनूं में बेस्ट एंड वेल्थ पार्क चौधरी चरण सिंह पार्क अब विकसित किया जाएगा। इसके साथ ही पर्यटन, वन्यजीव संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा। बता दें कि नगर परिषद्, झुंझुनूं में बेस्ट एंड वेल्थ पार्क बनेगा। शहर के लोगों के लिए एक अच्छी खबर है। 9 जल्द ही जिले में "बेस्ट एंड वेल्थ पार्क" का निर्माण होगा। नगर परिषद ने इसके लिए चौधरी चरण सिंह पार्क को चुना है, जिसे इस योजना के तहत विकसित किया जाएगा। यह पहल केवल मनोरंजन का केंद्र नहीं होगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, कचरा प्रबंधन, सर्कुलर इकोनॉमी और कलात्मक पुनर्चक्रण का संदेश भी देगी।

ऑनलाईन प्रवेश प्रक्रिया शुरू

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय मास्टर भंवरलाल मेघवाल राजकीय कन्या महाविद्यालय में 4 जून से बीए सेमेस्टर प्रथम की ऑनलाईन प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो गई है। जिसकी अन्तिम तिथि 16 जून को है। प्रवेश नोडल अधिकारी ज्योति ने बताया कि इस वर्ष राज्य सरकार ने तीन परिवर्तन किए हैं। छात्राएं ई मित्र पर जाकर अपनी एसएसओ आईडी से आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान की वेबसाईट पर अपने जन आधार के माध्यम से ऑनलाईन आवेदन कर सकती हैं। जहां पर नाम, माता-पिता का नाम, जम्मतिथि आदि सावधानीपूर्वक भरने हैं। विद्यार्थियों को अंतिम प्रवेश सूची निकलने के बाद अपने मूल दस्तावेज, टीसी, सीसी, आय प्रमाण पत्र, मूल निवास प्रमाण पत्र, 12वीं की मूल अंक तालिका लेकर सत्यापन करवाना होगा।

किलक ने पक्षी संरक्षण का दिया संदेश

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। राष्ट्रीय जाट महासभा के प्रदेशाध्यक्ष धर्मेंद्र किलक और उनकी धर्मपत्नी संतोष किलक ने पक्षी संरक्षण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। धर्मेन्द्र किलक ने 31 बर्ड फीडर वितरण करके समाज को पक्षी संरक्षण का सार्थक संदेश दिया। पर्यावरण और पारिस्थितिकी विकास के क्षेत्र में कार्यरत नेचर एनवायरमेंट एण्ड वाइल्डलाइफ सोसायटी न्यूज ताल छापर की ओर से प्रगति नगर में आयोजित एक सादे कार्यक्रम में धर्मेंद्र किलक, धर्मपत्नी संतोष ने सभी बर्ड फीडर में अनाज से भरकर उनको बधाई देने शुभचिन्तको को भेंट किए। प्रदेशाध्यक्ष धर्मेंद्र किलक ने कहा कि पक्षी संरक्षण आज के समय की महत्ती आवश्यकता है। मरूदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा, जोधाराम जानूं आदि ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर नंदलाल सिंवल, मुकेश किलका, भूराराम गुलेरिया, लादूसिंह सौलंकी, कमल लुहार, राजकुमार बुगालिया, भूपेंद्र जानूं, प्रांजल डूडी, मुकेश झाझड़ा, नेहरू बावरी, ओम टेलर, स्नेहा पारीक, गिरधारी जाटमाली, हरि भामूं आदि उपस्थित रहे। संचालन प्रतिभा किलक ने किया।

ब्याज सहित 14.40 लाख रूपए का अवार्ड पारित

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर न्यायालय मोटर दुर्घटना दावाधिकरण के पीठासीन अधिकारी संतोष कुमार मीणा ने सड़क दुर्घटना के मामले में कुल ब्याज सहित 14.40 लाख रूपये का आवार्ड पारित किया। अधिवक्ता अनिल कुमार स्वामी राजपुरा ने बताया कि 17 अक्टूबर 2022 को मनोज कुमार पुत्र मघराज जाट निवासी मोरथल अपने गांव से अपने ननिहाल पूनियां की ढाणी जा रहा था। जब मृतक पूनियां की ढाणी के पास पहुंचा तो वाहन बोलेरो नं.आर.जे. 49 यू.ए. 1217 के चालक रमेश कुमार ने मृतक की मोटरसाईकिल के सामने से टक्कर मारकर उक्त दुर्घटना कारित की, जिसमें मृतक के सिर व पैर पर चोटें आई जिससे मनोज कुमार की मृत्यु हो गई। उक्त घटना की प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या पुलिस थाना तारानगर में दर्ज करवाई गई जिसमें बाद अनुसंधान कर चालक की उपेक्षा व लापरवाही से दुर्घटना होना पाया जाकर उसके विरूद्ध धारा 279, 304 ए भा.द.सं. में आरोप पत्र पेश किया गया। मृतक की ओर से उसके वारिसान ने न्यायालय में क्लेम याचिका पेश की, जो मघराज आदि बनाम नेशनल इंश्योरेंस क. लि. आदि पेश की, जिसमें पीठासीन अधिकारी संतोष कुमार मीणा ने पत्रावली का अवलोकन कर पत्रावली पर आए साक्ष्य के आधार पर प्रार्थी के पक्ष में ब्याज सहित कुल 14.40 लाख रूपए का अवार्ड पारित किया। प्रार्थी की तरफ से पैरवी की।

थानाधिकारी ने झुग्गी झोंपड़ी में रहने वाले जरूरतमंद बच्चों के साथ मनाया जन्मदिन

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर थानाधिकारी गौरव खिड़िया ने मंगलवार को झुग्गी झोंपड़ी में रहने वाले अति जरूरतमंद बच्चों के साथ अपना 41वां जन्म दिन मनाया। थानाधिकारी खिड़िया ने बच्चों के साथ केक काटा व बच्चों को मिठाई बाँटी। उपस्थित लोगों ने खिड़िया को जन्म दिवस की बधाई दी व उज्जवल भविष्य की कामना की। इससे पहले पुलिस स्टाफ ने थाना परिसर में केक काटकर खिड़िया का जन्म दिन मनाया व जन्म दिन की बधाई दी। इस मौके पर गुरुकुल एज्यूकेशन ग्रुप के निदेशक सुभाष चारण, युवा नेता अलबेला खान, एएसआई सुमेर मीणा, भगवानसिह, एचसी सुभाष शर्मा, हरिदान चारण, राजू नायक, बलवान, ओमप्रकाश, विकास, अजीत, ब्रजेन्द्र, सुरेश, इलियास सहित पुलिस स्टाफ व क्षेत्र के कई लोग उपस्थित रहे।

कालूसर के पास एमआर होटल में अवैध गतिविधियों पर पुलिस ने मारा छापा

36 बीयर की बोतलों सहित चार को पकड़ा

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के थाना क्षेत्र चूरू रोड़ पर स्थित गांव कालूसर के पास एमआर होटल में पुलिस ने छापा मारकर अवैध शराब विक्रय व अन्य संदिग्ध गतिविधियों में लिप्त चार व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। मदनलाल बिश्नोई ने बताया कि एमआर होटल पर दबिश दी गई। छापे के दौरान होटल संचालक चुन्नीलाल पुत्र राजाराम निवासी न्योलखी जिला हनुमानगढ़ के कब्जे से काउंटर में रखी 36 बोतल अवैध बीयर बरामद की गई। आरोपी को आबकारी अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया गया। इसके अतिरिक्त होटल में मौजूद अन्य तीन व्यक्तियों अभिलाष चौधरी ढाणी तेतरवाल, सम्भूराम धर्प गामा समस्तीपुर, राजाराम लुणकरणसर को संदिग्ध गतिविधियों और बिना दस्तावेज दो मोटरसाइकिलों के साथ पकड़ा गया। पुलिस की यह कार्रवाई स्थानीय क्षेत्र में अवैध गतिविधियों पर लगाम लगाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। वहीं थाना अधिकारी ने बताया कि क्षेत्र में अवैध काम करने वालों के खिलाफ विशेष अभियान चलाकर इनके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी।

बारिश से अनेक जगहों पर भरा पानी

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। क्षेत्र में अच्छी बारिश से किसानों में खुशी की लहर है। हालांकि शहरी क्षेत्र में जलभराव के चलते लोगों को अनेकों जगहों पर दिक्कतों का सामना करना पड़ा है। सुबह साढ़े आठ बजे के बाद करीब एक घंटे तक तीस एमएम बारिश हुई। जिससे मौसम में ठंडक का अहसास होने लगा। अच्छी बारिश के कारण सड़कों, बाजारों में जल भराव की स्थिति हो गई। शहर के गांधी चौक, बाई पास रोड, नालियां बास, जमालपुरा, लाडनू बस स्टेंड, दो नम्बर रेल फाटक आदि स्थानों पर पानी भर गया। जिसके कारण वाहन चालकों, आम लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ा। वहीं नालों की सफाई का कार्य भी नगरपरिषद की ओर से करवाया जा रहा है, इसी दौरान बारिश हो गई है। नलिया बास में एक एम्बूलेंस पानी में फंस गई, जिसमें लोग थे। एम्बूलेंस को एक पिकअप से टोचन करके लोगों की सहायता से पानी से बाहर तक निकाला गया। गांधी चौक का पानी शाम तक कम हो पाया। लाडनू बस स्टेंड पर पानी शाम तक जमा रहा। दूसरी ओर जिन स्थानों पर पानी भरा, वहां पर व्यापारी अपनी दुकानें नहीं खोल पाए। लाडनू बस स्टेंड और गांधी चौक में कई दुकानें जलभराव के कारण नहीं खुल पाई।

दिवंगत मित्रों को मित्रता का अनोखा उपहार

दूगड़ विद्यालय के मित्रमंडल ने 48 बेंच लगाकर दिया मित्रता का अनूठा संदेश

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। कहा जाता है कि सच्ची मित्रता समय और दूरी की मोहताज नहीं होती। दूगड विद्यालय के 2002 बैच के पूर्व छात्रों ने इस कथन को बार-बार सिद्ध किया है। अपने विद्यालय और दिवंगत साथियों के प्रति सम्मान और प्रेम प्रकट करते हुए इन साथियों ने तीसरे चरण में 16 नई बेंचें शहर के मुख्य स्थान राजकीय एससीडी महाविद्यालय, बिजली बोर्ड रीको व जीवीएम, कानी देवी मूक बधिर संस्था, पशु चिकित्सालय, शिव बाड़ी रामनगर आदि स्थानों पर लगवाकर समाज सेवा और दोस्ती की एक अनोखी मिसाल कायम की है। इससे पहले इसी समूह ने दो बार पहले चरण और दूसरे चरण 16-16 बेंचें आमजन

के लिए शहर के मुख्य स्थानों पर लगवाई थीं। इस तरह अब तक कुल 48 बेंचें सरदारशहर के मुख्य स्थान व अन्य सार्वजनिक स्थलों पर लगाई जा चुकी हैं। हर बेंच केवल बैठने का स्थान नहीं है बल्कि यह एक गहरी भावना, यादों और मित्रता की जीवंत पहचान बन चुकी है। यह पुनित कार्य विशेष रूप से दिवंगत साथी मरहूम वसीम मुगल और श्रीकांत ओझा की स्मृति में समर्पित की गई हैं। उनके नामों के साथ-साथ उनके परिवार का मान-सम्मान भी सहजने का यह एक सजीव प्रयास है।

स्मृतियों को समाजसेवा में बदलने की प्रेरणा

दूगड़ विद्यालय मित्रमंडल के सदस्यों ने बताया कि यह सिर्फ बेंच लगवाने की बात नहीं है। बल्कि यह अपने बीते दिनों की यादों को जीने और उन्हें समाजहित में बदलने का एक तरीका है। हमारे दोस्त हमारे साथ नहीं हैं लेकिन हम उन्हें हर छात्र की मुस्कान में जिंदा देखना चाहते हैं। यही हमारी श्रद्धांजलि है। क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों और समाज के नागरिकों ने इस पहल की प्रशंसा की। उनका कहना है कि यह युवा पीढ़ी को यह सिखाता है कि जीवन में आगे बढ़ने के साथ अपने मूल, अपने साथियों और अपने समाज को नहीं भूलना चाहिए।

हादसाः मांगलिक कार्यों में भाग लेने जा रहे 5 लोगों सहित 9 घायल

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। नेशनल हाईवे 11 पर गांव टीडियासर व गुंसाईसर के बीच मंगलवार सुबह दो कारों की भीड़ में फतेहपुर से बीकानेर मांगलिक कार्य में शामिल होने जा रहे एक ही परिवार के पांच सदस्यों सहित 9 लोग घायल हो गए। घायलों में एक युवती व तीन महिलाएं भी शामिल थी। घटना का कारण प्रथम दृष्टया ओवरटेक बताया जा रहा है। हादसे के बाद दोनों कारे क्षतिग्रस्त हो गई और मौके पर लोगों की भीड़ लग गई। घायलों को टोल एम्बुलेंस व कांग्रेस नेता रामवीर सिंह राईका मुकेश सारण जिला अस्पताल लेकर आए, जहां पर एक घायल के गंभीर चोट आने पर प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर रैफर कर दिया। सूचना पर पुलिस जिला अस्पताल पहुंची और घटना की जानकारी ली। घटना को लेकर पुलिस में मंगलवार शाम तक मामला दर्ज नहीं हुआ है। एएसआई रामनिवास ने बताया कि फतेहपुर निवासी 35 वर्षीय आनंद पुत्र सुभाष मेघवाल, 28 वर्षीय सुमित्रा पत्नी अमित मेघवाल, 38 वर्षीय सुमन

पत्नी प्रवीण मेघवाल, 30 वर्षीय पुष्पा पत्नी आनंद मेघवाल एवं उदयपुरवाटी के इंद्रपुरा निवासी 40 वर्षीय गौतम पुत्र मक्खनलाल मेघवाल कार में सवार होकर फतेहपुर से बीकानेर छुछक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जा रहे थे। वहीं श्रीगंगानगर के चुनवाड़ निवासी 32 वर्षीय पवन पुत्र जसाराम प्रजापत, 27 वर्षीय विजय पुत्र मनीराम वर्मा, 19 वर्षीय पायल पुत्र रामकुमार प्रजापत व 36 वर्षीय गोविंद पुत्र पृथ्वीसिंह बावरी कार में सवार होकर सीकर जा रहे थे कि नेशनल हाईवे 11 पर टीडियासर व गुंसाईसर के बीच दोनों कारों की भिड़ंत हो गई। घटना में दोनों कारों में सवार सभी लोग घायल हो गए, जिन्हें जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां पर आनंद की हालत गंभीर होने पर उसे हायर सेंटर रैफर कर दिया। श्रीगंगानगर निवासी गोविंद अपनी बहिन पायल का सीकर के एक निजी कॉचिंग में एडमिशन करवाने के लिए जा रहे थे कि हादसे का शिकार हो गए। घटना के बाद मौके पर लोगों की भीड़ लग गई।

कॉटेज वार्डों का प्रस्तावित किराया कम करने की मांग

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। सामाजिक कार्यकर्ता बसन्त कुमार बोरड़ ने मुख्यमंत्री को एक ज्ञापन भेजकर बगड़िया अस्पताल में कॉटेज वार्ड के प्रस्तावित प्रतिदिन किराये को 8 सौ से घटाकर पांच सौ या इससे कम करने की मांग की है। बोरड़ ने ज्ञापन में बताया है कि हाल ही में 30 मई को राजकीय बगड़िया अस्पताल के पीएमओ कार्यालय में मेडिकल रिलीफ सोसायटी की बैठक का आयोजन एडीएम मंगलाराम पुनिया की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में विभिन्न प्रस्तावों के साथ कॉटेज वार्डों की मरम्मत करवाने, एयरकंडिश्नर लगाये जाए का निर्णय लिया गया, जो जनहित में काफी अच्छी बात है। लेकिन कॉटेज वार्डों का किराया 300रू.से बढ़ाकर 800रू. प्रतिदिन किए जाने का निर्णय लिया गया है, जो कि न्यायसंगत प्रतीत नहीं होता। ज्ञापन में बताया गया है कि एक तरफ जहां सरकार प्रत्येक व्यक्ति तक सरकारी अस्पतालों के जरिये निःशुल्क ईलाज मुहैया करवाने के मिशन पर काम कर रही है। वहीं बगड़िया अस्पताल में इस प्रकार की व्यवस्था होने से मरीजों को परेशानी होगी। अतः कॉटेज वार्ड के प्रस्तावित किराये को 5 सौ रूपए या इससे कम किया जाए, ताकि प्रत्येक व्यक्ति तक समय पर निःशुल्क ईलाज मुहैया करवाने की सरकार की मंशा को चार चांद लग सके।

एक दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण आयोजित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशानुसार मंगलवार को जिला परिषद सभागार में राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान अन्तर्गत पंचायत एडवांसमेन्ट इंडेक्स का एक दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्वेता कोचर ने कहा कि ग्राम पंचायत वार्षिक योजना में सतत विभाग के लक्ष्यों का बहुत महत्व है। सभी की समन्वित भागीदारी से ग्रामीण विकास गतिविधियां साकार होंगी। कार्यक्रम में अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी दुर्गा ढाका ने सभी विभागों को ग्राम पंचायत विकास योजना के निर्माण के समय सक्रिय भागीदारी निभागी के निर्देश दिए। कार्यक्रम में मास्टर ट्रेनर के रूप में सहायक विकास अधिकारी प्रेम सिंह चौहान, सुभाष मीणा व सुरेश कुमार सैनी ने संभागियों को प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण में बीकानेर संभाग प्रभारी सुमित जोशी ने पर्यवेक्षण किया। कुन्दन सिंह व ईश्वर सिंह ने आयोजकीय भूमिका निभाई।

वन्दे गंगा जल संरक्षण अभियान को लेकर तैयारी बैठक

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय पंचायत समिति सभागार में उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश वर्मा की अध्यक्षता में राज्य सरकार की ओर से घोषित वन्दे गंगा जल संरक्षण अभियान के तहत 5 से 20 जून तक आयोजित होने वाले जल संरक्षण पखवाड़ा में विभिन्न गतिविधियों के संचालन व उसकी समीक्षा के लिए मीटिंग रखी गई। विकास अधिकारी रवि कुमार ने राज्य सरकार की ओर से दिए गए कार्यक्रम प्लान के बारे में अवगत करवाते हुए कहा कि प्रथम दिवस पर ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम गोपालपुरा में कलश यात्रा, जल पूजा होगा। उसके बाद सालासर, मालासी वं अन्य ग्राम पंचायतों में रुफ टॉप रैन वाटर हार्वेस्टिंग, श्रम दान, नालों की सफाई, नए टांके व तालाब बनाने की शुरुआत करना, जन जागृति रैली, पौधरोपण व तैयारी करने जैसे कार्य किए जाएंगे। एसडीएम वर्मा ने मीटिंग में भाग लेने वाले सभी ग्राम विकास अधिकारी, एसडीसी एवं प्रशासक को सभी कार्यक्रम को भव्य व श्रेष्ठ करवाने की अपील करते हुए अन्य

नवाचारों को करने के लिए प्रेरित किया तथा गोपालपुरा प्रशासक सविता राठी की प्लास्टिक उन्मूलन के लिए किए जा रहे नवाचारों की तारीफ की। सविता राठी ने प्लास्टिक उन्मूलन के बारे में बताते हुए बताया कि ग्रामीण महिलाओं से नायलॉन की पुरानी साड़ियों से थेले भी बनवाए जा रहे है व पेड़ो को बच्चियों तथा महिलाओं से राखी बंधवाने की बात कही। मीटिंग में जल भराव की स्थिति पर जानकारी ली गई, जिसमें सालासर वीडीओ की ओर से जल भराव समस्या बताई गई। प्रशासक प्रतिनिधि गुलेरिया करणीसिंह ने कहा कि सभी कार्यक्रम जन सहभागिता से संपूर्ण करवाए जाएंगे। चरला प्रशासक प्रतिनिधि रामसुख गोदारा, सहायक विकास अधिकारी, सहायक अभियंता, राजीविका बीपीएम सहित बड़ी संख्या में पंचायत समिति कर्मचारी उपस्थित रहे।

रन फॉर इनवायरनमेंट आज

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशन में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में बुधवार को सवेरे 6.30 बजे जिला मुख्यालय स्थित नेचर पार्क में रन फॉर इनवायरनमेंट आयोजित की जाएगी। डीसीएफ वीरेन्द्र कृष्णिया ने बताया कि रन फॉर इनवायरमेंट नेचर पार्क में आयोजित की जाएगी। उन्होंने आमजन से अधिकाधिक संख्या में रन में भाग लेने की अपील की है।

स्मरण शक्ति है परमात्मा का सबसे बड़ा उपहारः नामदेव

ज्यपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्मरण शक्ति परमात्मा का मानव जाति को सबसे बड़ा उपहार है और स्मरण शक्ति के बल पर मनुष्य बड़े से बड़े कार्य को भी मनोबल के साथ आसानी से कर सकता है। ओवर थिंकिग की समस्या पर बात करते हुए अंक ज्योतिषाचार्य सुरेंद्र नामदेव ने बताया कि मनुष्य अपने अन्दर छुपी ताकतों को पहचान नहीं पाता और भौतिकता में सुख ढूंढ़ता-ढूंढ़ता नई-नई बिमारियों से ग्रसित होता चला जाता है। नामदेव ने बताया कि आजकल ओवर थिंकिंग (ज्यादा सोचना) की समस्या बढ़ती जा रही है, जो धीरे-धीरे स्ट्रेस का रूप लेते जा रही है। यह हमारे दिमाग की स्मरण शक्ति का गलत दिशा में उपयोग करने से हो रही है। जबकि हम लोग अगर अपने दिमाग को सही दिशा में काम लगायें, तो हमारे सारे कार्य आसान हो जाएगे और लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर हम बढ़ जायेंगे। नामदेव ने कहा कि जो लक्ष्य व्यक्ति अपने जीवन में रखता है, अगर उनका स्मरण सुबह शाम किया जाए, तो काम आसान हो जायेंगे। क्योंकि जैसा मनुष्य सोचता है, वैसा ही बनता है। परमात्मा के सुमिरन के साथ अगर व्यक्ति अपने लक्ष्य का स्मरण करे-जैसे मैं ये काम तो कर ही लूंगा.., इतना तो आज ही कर लेंगे, ये लक्ष्य को हासिल करना ही है... इस प्रकार का स्मरण किया जाए, तो जीवन काफी आसान और लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला हो सकता है। चाहे वो प्रतियोगी परीक्षा में पास होना हो, या

फिर धन कमाने का कार्य हो या फिर कोई राजनीतिक मुकाम हासिल करने का। क्योंकि हम लोग जो बातें दिन रात सोचते हैं, उसी दिशा में आगे बढ़कर मेहनत करना शुरू कर देंगे। इसलिए दूसरों के बारे में सद्विचार रखते हुए मनुष्य को अपने लक्ष्यों का स्मरण करते हुए मेहनत करनी चाहिए, ताकि ओवर थिंकिंग और स्ट्रेस जैसी बिमारियों से बचा जा सके और जीवन में सफलता प्राप्त की जा सके।

हिट एंड रन दुर्घटनाओं के लंबित प्रकरणों की समीक्षा बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव मांडवी राजवी की अध्यक्षता में मंगलवार को हिट-एंड-रन दुर्घटनाओं के प्रकरणों में पीड़ितों को मुआवजा दिलाने व इसकी मॉनिटरिंग के लिए गठित निगरानी समिति की बैठक का आयोजन किया गया। सचिव ने बताया कि सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली के आदेशानुसार हिट-एंड-रन मोटर दुर्घटना के मामलों में त्वरित सहायता के लिए मुआवजा देने, केन्द्र सरकार की लागू योजना की प्रगति के मूल्यांकन और प्राप्त आवेदनों से संबंधित कार्यवाहियों सहित अन्य बिंदुओं की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को प्रतिकर के लिए आवेदनों का त्वरित निस्तारण करके पूर्ण मुआवजे देकर आयुक्त को प्रेषित करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने जिले के प्रत्येक थानाअधिकारी को हिट एंड रन दुर्घटनाओं में पीड़ितों से प्रतिकर के लिए आवेदनों को अविलंब संबंधित दावा जांच अधिकारियों को भिजवाने के निर्देश। सचिन ने बताया कि हिट एंड रन दुर्घटना प्रकरणों में केन्द्र सरकार की ओर से जारी योजना के तहत घायलों को 50 हजार रूपए व मृतक के आश्रितों को 2 लाख रूपए बतौर प्रतिकर प्रदान किए जाते हैं। उन्होंने बताया कि दुर्घटना के पीड़ित घटना क्षेत्र के पुलिस थाना और उपखण्ड अधिकारी के कार्यालय में प्रतिकर के लिए आवेदन कर सकते हैं। प्रतिकर के लिए आवेदन पत्र पुलिस थानों व ऑनलाईन उपलब्ध है। इस दौरान पुलिस विभाग व दावा जाँच अधिकारियों ने वर्ष 2023 से मई 2025 के मध्य घटित हुई हिट एंड रन दुघर्टना के मामलें में पीड़ितों (घायलों व मृतकों के आश्रितों) को मिलने वाले मुआवजे के लिए प्राप्त आवेदनों व कार्यवाहियों के संबंध में वस्तुस्थिति रिपोर्ट की जानकारी दी। बैठक में अतिरिक्त जिला कलेक्टर (नगर) रमेश देव, समस्त दावा जाँच अधिकारी (उपखण्ड अधिकारी), पुलिस विभाग के समिति सदस्य (वृत्ताधिकारी) सहित यातायात विभाग के सदस्य मौजूद रहे।

जिला स्तरीय हेरिटेज समिति की बैठक कल

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.)। बीकानेर शहर में विरासत संरक्षण के कार्यों को संपादित व मॉनिटरिंग करने के लिए जिला स्तरीय हेरिटेज समिति की बैठक का आयोजन जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि की अध्यक्षता में गुरुवार को सायं 5 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में किया जाएगी। नगर निगम आयुक्त मनीष मयंक ने यह जानकारी दी।

वंदे गंगा - जल संरक्षण जन अभियान में हो अधिकतम जनसहभागिता : सुराणा

जिला कलक्टर ने समीक्षा बैठक में जिले में 5 जून से 20 जून तक चलाए जाने वाले 'वंदे गंगा- जल संरक्षण जन अभियान' को लेकर दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने मंगलवार को डीओआईटी वीसी सभागार में जिले के सभी अधिकारियों को समीक्षा बैठक में जिले में 5 जून से 20 जून तक चलाए जाने वाले 'वंदे गंगा- जल संरक्षण जन अभियान' को लेकर तैयारियों की चर्चा कर समुचित निर्देश दिए। जिला कलक्टर सुराणा ने कहा कि 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' में अधिकतम जनसहभागिता सुनिश्चित करें। सभी विभागों की समन्वित भागीदारी से अभियान को सफल बनाएं। अभियान अंतर्गत आयोजित की जाने वाली गतिविधियों के लिए विस्तृत कार्ययोजना पर काम करें। सभी अधिकारी अपनी गतिविधियों की तैयारियां रखें। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जल संरक्षण को लेकर बहुत गंभीर है। उनकी मंशानुसार अभियान अंतर्गत आयोजित की जाने वाली गतिविधियों में जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं व संगठनों की भागीदारी सुनिश्चित करें। पखवाड़े के दौरान दैनिक गतिविधियों की प्लानिंग करें तथा जिला स्तर, ब्लॉक स्तर व ग्राम स्तर तक सभी गतिविधियां नियमित रूप से आयोजित की जाएं।

विभागीय योजनाओं की समीक्षा

जिला कलक्टर ने एनएफएसए आवेदनों के निस्तारण, ई-फाइल डिस्पोजल टाइम को कम करने, सीएम जनसुनवाई व संपर्क पोर्टल पर दर्ज प्रकरणों के समयबद्ध निस्तारण, ई-डाक पेंडेंसी को समाप्त करने, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम, पीएम आवास योजना सहित विभागीय गतिविधियों को लेकर विस्तृत निर्देश दिए। एडीएम अर्पिता सोनी सीएम जनसुनवाई के प्रकरणों की समीक्षा की संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। सीईओ श्वेता कोचर ने 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' को लेकर आयोजित की जाने वाली गतिविधियों की जानकारी देते हुए सभी अधिकारियों को विस्तृत निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जल स्त्रोंतों की सफाई करें और श्रमदान, जल पूजन आदि गतिविधियां समयबद्ध ढंग से आयोजित की जाएं। एसजेईडी डीडी नगेन्द्र सिंह ने दिव्यांगों को सहायक अंग उपकरण के लिए दिव्यांगों के चिन्हीकरण के लिए 30 जून तक आयोजित किए जाने वाले शिविरों के बारे में जानकारी दी। इस दौरान समस्त जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे और उपखंडों से वीसी के जरिए समस्त उपखंड स्तरीय अधिकारी जुड़े रहे।

मानूसन की रखें पूर्व तैयारी

जिला कलक्टर सुराणा ने कहा कि सभी ब्लॉकों में मानसून के दौरान की जाने वाली व्यवस्थाओं कर पूर्व तैयारी रखें। ब्लॉक स्तर पर बाढ़ नियंत्रण कक्ष की स्थापना और आपदा प्रबंधन टीम का प्रबंधन करें। सभी उपखंड अधिकारी नगरनिकाय व विकास अधिकारियों के समन्वय से अपने क्षेत्र में नालों की सफाई सुनिश्चित करें। जल भराव को लेकर जांच कर लें कि पंप हाउस आदि सुचारू हालत में हों। इसी के साथ क्षतिग्रस्त व जर्जर भवनों का निरीक्षण कर नोटिस देते हुए अपेक्षित कार्यवाही करें। उन्होंने कहा कि सभी विभागाधिकारी अपने अधीनस्थ कार्यालयों व राजकीय भवनों में छतों की सफाई सुनिश्चित करवाएं। डिस्कॉम के अधिकारी बिजली के ढीले तारों के को ठीक करवाएं व खुले तार हों तो ढकवाएं। उन्होंने सीएमएचओ व पशुपालन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि मौसमी बीमारियों को देखते हुए आवश्यक प्रबंधन करें। मौसमी बीमारियों के लिए आवश्यक स्क्रीनिंग व दवाओं की उपलब्धता आदि सुनिश्चित करें।

सरदारशहर में मामूली कहासुनी को लेकर जमकर चले लात घूसे, वीडियो वायरल

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस) कस्बे के रोडवेज बस स्टैंड पर सोमवार शाम को मामूली कहासुनी को लेकर युवाओं के बीच जमकर मारपीट हुई और आपस में लात घुसे चले। मारपीट को देखकर मौके पर भीड़ इकट्ठी हो गई और लोग तमाशाबीन की तरह लड़ाई झगड़ा होते देखते रहे और उसका वीडियो बनाते रहे। किसी ने भी युवकों को समझाइश करने या बीच बचाव की जहमत नहीं उठाई। घटना का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। रोडवेज प्रशासन ने जब युवाओं को बाहर निकाला उसके बाद युवा पास की गली में आकर झगड़ा करने लगे और मारपीट करने लगे। हालांकि मामले को लेकर पुलिस का कहना है कि घटना को लेकर पुलिस थाने में कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई है। वायरल वीडियो के आधार पर मामले का पता लगाया जा रहा है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि किसी मामूली कहासुनी के बाद नौबत मारपीट तक आ गई और आपस में जमकर लात घुसे चले। वहीं पुलिस मामले की गंभीरता को देखते हुए झगड़ा करने वाले युवाओं की जानकारी जुटाने में लगी हुई है।

सखी केंद्र में भेंट किए एलईडी टीवी व लाइब्रेरी के लिए किताबें

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। महिला अधिकारिता विभाग की ओर से जिला मुख्यालय पर संचालित सखी केंद्र में सोमवार को चूरू विकास संस्था अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह ने एलईडी टीवी व लाइब्रेरी के लिए पुस्तकें भेंट की। इस अवसर पर महिला अधिकारिता निदेशालय, जयपुर से उपनिदेशक डॉ जगदीश प्रसाद ने कहा कि सामाजिक उन्नयन के लिए शिक्षा अत्यंत महत्वपूण है। सखी सेंटर पर पुस्तकें महिलाओं व बालिकाओं के मानसिक व बौद्धिक विकास में सहयोगी साबित होगी। चूरू विकास संस्था के अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह ने कहा कि महिलाओं की शिक्षा और जागरूकता समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है। इस पहल के माध्यम से हम सामाजिक सहयोग करने का प्रयास है। महिला अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक राजेन्द्र सिंह ने भामाशाह का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह पहल हमारे लिए प्रेरणादायक है। इससे महिलाओं को नए अवसर मिलेंगे और वे समाज में अपनी भूमिका को और सशक्त रूप से निभा सकेंगी। उन्होंने बताया कि सखी केंद्र में हिंसा से पीड़ित बालिकाओं/ महिलाओं को एक ही छत के नीचे अनेक निः शुल्क सेवाएं उपलब्ध है। महिलाओं के लिए विपरीत परिस्थितियों में भी परामर्श, विधिक सहायता, पुलिस सहायता, चिकित्सा, अस्थाई आश्रय आदि की निः शुल्क सुविधा केंद्र द्वारा उपलब्ध कराई जा रही है। इस अवसर पर संस्थान के अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह, ललित चौहान, रामसिंह, ज्ञानप्रकाश गोदारा, सखी प्रबंधक पूनम कंवर आदि उपस्थित रहे।

विश्व साईकिल दिवस पर साइकिल रैली निकाल दिया उच्च रक्तचाप जागरूकता का संदेश

विश्व साइकिल दिवस पर आईएमए, एनसीडी क्लिनिक और श्री सीमेंट का संयुक्त आयोजन

जयपुर टाइम्स

सूरतगढ़(निस)।। विश्व साइकिल दिवस के अवसर पर आज दिनांक 3 जून को इंडियन मेडिकल एसोसिएशन सूरतगढ़, एनसीडी क्लिनिक और श्री सीमेंट के संयुक्त तत्वावधान में साइकिल रैली का आयोजन किया गया। इस साइकिल रैली से आमजन को उच्च रक्तचाप के प्रति भी जागरूक किया गया। उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए हमें साइकिल का प्रयोग अपने जीवन में शुरू करना चाहिए। इससे हमारा शरीर भी स्वस्थ रहेगा और पर्यावरण भी। साइकिल रैली का शुभारंभ उपखंड अधिकारी कार्यालय से किया गया जो सूरतगढ़ के मुख्य मार्ग से होते हुए इंदिरा सर्किल और वापस उपखंड अधिकारी कार्यालय पर संपन्न हुई। साइकिल रैली में सभी ने बढ़ चढ़कर भाग लेकर आमजन को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने का संदेश दिया। इस अवसर पर आईएमए अध्यक्ष डॉ अक्षय भंसाली, डॉ के एल बंसल, आईएमए सचिव डॉ अमित चौधरी, डॉ इंद्र चूघ, डॉ अर्चना भंसाली, एनसीडी क्लिनिक से एनसीडी परामर्शदाता दीपक शर्मा, एनसीडी डीईओ सूरज सेतिया और श्री सीमेंट से उपमहाप्रबंधक मनोज कुमार पांडे व अधिकारी हनुमान, पवन, रोहित, मुकेश, शांतनु आदि ने रैली को सफल बनाने में अपना अहम योगदान दिया।

मतदान प्रतिशत रिपोर्टिंग प्रक्रिया को उन्नत करने के लिए निर्वाचन आयोग की पहल

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली/जयपुर(कास)।। भारत निर्वाचन आयोग अब एक सुव्यवस्थित, प्रौद्योगिकी- आधारित प्रणाली की शुरुआत कर रहा है ताकि मतदान के अनुमानित प्रतिशत रुझानों की समय पर जानकारी प्रदान की जा सके। यह नई प्रक्रिया पूर्व की मैनुअल रिपोर्टिंग विधियों की ओर से लगने वाली देरी को काफी हद तक कम करती है। यह पहल आयोग की सार्वजनिक संचार को समयबद्ध रूप से सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता के अनुरूप है, जिसे मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार विभिन्न अवसरों पर रेखांकित कर चुके हैं। 1961 के निर्वाचन नियमों के तहत बनाए गए "चुनाव संचालन नियम", नियम 49S के अंतर्गत, पीठासीन अधिकारी मतदान समाप्ति के समय प्रत्येक मतदान केंद्र पर उपस्थित उम्मीदवारों की ओर से नियुक्त मतदान एजेंटों को रिकॉर्ड किए गए मतों का लेखा-जोखा प्रदान करने वाले प्रपत्र 17C को सौंपने के लिए बाध्य हैं, यह वैधानिक प्रावधान यथावत रहेगा। हालाँकि, वोटर टर्नआउट ऐप को अपडेट करने की प्रक्रिया – जो अब तक एक सहायक, गैर-वैधानिक प्रणाली के रूप में विकसित हुई थी – को अब तेज और कुशल बनाने के लिए पुनः संरचित किया जा रहा है, ताकि मतदान प्रतिशत के अनुमानित रुझनों की समय पर जानकारी दी जा सके। इस नई पहल के तहत, प्रत्येक मतदान केंद्र के पीठासीन अधिकारी अब मतदान दिवस पर हर दो घंटे में ECINET ऐप पर सीधे मतदाता उपस्थिति दर्ज करेंगे, जिससे आंकड़ों के अद्यतन में देरी को कम किया जा सकेगा। यह जानकारी स्वचालित रूप से निर्वाचन क्षेत्र स्तर पर एकत्र की जाएगी। मतदान प्रतिशत के अनुमानित रुझान पूर्ववत् हर दो घंटे में प्रकाशित किए जाते रहेंगे। महत्वपूर्ण रूप से, मतदान

समाप्ति के तुरंत बाद, पीठासीन अधिकारी मतदान केंद्र छोड़ने से पहले ECINET ऐप पर आंकड़े दर्ज करेंगे। इससे देरी कम होगी और मतदान के तुरंत बाद निर्वाचन क्षेत्रवार अनुमानित मतदान प्रतिशत VTR ऐप पर उपलब्ध हो सकेगा – बशर्ते नेटवर्क कनेक्टिविटी उपलब्ध हो। जहाँ मोबाइल नेटवर्क अनुपलब्ध हैं, वहाँ आंकड़े ऑफ़लाइन दर्ज किए जा सकेंगे और कनेक्टिविटी मिलते ही सिंक हो जाएंगे। यह उन्नत VTR ऐप बिहार चुनावों से पहले ECINET का अभिन्न अंग बन जाएगा। पूर्व में, मतदान प्रतिशत आंकड़े सेक्टर अधिकारियों द्वारा मैनुअली एकत्र किए जाते थे और उन्हें फोन कॉल, एसएमएस या मैसेजिंग ऐप्स के माध्यम से रिटर्निंग अधिकारियों तक पहुँचाया जाता था। यह जानकारी हर दो घंटे में एकत्रित कर VTR ऐप पर अपलोड की जाती थी। मतदान प्रतिशत के रुझन अक्सर घंटों बाद अपडेट होते थे, क्योंकि भौतिक रिकॉर्ड देर रात या अगले दिन तक पहुँचते थे, जिससे 4-5 घंटे या उससे अधिक की देरी होती थी और इससे कई बार भ्रम की स्थिति बनती थी। अब इससे निजात मिलेगी।

निरामया राजस्थान खाद्य सुरक्षा का विशेष अभियान 7 जून तक चलेगा

खाद्य विभाग अधिकारियों ने कैंटिन व तीन अन्नपूर्णा रसोई का किया निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिले में निरामया राजस्थान अभियान के तहत 07 जून विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस तक खाद्य सुरक्षा का विशेष अभियान चलाया जाएगा। सीएमएचओ डॉ मनोज शर्मा ने बताया कि निरामया राजस्थान अभियान के तहत जून माह की थीम खाद्य सुरक्षा रखी गई है। जून माह के प्रथम सप्ताह में विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान में अन्नपूर्णा रसोई निरीक्षण, राजकीय व निजी चिकित्सा संस्थानों की कैटिन का निरीक्षण, स्ट्रीट वेडर का निरीक्षण, मॉलस में खाद्य पदार्थों का निरीक्षण, रेलवे स्टेशन, बस स्टेण्ड के आस-पास खाद्य पदार्थ विक्रय केन्द्रों का निरीक्षण किया जाएगा। 7 जून को विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस पर व्यापारियों को खाद्य सुरक्षा लाइसेंस के लिए रजिस्ट्रेशन शिविर लगाया जाएगा। इसके अलावा जागरूकता अभियान चलाकर आमजन को पौष्टिक व सुरक्षित व संतुलित आहार की जानकारी दी जाएगी।

रतनगढ़ में 7 नमूने लिए, 6 लीटर कोल्ड ड्रिंक नष्ट करवाई

खाद्य सुरक्षा निरीक्षक मदन बाजिया ने बताया कि अभियान के तहत अस्पताल व अन्नपूर्णा रसोई का निरीक्षण किया गया। रतनगढ़ के राजकीय चिकित्सालय कैंटीन में मैसर्स निकेत इन्टरप्राइजेज का निरीक्षण कर दो नमूने लिए और 6 लीटर कोल्ड ड्रिंक नष्ट करवाई। अन्नपूर्णा रसोई से पांच नमूने लिए और सभी नमूनों को जांच के लिये जयपुर प्रयोगशाला भेजा गया है। सभी को साफ-सफाई रखने के लिये पाबंद किया गया।

शराब के नशे में कुल्हाड़ी से की पत्नी की हत्या, आरोपी की तलाश में जुटी पुलिस

जयपुर टाइम्स

टोंक(निस)। एक पति ने शराब के नशे में कुल्हाड़ी से हमला कर पत्नी की बेरहमी से हत्या कर दी। चीख पुकार सुनकर मां को बचाने बेटी आई तो निर्दयी पिता ने उस पर भी कुल्हाड़ी से वार किए, जिसमें मासूम घायल हो गई। घटना के बाद आरोपी फरार हो गया। घटना जिले के बनेठा थाना क्षेत्र के सुरेली गांव में सोमवार की रात करीब 12 बजे हुई। बच्ची की चीखें सुनकर पड़ोसी उसे बचाने आए। लोगों ने लहूलुहान हालत में मां और बेटी को सआदत हॉस्पिटल पहुंचाया, जहां मां को मृत घोषित कर दिया गया। बेटी का इलाज जारी है।बनेठा थाना पुलिस के अनुसार- मृतका के भाई चिरोंज निवासी राजेंद्र रैगर ने रिपोर्ट दी है।

रेलवे के सहायक लोको पायलट ने 20 लाख ठगे, महिलाओं ने करवाई एफआईआर

बैंक में जमा गोल्ड छुड़वाने के नाम पर रुपए लिए

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। रेलवे में सहायक लोको पायलट अनिल कुमार पर दो महिलाओं से लाखों रुपए की धोखाधड़ी करने के आरोप लगाएं हैं। झुंझुनूं कोतवाली थाना में दोनों मामलों में अलग-अलग एफआईआर दर्ज की गई हैं। अनिल कुमार पर झुंझुनूं, हिसार और गुरुग्राम के लोगों से गोल्ड लोन छुड़वाने और रकम लौटाने के नाम पर ठगी करने का आरोप है। पुलिस ने मामले दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हिसार की महिला से 9 लाख की धोखाधड़ी

दूसरी शिकायत हिसार की रहने वाली सुमन पत्नी नरेश ने दर्ज कराई है। सुमन ने बताया कि अनिल खुद को उसका "मुंहबोला भाई" बताकर उससे भावनात्मक रूप से जुड़ गया। 30 मई को अनिल ने सुमन को बताया कि उसकी पत्नी गर्भवती है और उसे इलाज के लिए 9 लाख की जरूरत है। उसने कहा कि वह झुंझुनूं में चल रहे अपने गोल्ड लोन को चुकाकर सोना छुड़वाएगा और बेचकर पैसे लौटा देगा। सुमन ने भरोसा कर 9 लाख अनिल के खाते में के माध्यम से ट्रांसफर कर दिए। अनिल ने राशि Indel Money में जमा तो कर दी लेकिन सोना लेने के बाद भाग गया। जब सुमन ने उससे संपर्क किया, तो उसने अपशब्द कहे और जातिसूचक गालियां देते हुए धमकाया कि तुझे एक भी पैसा नहीं मिलेगा। अनिल अब फरार है। झुंझुनूं कोतवाली थानाधिकारी हरजिंदर सिंह ने बताया कि दोनों मामलों में धोखाधड़ी की एफआईआर दर्ज कर ली गई है। जांच एएसआई पवन कुमार को सौंपी गई है।

गुरुग्राम की महिला से 8.78 लाख की ठगी

गुरुग्राम के सेक्टर 49 स्थित प्रीमियम गोल्ड बायर शोरूम की संचालिका रजनी शर्मा पत्नी रविकांत शर्मा ने रिपोर्ट दी। शिकायत में बताया कि अनिल कुमार ने उनसे संपर्क कर बताया कि उसका इंडेल मनी से गोल्ड लोन चल रहा है। वह लोन चुकाकर सोना रिलीज करवाना चाहता है ताकि उसे बेचकर पैसे लौटाए जा सकें। रजनी शर्मा के अनुसार उन्होंने ₹ज्ञलस के माध्यम से अनिल के अकाउंट में 8,78,538 की राशि ट्रांसफर की। अनिल ने यह रकम तुरंत Indel Money को अपने लोन अकाउंट में जमा कर दी, जिससे सोना रिलीज हो सकता था। लेकिन अगले ही दिन अनिल ने उसी लोन नंबर 04330485 0000476 पर टॉप-अप लोन ले लिया और नई रकम लेकर फरार हो गया। पीड़िता ने कई बार संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन अनिल का कोई जवाब नहीं आया। उन्होंने 2 जून को झुंझुनूं कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराई है।

अन्य लोगों के साथ भी ठगी की आशंका

पुलिस को शक है कि अनिल कुमार ने सिर्फ इन दो महिलाओं के साथ ही नहीं, बल्कि और भी कई लोगों को इसी तरह गोल्ड लोन, पारिवारिक संकट और मेडिकल आपातकाल जैसे बहाने बनाकर ठगा है। पीड़ितों ने बताया कि अनिल के इस ठगी में उसके भाई का भी हाथ हो सकता है, जो दिल्ली पुलिस में कार्यरत बताया जा रहा है।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।